MAHIN 2.4

एम. ए. हिन्दी

सत्र - II

राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२० नुसार संशोधित पाठ्यक्रम

अनुवाद

(TRANSLATION)

© UNIVERSITY OF MUMBAI

प्रा. रवींद्र कुलकर्णी
कुलगुरू,
मुंबई विद्यापीठ, मुंबई.

प्रा. डॉ. अजय भामरे
प्र-कुलगुरू,
मुंबई विद्यापीठ, मुंबई.

प्रा. शिवाजी सरगर
संचालक,
दूरस्थ आणि ऑनलाईन शिक्षण केंद्र, मुंबई विद्यापीठ, मुंबई.

प्रकल्प समन्वयक : **अनिल बनकर**
सहयोगी प्राध्यापक, कला एवं मानव्यविद्या शाखा प्रमुख,
दूरस्थ आणि ऑनलाईन शिक्षण केंद्र (सी. डी. ओ. ई),
मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई - ४०००९८.

अभ्यासक्रम समन्वयक, संपादक एवं लेखक : **डॉ. संध्या शिवराम गर्जे**
सहाय्यक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, दूरस्थ आणि ऑनलाईन शिक्षण केंद्र
(सी. डी. ओ. ई), मुंबई विश्वविद्यालय, मुंबई - ४०००९८.

लेखक : **डॉ. सत्यवती चौबे**
अध्यक्ष हिन्दी विभाग,
विल्सन महाविद्यालय, चौपाटी सीफेस रोड,
मुंबई – ४००००७.

: **डॉ. सावित्री ढ़ोले**
हिन्दी विभाग,
जे. व्ही. एस. डिग्री महाविद्यालय, ऐरोली, नवी मुंबई - ४००७०८.

मार्च २०२५, प्रथम मुद्रण, ISBN : 978-93-6728-001-0

प्रकाशक
संचालक
दूरस्थ आणि ऑनलाईन शिक्षण केंद्र, मुंबई विद्यापीठ, मुंबई - ४०००९८.

अक्षरजुळणी
मुंबई विद्यापीठ मुद्रणालय,
सांताक्रुझ, मुंबई

अनुक्रमणिका

क्रमांक	अध्याय	पृष्ठ क्रमांक
१.	अनुवाद: परिभाषा एवं स्वरूप	१
२.	अनुवाद की अवधारणा और सिद्धान्त	११
३.	अनुवाद के प्रकार भाषायी आधार पर और विषय वस्तु या पाठ प्रकृति के आधार अनुवाद कार्यालयीन अनुवाद, ज्ञान – विज्ञान परक अनुवाद, विधिक अनुवाद, वाणिज्यिक अनुवाद	२१
४.	अनुवाद के प्रकार विषय वस्तु पाठ प्रकृति के आधार पर – साहित्यिक अनुवाद	३४
५.	अनुवादक की अर्हता और अभिलक्षण	४८
६.	अनुवाद प्रशिक्षण के भारतीय संस्थान	५७
७.	यंत्रानुवाद और अनुवाद का भविष्य	६७

*****

Syllabus

SEMESTER	II
PAPER NAME	Translation (अनुवाद)
PAPER NO.	19
COURSE CODE	33514
LACTURE	30
INTERNAL ASSESSMENT	50
EXTERNAL ASSESSMENT	50
CREDITS & MARKS	2 & 100

Course outcomes:

क) भाषाओं की प्रकृति का ज्ञान

ख) अनुवाद कौशल का प्रशिक्षण

ग) भारतीय भाषाओं की समृद्धि में योगदान

घ) विविध भाषाओं में ज्ञान-विज्ञान को संभव बनाना.

(2 CREDITS)

MODULE I:

Unit 1:

क) अनुवाद - अवधारणा, परिभाषा, स्वरूप

ख) अनुवाद के सिद्धांत

ग) अनुवाद के प्रकार - कार्यालयी, साहित्यिक, ज्ञान-विज्ञान परक, विधिक, वाणिज्यिक

Unit 2 :

क) अनुवादक की अर्हता और अभिलक्षण

ख) अनुवाद प्रशिक्षण के भारतीय संस्थान

ग) यंत्रानुवाद और अनुवाद का भविष्य

References:

१. अनुवाद विज्ञान- डॉ. भोलानाथ तिवारी

२. अनुवाद की व्यावहारिक समस्याएँ - डॉ. भोलानाथ तिवारी

३. अनुवाद कला - श्री चारुदेव शास्त्री

४. अनुवाद कला : कुछ विचार - आनंद प्रकाश खेमाणी

५. अनुवाद प्रक्रिया - डॉ. रीतारानी पालीवाल

६. साहित्याची भाषा - भालचंद्र नेमाडे

७. अंग्रेजी - हिंदी व्याकरण - सूरजभान सिंह

८. अनुवाद कला: सिद्धांत और प्रयोग- कैलाशचंद्र भाटिया

९. अनुवाद सिद्धांत की रूपरेखा - सुरेश कुमार

१०. मशीनी अनुवाद - ऋषभ जैन

११. अनुवाद भाषाएँ समस्याएँ - डॉ. ई. विश्वनाथ अय्यर

१२. Computer aided Translation technology - Lynne Bouker

१३. Translation and Understanding - Shailendra kumar singh

१४. अनुवाद का समकाल- डॉ. मोहसिन खान

*****

१

अनुवाद: परिभाषा एवं स्वरूप

इकाई की रूपरेखा

१.१ इकाई का उद्देश्य

१.२ प्रस्तावना

१.३ अनुवाद का अर्थ

१.४ अनुवाद की परिभाषा

१.५ अनुवाद का स्वरूप

१.६ सारांश

१.७ लघुत्तरीय प्रश्न

१.८ दीर्घोत्तरीय प्रश्न

१.९ संदर्भ ग्रंथ

१.१ इकाई का उद्देश्य

- 'अनुवाद: परिभाषा एवं स्वरूप' का मूल उद्देश्य विद्यार्थियों को यह समझाना है कि –
- अनुवाद का अर्थ क्या है ?
- अनुवाद की परिभाषा क्या है ?
- विभिन्न भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों की दृष्टि में अनुवाद की परिभाषा क्या है?
- अनुवाद का स्वरूप क्या है ?

१.२ प्रस्तावना

एक भाषा में कही गई बात को दूसरी भाषा में अभिव्यक्त करना ही अनुवाद है। अनुवाद समन्वय की कला है। अनुवाद एक ऐसा विज्ञान है जो विध्वंस या अलगाव को कदापि महत्त्व नहीं देता। यह सबको एक दूसरे से जोड़ने और मिलाने का काम करता है। अनुवाद का महत्व, इसका अस्तित्व अनादि काल से है। जैसे-जैसे मनुष्य विकसित होता गया, वैसे-वैसे अनुवाद भी विकसित होता गया। आज के अति आधुनिक युग में जैसे-जैसे नए-नए आविष्कार हो रहे हैं, नित्य नये परिवर्तन हो रहे हैं वैसे-वैसे अनुवाद क्षेत्र भी विकसित हो

रहा है। यदि हम वर्तमान युग को अनुवाद का युग कहें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी क्योंकि यह आधुनिक युग की परम आवश्यक प्रक्रिया के रूप में उभर कर सामने आया है। भूमंडलीकरण, उदारीकरण बाजारीकरण, उपभोक्तावाद, सूचना और संचार क्रान्ति के युग में जहाँ प्रति क्षण कुछ बदल रहा है, प्रतिक्षण कुछ नया अनुसंधान हो रहा है, जहाँ 'कर लो दुनिया मुट्ठी में' की अवधारणा को सबके द्वारा अपनाया जा रहा है, आत्मसात किया जा रहा है इस प्रति पल परिवर्तित होते

समय में अनुवाद की महत्ता और बढ़ती जा रही है, इसकी माँग अधिक बढ़ती जा रही है। ऐसे में आवश्यकता इस बात की है कि अनुवाद को विस्तार से जाना समझा जाये, तभी हम इसकी महत्ता को भली-भाँति समझ सकेंगे।

१.३ अनुवाद का अर्थ

'अनुवाद' संस्कृत का तत्सम शब्द है जिसका संबंध 'वद्' धातु से है। 'वद्' धातु का अर्थ होता है 'कहना' या 'बोलना' | 'वद्' धातू में 'धञ' प्रत्यय लगाने से 'वाद' शब्द बनता है और फिर उसके 'बाद में', 'पीछे', अनुवर्तिता आदि अर्थों में प्रयुक्त 'अनु' उपसर्ग जुड़ने से 'अनुवाद' शब्द बनता है। अत: 'अनु' और 'वाद' (अनु+वाद) शब्दों के संयोग से 'अनुवाद' शब्द बनता है, जिसका अर्थ है - किसी के कहने के बाद उसे पुन: कहना। इस तरह से अनुवाद का शाब्दिक अर्थ है - किसी के कहने या बोलने के बाद उसे कहना या बोलना। शब्दार्थ चिन्तामणि कोश ग्रन्थ के अनुसार अनुवाद शब्द की दो व्युत्पत्तियाँ हैं:-

१. प्राप्तस्य पुनः कथनम्

२. ज्ञातार्थाय प्रतिपादनम्

पहली व्युत्पत्ति के आधार पर - प्रथम कहे गये का अर्थ ग्रहण कर उसको पुन: कहना ही अनुवाद है। दूसरी व्युत्पत्ति के अनुसार किसी के द्वारा कही गयी बातों को भली-भाँति समझकर उसे पुनः प्रतिपादित करना ही अनुवाद है। इस प्रकार इन दोनों व्युत्पत्तियों में थोड़ासा परिवर्तन करके एक और तरीके से इसे कहा जा सकता है-

ज्ञातार्थस्य पुनः कथनम्

तात्पर्य है किसी के कहे गये कथन के अर्थ को बिल्कुल सही तरह से समझकर उस कथन को फिर से कहना ही अनुवाद है। 'अनुवाद' शब्द का प्रचलन भारत में प्राचीन काल से, वैदिक काल से है। भारतीय दर्शन ग्रंथों में भी अनुवाद शब्द का व्यापक प्रयोग मिलता है।

प्राचीन भारत में जब शिक्षा की मौखिक परंपरा प्रचलित थी और गुरू जी द्वारा कहे गये कथनों, वाक्यों, श्लोकों को उनके शिष्य दुहराते थे। इस दुहराने शब्द को 'अनुवाक्' या 'अनुवाद' शब्द से जाना जाता था। संस्कृत के प्राचीन में अनुवाद शब्द का प्रयोग मिलता है, इसके बाद 'अनुवाद' शब्द का प्रयोग मध्यकालीन साहित्य, विशेषतः भक्तिकालीन साहित्य में व्यापक रूप से हुआ है जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण है गोस्वामी तुलसीदास कृत 'रामचरित मानस।'

प्राचीन काल से लेकर मध्यकाल में रचे गए संस्कृत के अनगिनत अमूल्य रचनाओं का विभिन्न भाषाओं में भाषान्तरण हुआ, रूपान्तरण हुआ, जिसे 'टीका', 'भाषा टीका', भाषानुवाद, छाया, तरजुमा आदि के नाम से भी जाना गया जिसमें सबका आशय यही था कि एक भाषा की सामग्री को दूसरी भाषा में रूपांतरण का नाम ही अनुवाद है।

आज के युग में 'अनुवाद' अंग्रेजी के 'Translation' शब्द के हिन्दी पर्याय के रूप में प्रयुक्त होता है। 'Translation' जो कि एक संज्ञा शब्द है, इसका क्रिया रूप है- 'Translate'। 'Translate' शब्द मूलतः लैटिन शब्द 'Translatum' से निकला है। Translatum शब्द 'Trans' और 'Latum' के संयोग से यानी कि (Trans+Latum) से बना है। 'Translatum' शब्द में 'Trans' उपसर्ग का अर्थ है 'उस पार' या 'दूसरी तरफ' और Latum शब्द अर्थ है 'ले जाना'। इस प्रकार हिन्दी के अनुवाद शब्द की तरह ही अंग्रेजी के 'Translation' शब्द का अर्थ हुआ एक भाषा में कही गयी बात को दूसरी भाषा में संप्रेषित करना| एक भाषा में कही गयी बात को दूसरी भाषा में कहने या अनुवाद करने के लिए अनुवादक के लिए यह परम अनिवार्य है कि वह दोनों भाषाओं पर समान अधिकार रखे, दोनों भाषा पर पूरा अधिकार रखता हो। जिस भाषा से कोई भी अनुवाद किया जाता है उस भाषा को स्रोत भाषा कहते हैं और जिस भाषा में अनुवाद किया जाता है उस भाषा को लक्ष्य भाषा कहा जाता है।

१.४ अनुवाद की परिभाषा

आधुनिक समय में 'अनुवाद' शब्द अंग्रेजी के 'Translation' शब्द के हिन्दी पर्याय के रूप से प्रचलित है, जिसका तात्पर्य है एक भाषा (स्रोत भाषा) के भाव और विचारों को दूसरी भाषा (लक्ष्य भाषा) में ले जाना | विभिन्न विद्वानों के अनुसार अनुवाद की परिभाषाएँ भी भिन्न भिन्न हैं। हम इन्हें भारतीय विद्वानों और पाश्चात्य विद्वानों द्वारा दी गयी परिभाषाओं को समझने का प्रयास करते है।

संस्कृत परिभाषाएँ:

१. शब्दार्थ चिंतामणि कोश के अनुसार -

(i) "प्राप्तस्य पुनः कथने।"

(ii) "ज्ञाथार्थस्य प्रतिपादने।"

अर्थात् पहले कहे गये अर्थ को फिर से कहना।

२. ऋगवेद के अनुसार -

"अन्वेको वदति यद्ददाति ।"

अर्थात् पश्चात् कथन अनुवाद है।

३. पाणिनी के अनुसार -

"अनुवादे चरणानाम् ।"

पाणिनी के प्रसिद्ध ग्रंथ 'अष्टाध्यायी' के अनुसार अनुवाद प्राय: कथन है |

संस्कृत भाषा की ये परिभाषाएँ दर्शाती हैं कि अनुवाद वास्तव में सार्थक सोद्देश्यपूर्ण पुन: कथन होता है।

हिन्दी परिभाषाएँ:

१. डॉ. भोलानाथ तिवारी :

भाषा ध्वन्यात्मक प्रतीकों की व्यवस्था है और अनुवाद है इन्हीं प्रतीकों का प्रतिस्थापन। अर्थात् एक भाषा के प्रतीकों के स्थान पर दूसरी भाषा के निकटतम समतुल्य और सहज प्रतीकों का प्रयोग करना अनुवाद है।

२. डॉ. विश्वनाथ अय्यर:

अनुवाद की प्रविधि एक भाषा से दूसरी भाषा में रूपांतरित करने तक सीमित नहीं है। एक भाषा के रूप के कथ्य को दूसरे रूप में प्रस्तुत करना भी अनुवाद है। छंद में बताई गई बात को गद्य में उतारना भी अनुवाद है।

३. डॉ. कृष्ण कुमार गोस्वामी:

एक भाषा में व्यक्त भावों या विचारों को दूसरी भाषा में समान और सहज रूप में व्यक्त करने का प्रयास अनुवाद है।

४. जी. गोपीनाथ :

अनुवाद वह द्वंद्वात्मक प्रक्रिया है, जिसमें स्रोत पाठ की अर्थ संरचना (आत्मा) का लक्ष्य पाठ की शैलीगत संरचना (शरीर) द्वारा प्रतिस्थापन होता है।

५. डॉ. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव :

एक भाषा (स्रोत भाषा) की पाठ सामग्री में अंतर्निहित तथ्य का समतुल्यता के सिद्धान्त के आधार पर दूसरी भाषा (लक्ष्य भाषा) में संगठनात्मक रूपांतरण अथवा सृजनात्मक पुनर्गठन ही अनुवाद है।

६. पटनायक :

अनुवाद वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा सार्थक (अर्थपूर्ण संदेश या संदेश का अर्थ) को एक भाषा समुदाय से दूसरे भाषा-समुदाय में संप्रेषित किया जाता है।

७. डॉ. रीतारानी पालीवाल :

स्त्रोत भाषा में व्यक्त प्रतीक व्यवस्था को लक्ष्य भाषा की सहज प्रतीक व्यवस्था में रूपांतरित करने का कार्य अनुवाद है।

८. डॉ. जयंती प्रसाद नौटियाल :

स्त्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में किसी विषयवस्तु या संदेश की समतुल्य अभिव्यक्ति अनुवाद है।

पाश्चात्य परिभाषाएँ :

१. सैमुअल जॉनसन :

To Translate is to change in to another language retaining the sense. (एक भाषा से दूसरी भाषा में भावार्थ का परिवर्तन ही अनुवाद है।)

२. ई.ए. नाइडा एवं टैबर :

Translating consists in producing in the receptor language the closest natural equivalent to the message of the source language. First in meaning and secondly in style.

(अनुवाद का तात्पर्य है, स्त्रोत भाषा में व्यक्त संदेश के लिए लक्ष्य भाषा में निकटतम सहज समतुल्य संदेश प्रस्तुत करना। यह समतुल्यता पहले तो अर्थ के स्तर पर होती है, फिर शैली के स्तर पर।)

३. न्यूयार्क:

अनुवाद एक ऐसा शिल्प है, जिसमें एक भाषा में व्यक्त संदेश के स्थान पर दूसरी भाषा के उसी संदेश को प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाता है।

४. हैलिडे:

अनुवाद एक ऐसा संबंध है, जो दो या दो से अधिक पाठों के बीच होता है। ये पाठ समान स्थिति में समान कार्य संपादित करते हैं।

५. जे. सी. कैटफोर्ड:

Translation is the replacement of textual material in one language by the equivalent textual material in another language.

(एक भाषा की पाठ्य सामग्री को दूसरी भाषा की समानार्थक पाठ्य सामग्री से प्रतिस्थापित करना ही अनुवाद है।)

६. डॉ. जानसन :

अनुवाद का आशय अर्थ को अक्षुण्ण रखते हुए अन्य भाषा में अंतरण करना।

७. मैथ्यू आर्नल्ड :

अनुवाद ऐसा होना चाहिए कि उसका वही प्रभाव पड़े जो मूल का उसका पहले श्रोताओं पर पड़ा होगा।

८. लियोनार्ड फोरेस्टन:

अनुवाद एक भाषा के कथ्य की विषयवस्तु का दूसरी भाषा में रूपांतरण है।

९. ए. एन. स्मिथ :

अर्थ को बनाए रखते हुए अन्य भाषा में अंतरण अनुवाद है।

१०. विलियम विल्ज :

अच्छा अनुवाद एक पुनर्जन्म ही है। परिणामस्वरूप, एक भाषा में व्यक्त विचारों को दूसरी भाषा में व्यक्त करना ही अनुवाद है।

१.५ अनुवाद का स्वरूप

अनुवाद साहित्य की एक विधा है। परन्तु फिर भी इसे मौलिक साहित्य की श्रेणी में नहीं शामिल किया जा सकता है क्योंकि एक भाषा की सामग्री या मौलिक लेखन को दूसरी भाषा में अंतरित करने का माध्यम अनुवाद है। कुछ विद्वानों ने इसे 'सेकेंड हैंड' साहित्य माना है तो कुछ लोगों के अनुसार अनुवाद की पूरी प्रक्रिया की तुलना आत्मा के परकाया प्रवेश की प्रक्रिया से है।

किसी भाषा के भावों-विचारों को दूसरी भाषा में अभिव्यक्ति प्रदान करना आसान कार्य नहीं होता है। यह एक अत्यन्त कठिन कार्य है। संसार में जितनी भाषाएँ होती हैं सभी भाषाओं की अपनी-अपनी विशेषता होती है, उनकी अपनी व्याकरणिक संरचना होती है। सभी भाषाओं की अपनी-अपनी ध्वनि, रूप, वाक्य अर्थ और विशेषताएँ होती हैं। उनके अपने मुहावरे और लोकोक्तियाँ होती हैं। इसलिए मूलभाषा या स्त्रोत भाषा में व्यक्त भावों-विचारों को उसी रूप में प्रस्तुत करना सरल या आसान कार्य नहीं है। प्रत्येक अनुवाद सफल होगा, इसकी कोई गारंटी नहीं होती है। उदाहरण स्वरूप मान लें कि हमने होटल में कोई बहुत स्वादिष्ट भोजन खाया और हमने यह तय किया कि हम ठीक ऐसा ही भोजन अपने घर पर पकाएँगे । हमने उस भोज्य पदार्थ को घर पर बनाने की पूरी प्रक्रिया का अध्ययन किया, यू-ट्यूब से देखा और उसे घर पर बनाया। ऐसे में तीन तरह की संभावनाएँ हो सकती हैं पहला या तो वह भोजन, होटल के भोजन की तरह स्वादिष्ट बनेगा, या तो उससे भी अच्छा बन सकता है या फिर बिल्कुल उसके अनुरूप नहीं बनेगा। अनुवाद के साथ भी यही स्थिति है। संभव है कि अनुवाद मूल सामग्री से उत्तम बन जाए।

संभव है कि अनुवाद स्रोत भाषा में लिखित साहित्य के समान अनूदित हो जाए और संभव यह भी है कि अनुवाद अपने लक्ष्य को प्राप्त ही नहीं कर सके। ये तीनों तरह की संभावनाएँ अनुवाद की प्रक्रिया के दौरान बनी रहती है। इस प्रकार अनुवाद सही मायने में मूलतः सृजन प्रक्रिया ही है।

अनुवाद करते समय कई बार स्त्रोत भाषा का कथ्य, लक्ष्य भाषा में कहीं अपेक्षाकृत विस्तृत तो कहीं संकुचित और कहीं भिन्न रूप का हो जाता है। उदाहरणस्वरूप अंग्रेजी भाषा-भाषी लोग ठंडे इलाके में रहने के कारण गर्मी का महत्त्व समझते हैं इसलिए वे 'वार्म रिसिप्शन' या 'वार्म वेलकम' करते है। इसके लिए हम हिन्दी में 'गर्म स्वागत' शब्द का प्रयोग करने के बजाय 'हार्दिक स्वागत' शब्द का प्रयोग करते है क्योंकि हिन्दी में 'गर्म स्वागत' शब्द कदापि सटीक सार्थक नहीं है।

हिन्दी में क्रिया के साथ सहायक क्रिया का भी काफी महत्व है क्योंकि सहायक क्रिया से क्रिया और स्पष्ट हो जाती है जैसे कि -

१. बच्चा गिरा।

२. बच्चा गिर गया।

३. बच्चा गिर पड़ा।

इन तीनों वाक्यों में 'गिर' क्रिया के साथ सहायक क्रिया 'गया', 'पड़ा' का प्रयोग किया गया है; जिसका अंग्रेजी अनुवाद है Child Fell या फिर child fell down. इसी प्रकार एक और उदाहरण-

१. आइए।

२. आ जाइये।

३. आ भी जाइये।

इन तीनों वाक्यों का अंग्रेजी अनुवाद 'Come on' या 'Welcome' होगा | हिन्दी के वाक्यों का अर्थ भेद अंग्रेजी अनुवाद में नहीं लाया जा सकता। वास्तव में जब अंग्रेजी में सहायक क्रियाएँ ही नहीं तो फिर भाव की समीपता से ही संतोष करना पड़ेगा। कुछ अनुवादक अर्थ की समीपता को महत्त्व देने की दृष्टि से शब्दानुवाद करते हैं जिससे स्रोत भाषा में न तो मूल भाषा के भाव की रक्षा हो पाती है और न ही अपेक्षित सौन्दर्य आ पाता है।

मूल कृति के सृजनकार और अनुवादक में अंतर होता है। मूलकृति का सृजनकार अपने भावों - विचारों को आत्मचिंतन, आत्मभाव से लिखता है जबकि एक अनुवाद उसकी रचना को पहले ग्रहण करता हैं, फिर उस उसका अनुवाद करता है। अनुवाद करते समय भी वह सृजन प्रक्रिया से गुजरता है। अनुवाद वास्तव में एक सृजन प्रक्रिया ही है। विद्वान राजरा पाउंड ने साहित्य के अनुवाद को साहित्यिक पुनर्जीवन माना है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि अनुवाद का मूल उद्देश्य मूल या स्रोत भाषा के भावों-विचारों-तथ्यों को यथासंभव लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करना है। इसके लिए अनुवादक के लिए आवश्यक है कि स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा दोनों ही भाषाओं के विस्तृत और गहरे ज्ञान के साथ-साथ दोनों भाषाओं से संबंधित परिवेशों, परिस्थितियों, देश, काल, समाज आदि के विषय में व्यापक जानकारी, व्यापक ज्ञान अनिवार्य रूप से हो, तभी दक्षता से अनुवाद कार्य किया जा सकता है।

१.६ सारांश

यहाँ पर एक भाषा में कही गई बात विशेषतः दूसरी भाषा में उसे अभिव्यक्त करना ही अनुवाद है | प्रस्तुत अध्याय में छात्रों ने अनुवाद के संदर्भ में अनुवाद की परिभाषा, उसका अर्थ और उसके स्वरुप का विस्तार से अध्ययन किया है |

१.७ लघुत्तरीय प्रश्न

प्र.१ अनुवाद क्या है ?

उ. एक भाषा में कही गई बात को दूसरी भाषा में अभिव्यक्त करना।

प्र.२ अनुवाद का महत्त्व कब से है?

उ. सृष्टि के अनादि काल से।

प्र.३ वर्तमान युग किसका है?

उ. अनुवाद का युग।

प्र.४ अनुवाद किस भाषा से संबधित है?

उ. संस्कृत के तत्सम शब्द से संबंधित।

प्र.५ अनुवाद का संबंध किस धातु से है ?

उ. संस्कृत के 'वद्' धातु से।

प्र.६ 'वद्' का अर्थ क्या है?

उ. बोलना या कहना।

प्र.७ 'वद्' धातु में कौन सा प्रत्यय लगाकर अनुवाद शब्द बनता है?

उ. 'धञ' प्रत्यय।

प्र.८ 'वद्' धातु में 'धञ' प्रत्यय लगाने के बाद कौन सा शब्द बनता है ?

उ. 'वाद' शब्द।

प्र.९ 'अनु' शब्द का क्या अर्थ है?

उ. 'बाद में' या 'पीछे लगना।'

प्र.१० किसी के कहने के बाद उसे पुन: कहना क्या है?

उ. अनुवाद।

प्र.११ शब्दार्थ चिन्तामणि कोश ग्रन्थ के अनुसार दो व्युत्पत्तियाँ क्या है ?

उ. (क) प्राप्तस्य पुन: कथनम्

(ख) ज्ञातार्थाय प्रतिपादनम्

प्र.१२ अनुवाद को अन्य किन नामों से जाना जाता है?

उ. टीका, भाषा टीका, भाषानुवाद, छाया, तरजुमा।

प्र.१३ 'अनुवाद' अंग्रेजी के किस शब्द का हिन्दी पर्याय है?

उ. ट्रांसलेशन।

प्र.१४ अंग्रेजी का ट्रान्सलेट शब्द वास्तव में किस भाषा से निकला है ?

उ. लैटिन।

प्र.१५ अंग्रेजी के 'ट्रान्स' (Trans) उपसर्ग का अर्थ क्या है?

उ. उस पार या दूसरी तरफ ले जाना।

प्र.१६ अनुवाद के लिए कितने भाषाओं का ज्ञान अनिवार्य है?

उ. दो।

प्र.१७ "अर्थ को बनाए रखते हुए अन्य भाषा में अंतरण अनुवाद है।" यह किसका कथन है?

उ. ए. एन. स्मिथ।

प्र.१८ अच्छे अनुवाद को पुनर्जन्म किसने माना है?

उ. विलियम विल्ज।

प्र.१९ कुछ विद्वानों ने 'सेकेंड हैंड' साहित्य किसे कहा है?

उ. अनुवाद को।

प्र.२० किसी भावों-विचारों को दूसरी भाषा में व्यक्त करना कैसा कार्य है?

उ. कठिन, श्रमसाध्य।

१.८ संभावित दीर्घोत्तरीय प्रश्न

प्र.१ विभिन्न विद्वानों के अनुसार अनुवाद को परिभाषित कीजिए।

प्र.२ अनुवाद क्या है? सविस्तार से लिखिए।

प्र.३ अनुवाद शब्द की उत्पत्ति किस शब्द से हुई है? इसे परिभाषित करते हुए लिखिए।

प्र.४ अनुवाद के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

प्र.५ अनुवाद की परिभाषा और स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

१.९ संदर्भ ग्रंथ

१. प्रयोजनमूलक हिन्दी - विनोद गोदरे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, १९९८

२. प्रयोजनमूलक हिन्दी - डॉ. अंबादास देशमुख, शैलजा प्रकाशन, कानपुर, २००९

३. प्रयोजनमूलक हिन्दी - डॉ. लक्ष्मीकांत पांडेय, डॉ. प्रमिला अवस्थी, कल्याण चंद्र चौबे, आशीष प्रकाशन, कानपुर, २००५

४. अनुवाद - अमित कुश, सौम्य प्रकाशन, मुंबई, २०११

*****

२

अनुवाद की अवधारणा और सिद्धान्त

इकाई की रूपरेखा

२.० इकाई का उद्देश्य

२.१ प्रस्तावना

२.२ अनुवाद की अवधारणा

२.३ अनुवाद के सिद्धान्त

२.४ सारांश

२.५ लघुत्तरीय प्रश्न

२.६ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

२.७ संभावित प्रश्न

२.८ संदर्भ ग्रंथ

२.० इकाई का उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का अध्ययन के बाद छात्र -

- अनुवाद की अवधारणा को समझ पाएँगे।
- अनुवाद के सिद्धान्तों का विवेचन कर पाएंगे।

२.१ प्रस्तावना

अनुवाद मूल रचना अथवा सूचना साहित्य को जितना हो सके मूल भावना के समानांतर अर्थ एवं संप्रेषण के आधार पर लक्ष्य भाषा-Target Language (जिस भाषा में अनुवाद करना है) में अभिव्यक्त करने की प्रक्रिया है। आजकल अनुवाद के लिए भाषान्तर, तजुर्मा एवम् रूपान्तर आदि पर्यायी शब्दों का भी प्रयोग किया जाता है।

२.२ अनुवाद की अवधारणा

वस्तुतः अनुवाद एक द्विभाषिक प्रक्रिया है। विभिन्न भाषाओं की प्रकृति और प्रवृत्ति एक दूसरे से भिन्न होती है, अतएव अनुवाद की सफलता एवं सार्थकता के लिए उन दोनों भाषाओं के बीच एक विभिन्न स्तर पर समतुल्यता की आवश्यकता है, इसी कारण दोनों

भाषाओं स्रोत भाषा तथा लक्ष्य भाषा टारगेट लैंग्वेज का तुलनात्मक अध्ययन जरूरी होता है। अनुवाद भाषा का एक व्यापार है, आधुनिक युग में अनेक क्षेत्रों में यह व्यापार अनिवार्य हो गया है, जहाँ भाषा है वहाँ अनुवाद भी आता है।

अनुवाद की प्रक्रिया में अनुवाद कर्ता सबसे पहले मूल पाठ (स्रोत भाषा में लिखित) को पढ़ता है, उसका अर्थ ग्रहण करता है उसके पश्चात पढ़ी हुई सामग्री का मनन करता है उसके पश्चात पाठांतर/अनुवाद (लक्ष्य भाषा में) करने के लिए प्रेरित होता है, जिसमें मूल भाषा के कथ्य एवम् कथन को लक्ष्य भाषा में समतुल्य या निकटतम रूप में अनूदित किया जाता है - अनुवाद की प्रक्रिया के लिए निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना अनिवार्य है-

१. **पाठ–पठन:** पहला चरण है उपलब्ध सामग्री को पूरी तरह समझ-बूझ कर पढ़ना, यह पाठ - पठन जिस दृष्टि से किया जाता है उसमें आंशिक अर्थ की दृष्टि से पाठ की सामग्री को पढ़ा जाता है। दूसरा विषय अर्थ की दृष्टि से- अर्थात पाठ में किस भाषा और संस्कृति को लिया गया है पाठ के विषय का इसमें ध्यान रखा जाता है और पठन-पाठन में हो सकता है कि भाषा कठिन हो तब उस भाषा को समझने की आवश्यकता होती है इसमें अनुवाद कार्य करने वाले को मूल भाषा और लक्ष्य भाषा दोनों का भी उचित ज्ञान होना चाहिए यदि कभी भाषा की जटिलता के कारण पाठ समझ में नहीं आ पाता है तब विषय के जानकार या प्रामाणिक पुस्तकों की सहायता ली जानी चाहिए। यह भी ध्यान में रखा जाना चाहिए कि अनुवाद करते समय लक्ष्य भाषा के विषय में निर्धारित काल, देश, लिंग, वचन प्रसंग आदि बातों को ध्यान में रखना चाहिए जो कि अर्थ निर्धारण के लिए आवश्यक मानी जाती हैं।

२. **विषय का ज्ञान और पाठ विश्लेषण:** अनुवादक को अनुवाद सामग्री के विषय का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। अगर उसे विषय का अच्छी तरह ज्ञान नहीं होगा तो वह मूल रचना के साथ सही न्याय नहीं कर पायेगा। अनुवादक को व्याकरण का उचित ज्ञान होना चाहिए। अनुवादक को अनुवाद में स्पष्ट और सही उच्चारण का प्रयोग करना चाहिए, और अनुवाद से सम्बन्धित विषय का सम्पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। अनुवाद की दृष्टि से दूसरे चरण में पाठ का विश्लेषण करते हैं, विश्लेषण में विशेष ध्यान इस बात पर दिया जाना चाहिए कि कहाँ शब्द का अनुवाद करना है, कहाँ पदबंध का, कहाँ उपवाक्य का, कहाँ वाक्य का और कहाँ एक से अधिक वाक्यों को एक में मिलाकर अनुवाद करना है।

३. **भाषा का ज्ञान:** अनुवादक की सर्वप्रथम आवश्यकताओं में से एक है कि उसे भाषाओं का समुचित ज्ञान हो क्योंकि उसके सामने दो अलग-अलग भाषाओं की प्रकृति, प्रवृत्ति, संस्कृति, अभिव्यक्ति, शक्ति आदि बातों से वाकिफ होना चाहिए जिससे भाषा की वाक्य-रचना, शब्दों की चयन-प्रक्रिया, अभिव्यक्ति की सक्षम परख और वाक्य - विन्यास एवं शैलियों पर सांस्कृतिक प्रभाव का गहन अध्ययन हो ताकि अपने दायित्वों को अच्छी तरह निभा सके। अनुवाद में आसान भाषा का प्रयोग होना चाहिए।

साथ ही अनुवादक को भाषिक अन्तरण यह चरण अनुवाद का प्राण माना जाता है, मूल भाषा के शब्द, आशय, विषय, कथ्य, सामाजिक संरचना की विशिष्टताएँ आदि

को यथावत संप्रेषित करने के जटिल दायित्व को निभा कर लक्ष्य भाषा में लाना होता है।

४. **अभिव्यक्तिगत तटस्थता और उचित समायोजन:** उत्तम अनुवाद अनुवादक के रुचि के साथ उसकी योग्यता, विषय-वस्तु की समझ, भाषाओं की निपुणता आदि बातों पर बहुत निर्भर करता है। अच्छे और सफल अनुवाद की पहचान यही है कि पाठक को पढ़ते समय ऐसा न महसूस हो अनुवाद पढ़ रहे है बल्कि पाठक को ऐसा महसूस हो कि वे मूल पाठ पढ़ रहे हैं। अनुवादक को चाहिए कि स्वयं से कुछ न जोड़कर तटस्थता का ध्यान रखे।

यहाँ स्रोत भाषा का लक्ष्य भाषा की दृष्टि से समायोजन भी करते हैं। इस समायोजन में मुख्य बातें ध्यान में रखनी चाहिए- अ- स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की वाक्य संरचना तथा भाषा शैली का उचित बोध हो। ब- भाषा में सहज प्रवाह हो। स- स्रोत भाषा की छाया ना हो। जैसे- अंग्रेजी का वाक्य - "I have taken my meal" का हिन्दी शाब्दिक अनुवाद - "मैंने अपना खाना खा लिया है" जिसमें स्रोत भाषा की छाया है, हिन्दी की वाक्य संरचना के अनुसार इसका सही अनुवाद होगा - "मैंने खाना लिया है।"

५. **पुनर्निरीक्षण:** अनुवादक को चौथे चरण में आकर अपने कर्तव्य की इतिश्री नहीं समझ लेना चाहिए। उसे अंत में मूल रचना के कथ्य एवम् कथन से लक्ष्य भाषा में किये गए अनुवाद से एक बार तुलना अवश्य कर लेनी चाहिए, और यह आश्वासन कर लेना चाहिए कि अनुवाद मूल से कम नहीं कह रहा हो, ना अधिक कह रहा हो और ना ही कुछ हट कर कहा गया हो तथा मूल रचना के अनुरूप ही कथ्य को रखा गया हो।

भाषा का संबंध सदैव इतिहास, समाज और संस्कृति की परंपराओं, मनुष्य की मानसिकता, संस्कार रुचि, योग्यता, उसकी पृष्ठभूमि तथा परिवेश से होता है, इन सभी तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि भाषा का शाब्दिक आधार ही अनुवाद का नियामक नहीं है परंतु अनुवाद भाव, भाषाओं, मानसिकता के विभिन्न पहलुओं से जुड़कर सिर्फ भाषा का अनुवाद ना रहकर मनुष्य की मानसिकता व मानसिक वर्तन के साक्षात्कार का साधन बन जाता है।

२.३ अनुवाद के सिद्धांत

साहित्य, पत्रकारिता, ज्ञान- विज्ञान और यांत्रिक क्षेत्रों में वैश्विक स्तर पर सूचनाओं का आदान-प्रदान होता है, इसलिए अनुवाद आधुनिक जन-जीवन की अनिवार्यता बन चुका है। अनुवाद के विभिन्न सिद्धान्त इस प्रकार हैं -

१. अनुवाद अर्थ संप्रेषण का सिद्धांत:

अनुवाद के सिद्धांत के प्रेरक डॉ. जॉनसन तथा ए. एच. स्मिथ हैं। यह दोनों ब्रिटेन के भाषा वैज्ञानिक थे। अपने अनुवाद कार्यों में इन भाषा वैज्ञानिकों ने यह महसूस किया कि अनुवाद में प्रथम तथा महत्वपूर्ण भूमिका अर्थ की होती है। डॉ. जॉनसन के अनुसार "To translate

is to change into another language retaining the sense." अर्थात मूल के अर्थ को बनाये रखते हुए लक्ष्य भाषा में अन्तरण अनुवाद है।" पहले स्रोत भाषा के पाठ का अर्थ सही होना चाहिए। डॉक्टर जॉनसन के अनुसार अनुवाद पाठ का नहीं पाठ के अर्थ का होता है। पाठ के शब्दों, वाक्य आदि के अर्थ को लक्ष्य भाषा में अंतरित किया जाता है। शब्दों, पदबंधों अथवा समग्र वाक्य का अंतरण नहीं किया जाता है। आगे चलकर अंग्रेजी साहित्य के आधुनिक आलोचक ए. एच. स्मिथ ने डॉक्टर जॉनसन की परिभाषा में संक्षिप्त संशोधन करते हुए अपना तर्क रखा - "(To translate is to change into another language retaining as much as of the sense as one can) अर्थात 'अनुवाद मूल भाषा से लक्ष्य भाषा में परिवर्तन करना है, जितना हो सके उतना मूल भाषा का आशय / तत्व उसमें रखना चाहिए|' इस प्रकार दोनों भी विद्वान इस बात से सहमत हुए कि – अनुवाद की प्रक्रिया में अर्थ की कुछ ना कुछ हानि होती ही है, अर्थ की हानि का कारण है कि - दो अलग-अलग भाषाओं की अलग-अलग भाषिक संरचना का होना। जैसे - व्याकरण, वाक्य रचना, मुहावरे, सामाजिक और सांस्कृतिक परम्परा आदि में भिन्नता का होना। इसलिए डॉ. जॉनसन और स्मिथ ने अर्थ सम्प्रेषण का सिद्धांत रखा। इनके अर्थ संप्रेषण का तात्पर्य स्रोत भाषा के पाठ के अर्थ का लक्ष्य भाषा में संप्रेषण से था। जैसे - (Lokayukta to get more teeth soon.) इस अंग्रेजी वाक्य का जो अर्थ है, अनुवाद उसी का किया जाएगा लोकायुक्त एक संवैधानिक शब्द होता है और उसका मुख्य काम प्रशासन में भ्रष्टाचार निवारण का होता है। परंतु इस हेतु लोकायुक्त को किसी प्रकार का प्रभावी अधिकार नहीं होता अंग्रेजी पाठ का more teeth लोकायुक्त को ज्यादा अधिकार देने के अर्थ में प्रयुक्त है। इसलिए इस वाक्य का अनुवाद "लोकायुक्त को और अधिकार जल्दी ही मिलेंगे" होगा।

स्पष्ट है कि इस प्रकार के स्रोत भाषा के पाठ का जो अर्थ निस्पंद होता है, लक्ष्य भाषा में अनूदित करते हुए उसे ही संप्रेषित करने की चेष्टा की जाती है। इस तरह के अनुवाद में पाठ के भाव, शैली आदि पर ध्यान नहीं दिया जाता है। अर्थ के इकहरी रूपांतरण का उदाहरण होता है ऐसा अनुवाद जो कि अक्सर कार्यालयीन अनुवाद में उपयोग होते हैं। अनुवाद में प्रायः ऐसे ही उदाहरण देखने, पढ़ने को मिलते हैं इसलिए अनुवाद में अर्थ संप्रेषण के सिद्धांत की मान्यता है। अनुवाद सिद्धांत की श्रृंखला में यह सिद्धांत प्राथमिक है।

२. अनुवाद में व्याख्या का सिद्धांत:

कुछ विद्वानों ने अनुवाद को मूल रूप में व्याख्या माना है। इस मत के समर्थक विद्वान शैली प्रधान साहित्य (लिटरेचर ऑफ पावर) के अनुवाद में उसी को व्याख्यानुवाद का अधिकार देते हैं जिसको अनुवाद करने की क्षमता और सामर्थ्य और विद्वता हो । Roman Jacobson के अनुसार, "Translation proper or interlingual translation is an interpretation of verbal signs by means of signs in some other language." अर्थात अनुवाद एक भाषा के शाब्दिक प्रतीकों के दूसरी भाषा के शाब्दिक प्रतीकों द्वारा व्याख्या है यद्यपि शैली प्रधान साहित्य (काव्य, नाटक आदि) का रचनाकार महान उद्देश्य और अनुपम कल्पना शक्ति के साथ भाषिक प्रतीकों का प्रयोग करता है, अतः कह सकते हैं कि मूल रचना में प्रयुक्त प्रतीकों का दूसरी भाषा में अंतरण उसकी कल्पनाशील व्याख्या के बिना संभव नहीं है। विधि, वाणिज्य, चिकित्सा आदि विषयों पर आधारित ज्ञान प्रधान साहित्य में तकनीकी शब्द की व्याख्या उनके अभिप्रेत अर्थ को जानने के लिए आवश्यक

मानी जाती है । शैली प्रधान साहित्य के अनुवाद में अनुवादक से व्याख्या परक अंतरण (interpretative transfer) करना अपेक्षित होता है । एक अनुवादक को सृजनशील होना ही चाहिए, तभी वह उस साहित्यिक पाठ (literary text) की संकल्पना और संरचना को ठीक से समझ सकता है यही कारण है कि एक ही पाठ के दो अनुवादकों द्वारा किये गए अनुवाद में भिन्नता पाई जाती है ।

भाषा वैज्ञानिक रोमन याकब्सन, यूरोपीयन होम्स के विचार में अनुवाद का मूल तत्व (Essence) पाठ की व्याख्या होती है। वैसे भी किसी भाषा के किसी कथन का, दूसरी भाषा में रूपांतरण सर्वदा सरल नहीं होता, हर एक भाषा की संरचना, भाषाओं के शब्द, पदबन्ध, वाक्य, मुहावरे, व्याकरणिक नियम, शैली आदि में काफी भिन्नता होती है । इसी तर्क के आधार पर इन भाषा वैज्ञानिकों ने अनुवाद में व्याख्या का प्रतिपादन किया है इनके अनुसार, “Translation is an act of interpretation” जैसे - “Due to rain, cricket match is cancelled” यदि इस वाक्य का अनुवाद करना पड़े तो अनुवाद में केवल शब्द का अंतरण मात्र ही नहीं होगा, बल्कि भाषा और वाक्य की संरचना के प्रभाव की महत्ता भी होगी। यदि हम मात्र शब्दान्तरण करें तो इसका अनुवाद इस प्रकार होगा- ‘ कारण के बारिश, क्रिकेट मैच बंद’ यह अनुवाद कदापि नहीं होगा, अंग्रेजी वाक्य के अनुवाद में व्याख्या से ही सहायता मिलेगी और व्याख्या में भाव की प्रधानता होती है, इसलिए ऐसे पाठ के अनुवाद में भावानुवाद की सहायता लेनी पड़ती है । अतः “Due to rain, cricket match is cancelled” का सही हिन्दी अनुवाद- ‘बारिश के कारण, क्रिकेट मैच बंद किया गया’ होगा । शायद इसलिए अनुवाद में भाव अनुवाद की प्रधानता होती है । इस तरह से अनुवाद में कभी-कभी स्रोत भाषा के कथन के लक्ष्य भाषा में रूपांतरण के समय पाठ की व्याख्या अपरिहार्य होती है अनुवाद में व्याख्या का सिद्धांत इसी वजह से प्रचलित हुआ और प्रसिद्ध हुआ ।

व्याख्या के सिद्धान्त की सबसे बड़ी समस्या यह है कि व्याख्या करते समय अनुवादक कभी- कभी मूल पाठ के अर्थ से भटक जाता है, जिससे मूल पाठ का अर्थ, सन्देश भिन्न हो सकता है और उसके पाठक के साथ न्याय नहीं हो सकता है ।

३. अनुवाद में प्रभाव समता का सिद्धांत:

ब्रिटिश वैज्ञानिक टैन्काक इस सिद्धांत के प्रणेता हैं। उनके अनुसार-अनुवाद में स्रोत भाषा के कथन को लक्ष्य भाषा में पुनः स्तुति की जाती है और यह स्तुति पाठक में प्रभाव के मामले में बिल्कुल मूल जैसी होती है, और यही अनुवाद सफल माना जा सकता है। जैसे - I am very angry - इस वाक्य का अनुवाद होगा मैं बहुत नाराज़ हूँ, इसमें मूल पाठ और अनुदित पाठ के प्रभाव एक समान प्रतीत होते हैं । किंतु अंग्रेजी वाक्य का अनुवाद यदि हिंदी मुहावरे के साथ “ मैं गुस्से से आग बबूला हूँ ” किया जाए तो उपयुक्त नहीं होगा क्योंकि अंग्रेजी कथन का जैसा प्रभाव प्रतीत होता है हिंदी अनुवाद का प्रभाव उससे भी कम-ज्यादा हो जाता है, स्मरणीय रहे कि काल और परिस्थिति के अनुसार, शब्दों के अर्थ में कुछ उन्नीस-बीस होते रहता है । परन्तु टैन्काक, अनुवाद में यह उन्नीस-बीस के खेल को नहीं स्वीकारते हैं, वे अनुवाद को समान भाषान्तरण की प्रक्रिया मानते हैं । इसमें अनुवादक को अपनी प्रतिभा, अनुभव और कल्पना से काम लेना होता है तथा सुनिश्चित करना होता है कि

अनुदित पाठ प्रभाव के मामले में मूल पाठ जैसा ही बने, जाहिर है कि इसके लिए अनुवादक को कभी-कभी किंचित मूल पाठ के सीमा का अतिक्रमण करना पड़ता है। अनूदित पाठ में कल्पना के सहारे कुछ जोड़ना, रचना होता है। अनुवाद चूँकि सृजन का अनुसृजन है, इसलिए ऐसा करना उचित होता है। इसे एक अन्य उदाहरण में भी समझने का प्रयास करेंगे। जैसे -The time has not ripen to ink nuclear pact. इस अंग्रेजी वाक्य के अनुवाद में ripen और ink शब्दों के सरल अर्थ लेने का कोई तुक नहीं बनता है, परमाणु समझौते के सिलसिले में कुछ कच्चा -पक्का नहीं होता है और नाही ink के अर्थ में स्याही की यहाँ पर कोई अर्थ संगति है। इस कथन का सामान्य अनुवाद इस प्रकार होगा जैसे - "परमाणु समझौते का समय अभी नहीं आया है" और यह रूपांतरण ही मूल कथन के प्रभाव को व्यंजित करता है। इस दृष्टि से अनुवाद में मूल कथन के प्रभाव की व्यंजना महत्वपूर्ण है, ना कि शब्दों के अर्थ और उनका प्रयोग। टैन्काक अपने इस सिद्धांत में एक युक्तिपरक अवधारणा रचते हैं। इसलिए अनुवाद में प्रभाव समता का सिद्धांत महत्वपूर्ण माना जाता है।

४. अनुवाद में सांस्कृतिक संदर्भ के एकीकरण का सिद्धांत:

इस सिद्धांत के प्रस्तोता भाषा वैज्ञानिक फिर्थ, एच. आर. रॉबिंसन और मैक होलिडे और मैं हॉलीडे हैं। इन विद्वानों के अनुसार भाषा में हमेशा समाज तथा जन-जीवन की संस्कृति अभिव्यक्त तो होती ही हैं, साथ ही साथ संरक्षित रहती हैं। हर एक भाषा में संस्कृति अपने ढंग से मुखरित होती हैं। शायद इसीलिए भाषा को संस्कृति का संवाहक कहा जाता है क्योंकि भाषा समाज की होती और संस्कृति को प्रतिबिम्बित करने का साधन होती है। इसीलिए समाज में जैसी संस्कृति होती है, तीज त्यौहार होते हैं, भाषा की शब्द संरचना वैसे ही होती है। इसमें अलंकार, मुहावरे और लोकोक्तियां हर भाषा को खास बनाते हैं| फिर्थ का मानना है कि किसी एक भाषा के सांस्कृतिक कथन का दूसरी भाषा में हु -ब-हु अनुवाद नहीं हो सकता है| अनुवाद के लिए या तो भाव प्रधान हो या फिर आधार बनाना पड़ेगा अथवा व्याख्या का सहारा लेना होगा| ऐसे में किसी एक भाषा के सांस्कृतिक कथन अथवा लोकोक्तियां, मुहावरे का अनुवाद दूसरी भाषा में उसके सांस्कृतिक कथन अथवा लोकोक्ति, मुहावरे के द्वारा ही किया जाता है। अनुवाद के सफल और सटीक होने के लिए ऐसा करना जरूरी होता है अन्यथा अनुवाद अर्थ अंतरण बन जाता है, मूल का प्रभाव उत्पन्न नहीं कर पाता है जैसे to kill birds with one stone, birds of same feather flock together, Herculean task, आदि। स्पष्ट है कि उदाहरण के वाक्य अंग्रेजी के मुहावरे हैं और उनमें अंग्रेजी जीवन और समाज की अभिव्यक्ति है। भारतीय भाषाओं अथवा हिंदी में इनका अनुवाद करते हुए निश्चय ही भारतीय जीवन और समाज के कथन और मुहावरों को अपनाना पड़ेगा अन्यथा अनुवाद निष्फल होगा| अंग्रेजी मुहावरे को भारतीय लोकजीवन में प्रचलित मुहावरे से ही स्थापित करना उचित और सार्थक होगा फिर, रॉबिंसन और मैक हॉलिडे के प्रस्तुत तर्क में अनुवाद की सार्थकता और जीवन में उसकी स्वीकृति की मुख्य चिंता थी| इसलिए उन्होंने सांस्कृतिक कथनों की एकरूपता को अनुवाद के लिए जरूरी माना। अनुवाद में मूल भाषा से सम्बन्धित समाज की संस्कृति को हु -ब-हु नहीं रूपान्तरण कर सकते हैं, लक्ष्य भाषा के समाज और संस्कृति के अनुसार अनुवाद करना ही प्रभावी अनुवाद हो सकता है। इसीलिए साँस्कृतिक संदर्भ के एकीकरण का सिद्धांत इसलिए प्रचलन में आया।

५. अनुवाद में पुनरकोडीकरण का सिद्धांत:

अमेरिका के भाषा वैज्ञानिक विलियम्स फ्राउले ने इस सिद्धांत का प्रतिपादन किया है। उनके अनुसार अनुवाद एक पुनर्स्थापन की प्रक्रिया है | (Translation means recodification). उन्होंने भाषा को, भाषा की समस्त शब्द तथा वाक्य संरचना को अंकीय आधार पर संकेत (Codes) में जोड़ने की अवधारणा प्रस्तुत की । फ्राउले ने इस हेतु कंप्यूटर की कार्य प्रणाली से भाषिक संरचना को जोड़ने का तर्क दिया । इस तरफ से सभी भाषाओं का अंकीय सूत्र निरूपित हो सकता है और आज के युग में हुआ भी है । उन्होंने इस हेतु भाषा की सबसे छोटी इकाई अक्षर को आधार बनाया और अक्षर के अंकीय निर्धारण की बात कही । इससे किसी की भाषा को समस्त अक्षरों, अक्षरों से बने शब्द, पदबंधों, वाक्यों का आंकड़ा (Data) तैयार किया जा सकता है । फ्राउले ने उसे Data Matrix कहा है ।

उनके अनुसार अनुवाद में स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा का अलग-अलग Data Matrix यदि बना लिया जाए तो आंकड़ों या अंकों के माध्यम से, भाषा के शब्दों और उनके अर्थों में समानता, और पर्याय निर्धारण किया जा सकता है और इस तरह से किसी भी भाषा के कथन के कोड को दूसरी भाषा के कोड (code) में रूपांतरण के द्वारा अनुवाद प्राप्त किया जा सकता है । इस सिद्धांत में एक भाषिक कोड के समतुल्य दूसरे भाषिक कोड से मिलाना और उसमें रूपांतरण करना होता है । अर्थात एक भाषा के कोड को दूसरी भाषा के कोड से संबंधित स्थापित कराना और पुनः दूसरे भाषिक कोड की भाषिक संरचना में बदलना ही पुनरकोडीकरण है । इस तरह के अनुवाद में सरलता तो कम होती है परन्तु अधिकतर शाब्दिक सटीकता की संभावना रहती है । कंप्यूटर आधारित मशीनी अनुवाद इस सिद्धांत से परिचालित है । अनुवाद के लिए इस सिद्धांत की प्रासंगिकता से इनकार नहीं किया जा सकता है ।

६. अनुवाद में समतुल्यता का सिद्धांत:

अनुवाद का यह सिद्धांत बहुत महत्वपूर्ण तथा सबसे अधिक प्रचलित है । इस सिद्धांत के प्रणेता प्रसिद्ध भाषा वैज्ञानिक प्रोफेसर जे. सी. कैटफोर्ड (J. C. Catford) और यूजीन (Eusin) ए. नोएडा हैं । अपनी पुस्तक - Linguistic Theory of Translation में किया है। उन्होंने अनुवाद को इस रूप में परिभाषित किया है- “Translation is the textual replacement of textual material in one language (SL) by equivalent textual material in another language (TL), अर्थात अनुवाद स्रोत भाषा की पाठ्य सामग्री का लक्ष्य भाषा के समतुल्य पाठ्य सामग्री द्वारा प्रतिस्थापन है|” उन्होंने Textual material पाठ्य सामग्री और Translation equivalence (अनुवाद समतुल्यता) पदों को स्पष्ट करते हुए तथा भाषा के विभिन्न स्तरों यथा- स्वनिम (स्वर विज्ञान) Phonology, लेखिम (Graphology), व्याकरण और शब्द (grammar and lexis) को महत्व देते हुए भाषा के बाहरी और उसके बारीक स्तरों का वृहत विवेचन किया है। यद्यपि कैटफोर्ड ने अर्थ को गौण नहीं माना है, किंतु उन्होंने भाषा के रूप तत्व (structural forms) को अर्थ की अपेक्षा अधिक महत्व दिया है। इससे अनुवाद की प्रक्रिया को समझने के लिए भाषा वैज्ञानिक आधार मिला है और दो भाषाओं की संरचनाओं के तुलनात्मक अध्ययन तथा

व्यतिरेकी विश्लेषण का मार्ग खुला है किंतु अर्थ गौण हो गया है। इसकी तुलना में नोएडा का चिंतन अधिक व्यापक और गहन सिद्ध हुआ है।

नोएडा ने अपने चिंतन में यह स्वीकार किया कि - "अनुवाद का संबंध स्रोत भाषा के संदेश का पहले अर्थ और फिर शैली के धरातल पर लक्ष्य भाषा में निकटतम, स्वाभाविक तथा तुल्यार्थक (Equivalent) पाठ प्रस्तुत करने से होता है। स्पष्ट है कि कैटफोर्ड जहां पर भी सामग्री के समतुल्य चाहते हैं वही नोएडा पाठ में निहित अर्थ और उसकी शैली के तुल्य उपादान प्रस्तुत करने पर बल देते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि अनुवाद में भाषाओं के अंतर के कारण कथन में समरूपता का निर्वाह नहीं होता है, बल्कि समतुल्यता हो पाती है, परंतु यह समतुल्यता बड़ी विचित्र प्रकृति की होती है।

समतुल्यता का आधार भी एक प्रकार का नहीं होता। अलग-अलग अनुवाद के प्रकारों में यह समतुल्यता अलग-अलग रूप में दिखाई पड़ती है। जैसे- कहीं शाब्दिक समतुल्यता तो कहीं भावगत समतुल्यता, कहीं-कहीं प्रतीकात्मक और शैलीगत समतुल्यता भी अनुवाद में दिखाई देती है। समतुल्यता अनुवाद को कुछ उदाहरणों के साथ समझ सकते हैं जैसे-

- शब्द गत समतुल्यता

  बचत खाता – Saving account

  कला बाज़ार- Black market.

- भावगत समतुल्यता

  ऊँट के मुँह में जीरा- A drop in the ocean.

  आँख का पानी उतर जाना – To become shameless.

- प्रतीकात्मक अनुवाद

  अब तो इस तालाब का पानी बदल दो। ये कमल के फूल अब कुम्हलाने लगे हैं।

  The present system has rotten. It should immediately be changed.

- शैलीगत समतुल्यता

  अध्यक्ष का निर्णय अभी गोपनीय है।

  The Chairperson has kept his card close to his chest.

  मैं सच का खुलासा अभी नहीं करूँगा।

  I will not open secret card soon.

२.४ सारांश

सारांशतः यह कहा जा सकता है कि अनुवाद मूल रचना को अर्थपूर्ण ढंग से लक्ष्य भाषा में अंतरित करने की एक पुनर रचनात्मक प्रक्रिया है । इसमें एक मूल लेखक और एक अनुवादक होता है। एक अनुवादक का नैतिक उत्तरदायित्व होता है कि वह मूल रचना का तत्व हर हाल में बनाये रखे ताकि अनुवाद मात्र भाषान्तर ना प्रतीत हो । आधुनिक तांत्रिक और भूमंडलीकरण के युग में अनुवाद का क्षेत्र बहुत अधिक बढ़ गया है, वैश्विक, साँस्कृतिक, वैज्ञानिक और तांत्रिक एकता स्थापित करने में अनुवाद का महत्व और अधिक बढ़ गया है ।

२.५ लघुत्तरीय प्रश्न

१. अनुवादक की सर्वप्रथम आवश्यकता क्या है?

उत्तर: अनुवादक की सर्वप्रथम आवश्यकताओं में से एक है कि उसे भाषाओं का समुचित ज्ञान हो|

२. अनुवाद अर्थ संप्रेषण का सिद्धांत के प्रेरक कौन है?

उत्तर: अनुवाद अर्थ संप्रेषण का सिद्धांत के प्रेरक डॉ. जॉनसन तथा ए. एच. स्मिथ हैं ।

३. अनुवाद अर्थ संप्रेषण का सिद्धांत के प्रेरक डॉ. जॉनसन तथा ए. एच. स्मिथ किस देश से हैं ।

उत्तर: डॉ. जॉनसन तथा ए. एच. स्मिथ यह दोनों ब्रिटेन के भाषा वैज्ञानिक थे ।

४. कौनसे सिद्धांत में सांस्कृतिक कथनों की एकरूपता को अनुवाद के लिए जरूरी माना?

उत्तर: एकीकरण के सिद्धांत में सांस्कृतिक कथनों की एकरूपता को अनुवाद के लिए जरूरी माना ।

५. अमेरिका के भाषा वैज्ञानिक विलियम्स फ्राउले ने कौनसे सिद्धांत का प्रतिपादन किया है।

उत्तर: अमेरिका के भाषा वैज्ञानिक विलियम्स फ्राउले ने अनुवाद में पुनरकोडीकरण का सिद्धांत का प्रतिपादन किया है।

२.६ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

१. ---------- के अनुसार अनुवाद एक पुनर्स्थापन की प्रक्रिया है । (विलियम्स प्राउले, विलियम्स जॉन, जॉन मैक)

२. टैन्काक ---------- सिद्धांत के प्रणेता हैं । (शैलीगत, समता, पुनरकोडीकरण)।

३. -------- अनुवाद में जन-जीवन की संस्कृति की अभिव्यक्ति है । (साँस्कृतिक, ऐतिहासिक, राजनैतिक)।

२.७ संभावित प्रश्न

१. अनुवाद की अवधारणा को स्पष्ट कीजिए।

२. अनुवाद के सिद्धान्तों को उदाहरण के साथ लिखिए।

२.८ संदर्भ ग्रंथ

१. प्रयोजनमूलक हिन्दी: सिध्दान्त और प्रयोग - दंगल झाल्टे।

२. प्रयोजनमूलक हिन्दी - माधव सोनटक्के।

३. प्रयोजनमूलक हिन्दी - विनोद गोदरे |

*****

३

अनुवाद के प्रकार
भाषायी आधार पर और विषय वस्तु या पाठ प्रकृति के आधार अनुवाद
कार्यालयीन अनुवाद, ज्ञान – विज्ञान परक अनुवाद, विधिक अनुवाद, वाणिज्यिक अनुवाद

इकाई की रुपरेखा

३.१ इकाई का उद्देश्य

३.२ प्रस्तावना

३.३ अनुवाद के प्रकार

३.३.१ भाषायी आधार पर

३.३.१.१ शब्दानुवाद

३.३.१.२ भावानुवाद

३.३.१.३ सारानुवाद

३.३.१.४ छायानुवाद

३.३.१.५ व्याख्यानुवाद

३.३.१.६ रूपांतरण

३.३.१.७ आशु अनुवाद

३.३.२ विषय वस्तु पाठ प्रकृति के आधार पर

३.३.२.१ कार्यालयीन अनुवाद

३.३.२.२ ज्ञान - विज्ञान परक अनुवाद

३.३.२.३ विधिक अनुवाद

३.३.२.४ वाणिज्यिक अनुवाद

३.४ सारांश

३.५ दीर्घोत्तरी प्रश्न

३.६ लघुत्तरी प्रश्न

३.७ संदर्भ ग्रन्थ

३.१ इकाई का उद्देश्य

- उक्त इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी निम्नलिखित मुद्दों से अवगत होंगे |
- अनुवाद के प्रकारों का अध्ययन करेंगे |
- भाषायी आधार पर अनुवाद के विभिन्न प्रकारों के विषय में जानेंगे| इसके अंतर्गत विद्यार्थी प्रमुखतः शब्दानुवाद,सारानुवाद, छायानुवाद, व्याख्यानुवाद, रूपांतरण, आशु अनुवाद आदि का विस्तृत अध्ययन करेंगे |
- विषय वस्तु व पाठ प्रकृति के आधार पर अनुवाद के विभिन्न प्रकारों के विषय में जानेंगे| इसके अंतर्गत विद्यार्थी प्रमुखतः कार्यालयीन अनुवाद, ज्ञान - विज्ञान परक अनुवाद, विधिक अनुवाद, वाणिज्यिक अनुवाद आदि का विस्तृत अध्ययन करेंगे |

३.२ प्रस्तावना

अनुवाद एक ऐसा विषय बन गया है| जो सर्वव्यापी हो गया है| आज हर एक क्षेत्र में अनुवाद की आवश्यकता है | आज प्रत्येक क्षेत्र छोटा हो या बढ़ा तकनीकी और जनसंचार माध्यमों के सहयोग से उन्नति की और अग्रसर होता है| यदि वह अपने कार्य के विस्तार हेतु जिस परिधि में है उसे लांघता है तो उसे अनुवाद की आवश्यकता होती है क्योंकि दुसरे परिसर वह राज्य हो या परदेश उसे वहाँ सबसे बड़ी कठिनाई भाषा की होगी ऐसे में उस क्षेत्र की उन्नति का मूल अनुवाद पर टिका हुआ होता है|

३.३ अनुवाद के प्रकार

अनुवाद के प्रकारों का जब हम अध्ययन करते हैं तो पहला प्रश्न यह उठता है कि अनुवाद के प्रकार या भेद को किन आधारों पर विभाजित किया जाए क्योंकि अनुवाद के विभिन्न पक्षों के अध्ययन के आधार पर पाश्चात्य और भारतीय विद्वान ने अनुवाद को अलग-अलग भागों में विभाजित किया है | सर्वप्रथम पाश्चात्य विद्वानों की बात करें तो इनमें प्रमुखतः नाम आता है - रोमन जैकब्सन और जॉन ड्राइजन का इन दोनों ने अनुवाद को तीन भागों में विभाजित किया है | यदि भारतीय विद्वानों की बात करें तो भोलानाथ तिवारी और सुदेश कुमार का नाम आता है | इन्होंने भी अपने शोध अध्ययन के आधार पर अनुवाद को अलग-अलग प्रकार बताए हैं हम सभी विद्वानों के इस विषय में विश्लेषण देखें तो इस आधार पर अनुवाद के प्रकारों को हम तीन आधारों पर विभाजित कर सकते है यह आधार है -

१. भाषायी आधार पर

२. विषय वस्तु पाठ प्रकृति के आधार पर

३. अन्य प्रकार

यहाँ हम पहले दो प्रकारों का अध्ययन करेंगे |

३.३.१ भाषायी आधार पर:

अनुवाद सामान्यतः भाषिक प्रक्रिया है क्योंकि एक भाषा में कही गई या लिखी गई बात को हम दूसरी भाषा में अनुवाद करते हैं | स्रोत भाषा का लक्ष्य भाषा में अनुवाद कर देना वह भी उसके अर्थ में कोई परिवर्तन किए बिना इसे हम अनुवाद की भाषिक प्रक्रिया कहते हैं | भाषिक प्रक्रिया के अंतर्गत अनुवाद को सामान्यतः सात भागों में विभाजित किया है | शब्दानुवाद,सारानुवाद, छायानुवाद, व्याख्यानुवाद, रूपांतरण, आशु अनुवाद|

३.३.१.१ शब्दानुवाद:

शब्दानुवाद को अविकल अनुवाद, लिटरल अनुवाद, वर्ड फारवर्ड अनुवाद भी कहा जाता है| जैसा कि नाम से ही प्रतीत होता है कि एक शब्द का जो अर्थ होता है उसे ज्यों का त्यों रखना उसमे कोई परिवर्तन किये बिना उसी शब्द का अनुवाद कर देना शब्दानुवाद कहलाता है| इस प्रकार के अनुवाद में न आप कुछ घटा सकते हैं न आप कुछ बढ़ा सकते हैं अर्थात शब्द के शब्दशः अनुवाद को शब्दानुवाद कहेंगे | पर्याय यह है कि स्रोत भाषा में कही गई बात को शब्दशः अर्थात एक-एक शब्द का अनुवाद लक्ष्य भाषा में कर दिया जाता है उसे हम शब्दानुवाद कहते हैं | शब्दानुवाद की आवश्यकता ज्ञान परक विषयों में अधिकांशतः होती है - जैसे ज्योतिष शास्त्र में, विज्ञान के क्षेत्र में, कानून विषय में, शब्दानुवाद का प्रयोग अधिक होता है |

शब्दानुवाद की समस्या:

शब्दानुवाद की ओर हमारा ध्यान इंगित करें तो इसे करते समय कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है | इस प्रकार के अनुवाद में भाव और विषय वस्तु की अपेक्षा शब्द पर अधिक ध्यान दिया जाता है | इस कारण से कई बार यह अनुवाद बहुत जटिल भी हो जाता है | और कभी-कभी बहुत हास्यास्पद भी हो जाता है | उदाहरण के लिए अंग्रेजी में एक वाक्य है – Cheak has been passed यदि इस वाक्य का शब्दशः अनुवाद हिंदी भाषा में करे तो इस प्रकार होगा - चेक उत्तीर्ण हो गया | जो कि हिन्दी भाषा में तर्क संगत नहीं है |

जैसे उदहारण के लिए अंग्रेजी में हायर मैनेजर हिंदी में उच्च प्रबंधन और अंग्रेजी में लोअर मैनेजर हिंदी में नीच्च प्रबंधन होगा | नीच्च प्रबंधन ना सुनने में अच्छा लगता है और नहीं अनुवाद के तौर पर सही है | तो इस प्रकार की जटिल समस्या शब्दानुवाद की होती है | क्योंकि एक भाषा के शब्द के अलग-अलग अर्थ निकलते हैं | जैसे आम - आम फल भी है और आम का अर्थ सामान्य भी है जब अनुवादक को शब्दानुवाद करना है तो वह बिना उस शब्द के अर्थ को समझे जाने बगैर लक्ष्य भाषा में बदलना अनुवाद को कठिनाई पूर्ण बना देगा और अपने मूल अर्थ से भटक जाएगा| शब्दानुवाद में प्रमुख समस्या मुहावरे और लोकोक्तियां का अनुवाद करते समय आती है | क्योकि मुहावरे लोकोक्तियों का सम्बन्ध क्षेत्र विशेष से होता है उनकी परम्परा,भावना, रुढियों से जुडा होता है | ऐसे में शब्दशः अनुवाद अर्थ का अनर्थ कर सकता है |

३.३.१.२ भावानुवाद:

जैसा कि नाम से ही ज्ञात होता है कि जो मूल पाठ की रचना या सामग्री है उसके भाव, संवेदना या उसकी विषय वस्तु पर अधिक ध्यान दिया जाता है और इस तरह के अनुवाद को हम उच्च कोटि का अनुवाद मानते हैं क्योंकि भावानुवाद अपने आप में कृति होती है | भावानुवाद करते समय अनुवादक को जो मूल पाठ है उसकी मूल संवेदना विषय वस्तु को समझता है और फिर उसके अनुसार उस विषय का लक्ष्य भाषा में अनुवाद करता है | भावानुवाद में यह बात महत्वपूर्ण है कि इसमें साहित्यिक विधाओं का अनुवाद होता है| क्योंकि ज्यादातर भाव जो है उनका संबंध साहित्य से है | साहित्य मानव के मस्तिष्क और मन में उद्वेलित भावों से प्रेरित है| इस प्रकार भावानुवाद करते हुए अनुवादक को यह छूट होती है कि स्रोत भाषा में प्रयोग किए गए जो शब्द है उन शब्दों का जो अर्थ निकलता है उसी को ठीक ढंग से प्रस्तुत करने के लिए जो लक्ष्य भाषा में जो शब्द प्रयोग किए जाएं या वाक्य प्रयोग किए जाएं इसकी पूरी छूट अनुवादक को होती है| इस प्रकार हम कह सकते हैं कि स्रोत भाषा की संवेदना या विषय वस्तु को लक्ष्य भाषा की संवेदना या विषय वस्तु में बदलना ही भावानुवाद का प्रमुख लक्ष्य है यह कार्य यदि अनुवादक कुशलता से भावानुवाद करता है तो वह अनुवाद उच्च कोटि का होता है|

भावानुवाद की समस्या:

भावानुवाद की प्रक्रिया में यदि मूल रचना का विचार या विषय वस्तु या उसकी संवेदना ठीक ढंग से लक्ष्य भाषा में संप्रेषित न हो तो वह भावानुवाद अच्छा नहीं माना जाता है| इसीलिए इस प्रकार के अनुवाद में अनुवादक को बहुत ही कुशलता और गंभीरता की आवश्यकता होती है| उदाहरण के लिए – पाउलो को एल्हो की रचना है 'अल्केमिस्ट' इसका अनुवाद कमलेश्वर ने किया है 'कीमियागर' नाम से अर्थात साधारण धातु को सोने में बदलने की कला जानने वाला | कमलेश्वर की यह अनुवादित रचना बहुत प्रसिद्ध हुई क्योंकि जो पाउलो को एल्हो की मूल रचना है 'अल्केमिस्ट' पढ़कर ऐसा लगता है कि ठीक उसी की संवेदना उसी की भाव अनुभूति, वही विचार और वही विषय वस्तु कमलेश्वर ने हिंदी भाषा में उतार दिए हैं | भावानुवाद एक कठिन कार्य है इसके लिए धैर्य, श्रम, सूझबूझ की आवश्यकता होती है| इस श्रेणी में कई उदाहरण आ सकते हैं जो गीत और कविताओं और अन्य साहित्य विधा में देखने को मिलते हैं|

३.३.१.३ सारानुवाद:

जैसा कि नाम से ही अनुभूति हो जाती है कि सार तत्व का अनुवाद सारानुवाद कहलाता है | उदाहरण के तौर पर हम देखें तो कोई नाटक, कहानी, उपन्यास से उसके सार तत्व को निचोड़ करके उसका अनुवाद होता है| वह सारानुवाद कहलाता है सारानुवाद अत्यंत संक्षिप्त और सरल होता है| जैसे कि मान ले हमने ३ घंटे की फिल्म देखी और किसी को हमें उस फिल्म के बारे में बताना है तो ३ घंटे देखी गई फिल्म की कहानी हम १५ से २० मिनट में बता देंगे क्योंकि हम उन १५ से २० मिनट में उसे ३ घंटे की फिल्म के मुख्य पात्र, मुख्य घटनाओं का कहानी में कहां-कहां महत्वपूर्ण मोड़ आया है इन्हीं बातों का जिक्र करेंगे यही सारानुवाद में होता है | लंबे भाषणों का अनुवाद भी सारानुवाद की प्रक्रिया के अंतर्गत ही होता है |

सारानुवाद की समस्या:

सारानुवाद करते समय अनुवादक को यह ध्यान रखना चाहिए कि जो मूल कृति है उसकी मुख्य घटनाओं को और पूरे परिवेश का सार निकाल सके| इसके लिए आवश्यक है कि अनुवादक मूल कृति को ध्यान से पड़े और बार-बार पड़े| इस प्रकार हम कह सकते हैं कि मूल कृति के सार को निकालना और उस सार तत्वों का अनुवाद लक्ष्य भाषा में करना सारानुवाद कहलाता है|

३.३.१.४ छायानुवाद:

छायानुवाद में अनुवादक मूल कृति की छाया को ग्रहण करता है अर्थात उसे मुल कृति की विषय वस्तु को, परिवेश को लक्ष्य भाषा की विषय वस्तु और परिवेश में बदल देता है | इसीलिए छायावाद को मूल मुक्त अनुवाद भी कहा जाता है | मूल मुक्त अनुवाद से तात्पर्य है कि मूल कृति या रचना में जो संस्कृतिक पक्ष और परिवेश आता है वह सांस्कृतिक पक्ष और परिवेश लक्ष्य भाषा के सांस्कृतिक पक्ष और परिवेश में बदल जाते हैं | उदाहरण के लिए माना कि अंग्रेजी रचना में जैक्सन नाम का पात्र है और अनुवादक हिंदी में यदि अनुवाद करेगा तो जैक्सन नाम का जय किशन या जयंत नाम या उससे मिलता जुलता कोई नाम रख सकता है | इस प्रकार अनुवादक ने स्रोत कृति कहीं और से ली और उसे अपने परिवेश के अनुसार बदल दिया | इसीलिए छायानुवाद में मूल रचना की संस्कृति परिवेश को अनुवादक अपनी भाषा संस्कृति और परिवेश से जोड़ देता है| इस प्रकार इसमें मूल कृति से छाया ग्रहण करें और उसे बदलकर एक नई कृति का रूप दे देता है |यही छाया अनुवाद है|

३.३.१.५ व्याख्या अनुवाद:

इस प्रक्रिया में अनुवादक मूल कृति का अनुवाद करते हुए उसकी व्याख्या भी करता जाता है| इसमें अनुवादक का लक्ष्य सिर्फ अनुवाद करना नहीं होता है वरन उसका विस्तार भी करना होता है | जैसे संस्कृत का कोई श्लोक है या कोई संस्कृत साहित्य है तो अनुवादक उसका हिंदी में अनुवाद करता है तो हिंदी में संस्कृत का अनुवाद आसानी से समझ में आ सके इसीलिए उसकी व्याख्या भी करता जाता है| इसमें अनुवादक उदाहरण, संदर्भ, शब्द के अर्थ आदि स्पष्ट करता है और सभी मुद्दों का ठीक ढंग से वर्णन करता है इस प्रकार इसमें जो लक्ष्य भाषा में अनुवाद होता है वह मूल रचना से बड़ा होता है| क्योंकि इसमें अनुवाद के साथ-साथ मूल सामग्री की व्याख्या भी हो रही है | उदाहरण के लिए लोकमान्य तिलक ने श्रीमद् भागवत गीता का अनुवाद व्याख्या अनुवाद शैली में ही किया है|

३.३.१.६ रूपांतरण:

इसका तात्पर्य है रूप बदल देना यदि अनुवादक कोई कहानी अनुवाद कर रहा है लेकिन कहानी नहीं नाटक के रूप में कर रहा है तो वह अनुवाद रूपांतरण के अंतर्गत आता है| रूपांतरण अनुवाद में विधा बदल जाती है| साथ ही साथ अनुवादक मूल रचना के परिवेश को अपनी जिस भाषा में अनुवाद कर रहा है उसे उस परिवेश में बदल देता है इस प्रकार अनुवादक लक्ष्य भाषा में मूल रचना को डाल देता है | विलियम शेक्सपियर का नाटक ‘मर्चेंट ऑफ वेनिस’ इसका अनुवाद भारतेंदु हरिश्चंद्र ने किया| जिसका नाम रखा ‘दुर्लभ बंधु’

अर्थात वंशपुर का महाजन यह भारतेंदु जी की प्रसिद्ध अनुवादित कृति रही और साहित्य जगत में यह नाटक बहुत प्रसिद्द रहा |

३.३.१.७ आशु अनुवाद:

आशु का अर्थ होता है शीघ्र अनुवाद इसे वार्ता अनुवाद भी कहा जाता है |अधिकांश इस प्रकार के अनुवाद भाषांतरण की प्रक्रिया में प्रयोग किये जाते है| तुरंत अनुवाद की प्रक्रिया को भी आशु अनुवाद कहा जाता है जैसे एक व्यक्ति अंग्रेजी भाषा का जानकार है और दूसरा व्यक्ति हिंदी भाषा का जानकार है परंतु यह दोनों व्यक्ति एक दूसरे की भाषा नहीं जानते और नहीं समझ सकते हैं ऐसे में एक तीसरा व्यक्ति है जो हिंदी भी जानता है और अंग्रेजी भी और वही व्यक्ति इन दोनों को अर्थात अंग्रेजी बोलने वाले को हिंदी की जानकारी देगा और हिंदी बोलने वाले को अंग्रेजी की जानकारी देगा | यह अनुवाद शीघ्र और मौखिक रूप में ही अधिकांशतः होता है इसीलिए इसे आशु अनुवाद कहते हैं | दो देश के राष्ट्र नेताओं के बीच द्विभाषीय द्वारा बातचीत होती है यह भी आशु अनुवाद के अंतर्गत आता है |

३.३.२ विषय वस्तु या पाठ प्रकृति के आधार पर अनुवाद:

विषय वस्तु या पाठ प्रकृति के आधार पर हम अनुवाद को विभिन्न रूपों में विभाजित कर सकते हैं | साहित्यिक अनुवाद, विज्ञान अनुवाद, विधिक अनुवाद, वाणिज्यिक अनुवाद, कार्यालयीन अनुवाद आदि पर इस प्रकार विभिन्न क्षेत्रों और विषय पर आधारित अनुवाद विषय वस्तु के आधार पर आते हैं|

३.३.२.१ कार्यालयीन अनुवाद:

कार्यालय को सामान्य बोलचाल की भाषा में दफ्तर या ऑफिस कहते हैं| कार्यालय निजी भी होते हैं और सरकारी भी| लेकिन इस अध्ययन के तहत सरकारी कार्यालय की हम बात कर रहे हैं| कार्यालयीन कामकाज के लिए अनुवाद की आवश्यकता होती है| भारत जैसे देश में एक से अधिक भाषाएं बोली जाती हैं इसीलिए कार्यालय में अनुवाद की आवश्यकता और अधिक बढ़ जाती है| भारत देश में हिंदी के अतिरिक्त अन्य मान्यता प्राप्त भाषाओं को भी राजभाषा का दर्जा प्राप्त है |

कार्यालयीन भाषा:

कार्यालय में कामकाज के लिए जिस भाषा का प्रयोग किया जाता है उस भाषा को कार्यालयीन भाषा कहते हैं| कार्यालयीन भाषा उस प्रदेश या देश की राजभाषा होती है| यह भाषा सरकार मान्य होती है| उसी भाषा में कामकाज करने के निर्देश होते हैं| उसे कार्यालय भाषा कहा जाता है| अंग्रेजी में इसे ऑफिशियल लैंग्वेज कहते हैं| कार्यालयीन अनुवाद की आवश्यकता उन देशों में अधिक होती है जहां एक से अधिक राजभाषा होती है और एक से अधिक भाषा जानकारों की संख्या अधिक होती है या संबंधित भाषा की जानकारी न होने के कारण अनुवाद की आवश्यकता पड़ती है| कार्यालयीन आदेशों से अवगत कराने के लिए मूल भाषा न जानने वालों के लिए उक्त संदेश या जानकारी पहुंच सके इसीलिए अनुवाद किया जाता है| आदेश या कार्यवाही की जानकारी संबंधितो तक पहुंचाने के लिए कार्यालय अनुवाद की आवश्यकता होती है।

कार्यालय में अनुवाद के लिए स्रोत सामग्री:

कार्यालय में अनुवाद के लिए विभिन्न प्रकार की स्रोत सामग्री होती है| संवैधानिक दस्तावेज, तकनीकी दस्तावेज, दैनिक कामकाज की सामग्री, आदि का अनुवाद कार्यालय अनुवाद कहा जाता है| कार्यालय अनुवाद में स्रोत सामग्री में कार्यालय ज्ञापन, अनुस्मारक, कार्यालय आदेश, अधिसूचना, परिपत्र, आदेश, विज्ञप्ति, सूचना, प्रशासन, मंजूरी पत्र, प्राप्ति सरकारी पत्र, अर्ध सरकारी पत्र, नोटिस, टिप्पणी, निविदा, प्रशासनिक रिपोर्ट, केंद्र राज्य के बीच के पत्राचार, विज्ञापन, वार्षिक लेनदेन, विवरण आदि विभिन्न प्रकार की सरकारी, अर्ध सरकारी दस्तावेज आदि का समावेश कार्यालयीन अनुवाद की स्रोत सामग्री के रूप में होता है |

कार्यालयीन अनुवाद का महत्व:

सरकारी कामकाज देश की बहुसंख्य जनता की भाषा में होने चाहिए| सरकार को जन भाषा में अपना काम करना चाहिए| इसीलिए किसी भी देश की कार्यालयीन भाषा उस देश के लोगों की भाषा होती है| इसलिए जनता का काम जनता की ही भाषा में संपन्न किया जाए तो उसे जनानुकूल भाषा कहा जाएगा।

भारत में एक से अधिक भाषाओं में कार्यालयीन कामकाज संपन्न होता है| केंद्रीय कार्यालय में हिंदी के साथ-साथ अंग्रेजी तथा विभिन्न राज्यों के कार्यालय में हिंदी, अंग्रेजी या उस राज्य की प्रादेशिक भाषा में कार्यालयीन कामकाज संपन्न होता है| केवल भाषायी कारण से कार्यालयीन कामकाज में किसी भी प्रकार की रुकावट ना आए| इसी कारण विभिन्न कार्यालयीन सामग्री का अनुवाद किया जाता है| कार्यालयीन कामकाज में अनुवाद संपन्न करते समय भाषायी समस्या से छुटकारा पाने के लिए कार्यालयीन सामग्री को अनूदित कर प्रस्तुत किया जाता है| ताकि जिसके लिए यह सामग्री बनाई गई है उन तक पहुंच सके उन्हें समझ आ सके| प्रत्येक व्यक्ति को कार्यालय के आदेश का या दो कार्यकर्ताओं के बीच आपसी पत्राचार को समझने के लिए अनुदित पत्राचार का सहारा लिया जाता है| इसलिए सामग्री का अनुवाद कर उसे प्रस्तुत किया जाता है| कार्यालय कामकाज को सुचारू बनाने के लिए अनुवाद ही आधार बनता है| इसीलिए कार्यालयीन अनुवाद की आवश्यकता होती है।

कार्यालयीन अनुवाद की समस्याएं:

१. **एक शब्द के लिए अनेक पर्याय:** कार्यालयीन अनुवाद करते समय अनुवादक के सामने एक शब्द के अनेक पर्यायवाची शब्द होते हैं| इस कारण अनुवाद के समक्ष यह समस्या होती है कि अनुवाद के लिए कौन सा पर्याय शब्द चुने।

२. **अनुवादकों की कमी :** कार्यालय में अनुवाद राजभाषा अधिकारी या अनुवादक द्वारा संपन्न होता है कभी-कभी भाषायी विशेष ज्ञान होने पर यह अनुवाद कार्यालय कर्मचारियों द्वारा भी कर दिया जाता है| लेकिन प्रत्येक विभाग में ऐसा व्यक्ति हो यह जरूरी नहीं है और हर एक कार्यालय में राजभाषा अधिकारी और अनुवादक के पदों को बहुत कम मात्रा में भरा जाता है।

३. **भाषा की संरचना:** प्रत्येक भाषा की संरचना उसका व्याकरणिक पक्ष अलग-अलग होता है| ऐसे में अनुवाद ऐसा हो कि स्रोत और लक्ष्य दोनों भाषाओं पर उसका समान प्रभुत्व रहे तभी अनुवाद न्याय पूर्ण तरीके से हो सकेगा।

४. **पारिभाषिक शब्दावली की कमी:** विश्व में ज्ञान की जितनी भी शाखाएं हैं उन शाखाओं के पारिभाषिक शब्द विश्व की अनेक भाषाओं में बनाने का काम जारी है लेकिन नए-नए संकेत, संदर्भ आविष्कार आदि के लिए तत्काल पारिभाषिक शब्द नहीं मिलता है| परिणामतः अलग-अलग अनुवादकों द्वारा अलग-अलग शब्दों का प्रयोग कर अनुवाद किया जाता है| इससे शब्दों में समानता नहीं रह पाती ।

कार्यालयीन इन अनुवादकों के लिए प्रशिक्षण केंद्रों की आवश्यकता:

विभिन्न विश्वविद्यालय में हम देख रहे हैं कि अनुवाद विषय विशेष तौर से पाठ्यक्रम में शामिल किया जा रहा है| लेकिन जितनी मात्रा में अनुवाद प्रशिक्षण केंद्र होना चाहिए उतने प्रशिक्षण केंद्र नहीं है| इस कारण से इस विषय की विस्तार से जानकारी होने का अभाव है यह समस्या समय के साथ और भी जटिल होती जा रही है|

कार्यालयीन अनुवाद कैसे सुचारू बने:

- कार्यालय में अनुवाद के लिए कार्यालय पारिभाषिक शब्दकोषों को अधिक से अधिक समृद्ध किया जाए|
- कार्यालयीन अनुवाद के लिए प्रशिक्षित अनुवादकों की उपलब्धता कार्यालयीन अनुवाद की समस्या को दूर कर सकती है।
- अधिक से अधिक पारिभाषिक शब्दों का निर्माण कर कार्यालय शब्दकोषों को अद्ययावत रखा जा सकता है|
- कार्यालयीन अनुवाद में सरल सहज शब्दों का प्रयोग करना चाहिए| जटिल शब्द मुहावरों से बचकर सरल, सीधा अर्थ देने वाले शब्द का प्रयोग कार्यालयीन अनुवाद के लिए आवश्यक है|

इस प्रकार कार्यालयों के पत्राचार को अनूदित कर अग्रेषित करने से कार्यालयीन तत्परता बढ़ती है| इस प्रकार कार्यालय में अनुवाद के कारण अन्य भाषिक लोगों के लिए पत्र के आशय को समझना तथा उसके अनुरूप क्रियान्वयन करना आसान हो जाता है।

३.३.२.२ ज्ञान - विज्ञान परक अनुवाद:

ज्ञान - विज्ञान परक अनुवाद:

वैज्ञानिक अनुवाद में विज्ञान के बारे में किसी भी प्रकार के लेखन का गूढ़ रहस्य शामिल है| इसके लिए विषय के ज्ञान की आवश्यकता होती है| इस अनुवाद के लिए स्रोत और लक्ष्य भाषा के विस्तृत ज्ञान के साथ सटीकता,सावधानी की आवश्यकता है| क्योंकि विज्ञान अनुवाद में तकनीकी शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

विज्ञान परक अनुवाद की समस्याएं:

१. सटीकता:

अनुवाद प्रक्रिया के दौरान अनुवादकों की सबसे बड़ी बाधा इसकी सटीकता की है| सभी व्यावहारिक उद्देश्यों के लिए विस्तृत तथ्यों, आंकड़ों और निष्कर्ष को प्रस्तुत करने के लिए सभी तकनीकी शब्दों पर सावधानी पूर्वक विचार होना जरूरी है।

२. रीफ्रेमिंग और रीकास्टिंग :

मूल दस्तावेज के व्याख्या किए गए संस्करण को पाठकों के लिए व्यावहारिक होना चाहिए| तकनीकी अनुवाद की एक अत्यंत आवश्यक विशेषता यह है कि प्रक्रिया के एक बड़े हिस्से को बयानों और तथ्यों को फिर से तैयार करने की आवश्यकता होती है।

३. संख्या और सांख्यिकी:

और तकनीकी अनुवाद को पेशेवर रूप में संभालने की आवश्यकता है| पुनर्गठित वाक्य के बावजूद अनुवादित पाठ के संदर्भ को बनाए रखा जाना चाहिए| इसके अतिरिक्त कथनों की रिफ्रेशिंग के समान संख्याओं और आंकड़ों का उपयोग करना भी वैज्ञानिक और तकनीकी अनुवादों की एक आंतरिक विशेषता है| इसी तरह वैज्ञानिक और तकनीकी दोनों अनुवादों के संख्यात्मक कार्य के लिए सटीक आंकड़ों की आवश्यकता होती है।

४. नई शर्तें बनाने की आवश्यकता:

नई शर्तें बनाने की आवश्यकता एक और जटिलता है| जो वैज्ञानिक और तकनीकी अनुवादों को अलग करती है| अनुवादक संदर्भ की पारदर्शिता को बढ़ाने के लिए विशिष्ट शब्दावली का प्रयोग करता है| इसमें विषय की पृष्ठभूमि का ज्ञान आवश्यक है ऐसा न होने पर नई शब्दावली के प्रयोग से अनुवाद पेचीदा बना सकता है।

५. सांस्कृतिक महत्व:

वैज्ञानिक अनुवाद जैसे जटिल अनुवाद में हम संस्कृतिक बारीकियों की अपेक्षा नहीं कर सकते | पूर्णतः संस्कृतिक विवरण से बचना समान कार्य की गुणवत्ता के लिए हानिकारक हो सकता है| जैसे किसी औषधि में कुछ ऐसी चीज मिली हो जो व्यक्ति विशेष की संस्कृति के खिलाफ हो तो वह उस औषधि की उपेक्षा अवश्य करेगा इसीलिए आवश्यक है कि विज्ञान के अनुवाद में संस्कृतिक तत्व भी शामिल हो|

३.३.२.३ विधिक अनुवाद:

विधिक अनुवाद में एक भाषा की विधि सम्बन्धी या क़ानूनी दस्तावेज का दूसरी भाषा में अनुवाद किया जाता है | इसके अंतर्गत कानून की किताबे, अदालत के मुकदमे, तत्सम्बन्धी विभिन्न आवेदन पत्र, क़ानूनी संहिताएँ, नियम – अधिनियम, संशोधित अधिनियम आदि सामग्री का समावेश होता है | इस प्रकार के अनुवाद में प्रत्येक शब्द विशेष महत्व रखता है| यहाँ भावार्थ की कोई महत्ता नहीं होती है | एक शब्द का एक ही अर्थ हो वह भी स्पष्ट हो | इस प्रकार के अनुवाद की भाषा पुर्णतः तकनीकि होती है |

विधिक अनुवाद की आवश्यकता:

न्याय व्यवस्था में विश्वास बनाये रखने के लिए, जनता को उसकी अपनी भाषा में न्याय प्रणाली समझ सके इसलिए विधिक अनुवाद आवश्यक है | उदहारण के लिए भारत में अंग्रेजी शासन में सभी क़ानूनी सामग्री अंग्रेजी भाषा में थी | उस समय काल में सर्व प्रथम सन १७९७ ई. में ब्रिटिश पार्लियामेंट ने यह जाहिर किया कि भारत में विधि सम्बन्धी दस्तावेज हिंदी भाषा में प्रकाशित हो|

विधिक भाषा सरल, स्पष्ट, अभिधार्थ परक तथा पारदर्शक आदि विशेषताओं से पूरित हो| विधि भाषा के सम्बन्ध में राजभाषा आयोग ने कहा है : कानून की भाषा सुनिश्चित, संक्षिप्त और सुस्पष्ट होनी चाहिए|

विधिक अनुवाद के अंतर्गत संसदीय प्रश्नोत्तरी, विधेयक, अधिनियम आदि आते है| इनका अनुवाद सटीक और प्रविधिक होना चाहिए तथा भाषा में सुनिश्चितता एकार्थता और स्पष्टता होनी चाहिए | विधिक अनुवाद में हमें शब्दों का चयन विधायी आयोग की विधि शब्दावली से ही करना चाहिए |

शब्दावली में आए शब्द कही कहीं अति संस्कृत निष्ठ होने से जटिल हो जाते है| परन्तु विधि में जटिलता को गुण के रूप में स्वीकार किया जाता है| अतः इसका अनुवाद भी जटिल रूप में ही हमारे सामने आता है| लेकिन फिर भी अनुवाद में हमे अपेक्षाकृत सरल भाषा को प्रयोग में लाने की कोशिश होती है?

विधिक अनुवाद का सबसे महत्वपूर्ण अंग अधिनियमों का अनुवाद है| अधिनियमों के अनुवाद में सबसे पहले यह देखते है कि जो अंग्रेजी में अधिनियम का अर्थ है हिंदी में अनुवाद करते समय उसका वही अर्थ निकलना चाहिए अर्थात स्त्रोत भाषा में जो कुछ कहा गया है लक्ष्य भाषा में भी वही अर्थ हो उससे न कम हो और न ज्यादा हो

३.३.२.४ वाणिज्यिक अनुवाद:

आज के समय में अनुवाद एक स्वतंत्र विधा के साथ साथ एक अनुसन्धान के रूप में भी विकसित हुआ है| इसी कारण अनुवाद अध्ययन अध्यापन का विषय बन गया है और अनुवाद सिर्फ साहित्य तक ही सीमित नहीं है | अनुवाद का कार्य सभी क्षेत्रों में हो रहा है| अनुवाद के आने से विकास के कई आयाम खुले, कई सम्भावनाएँ बनी ऐसे क्षेत्रों में वाणिज्य भी एक क्षेत्र है | आज का युग वित्त वाणिज्य और बैंकिंग का युग है | उक्त सभी क्षेत्रो की सामग्री को हम वाणिज्यिक सामग्री कहते है | वाणिज्य का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आदान – प्रदान, आयत – निर्यात, बाजार वादी संस्कृति के साथ उद्योग, उत्पाद, प्रौद्धौगिक व्यापार, व्यवसाय आदि अनेक क्षेत्र है जिसमें राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापार की आवश्यकता है| क्योंकि इन सभी क्षेत्रों को सीमित दायरे में रखना प्रगति का अवरोधक माना जायगा क्योंकि इन क्षेत्रों की प्रगति सिर्फ व्यक्ति विशेष तक ही सीमित नहीं है वरन देश के विकाश के साथ भी जुड़ी है | ऐसे में अनुवाद के माध्यम से अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक विकास की सोच के साथ आगे बढने में आसानी होगी |

वाणिज्यिक अनुवाद आवश्यकता और चुनौतियाँ:

१. कोई भी देश वह विकासशील हो या विकसित उसकी वाणिज्य विषयक गतिविधियों की जानकारी उसकी अपनी भाषा में होना अत्यंत आवश्यक है | और यह मौलिक लेखन द्वारा और दूसरा पर्याय अनुवाद द्वारा ही सम्भव है|

२. किसी भी उद्योगी, व्यापारी, कारोबारी को अपने कार्य क्षेत्र के विस्तार के लिए स्थलों से सम्पर्क करना आवश्यक है | फिर वह दूसरा क्षेत्र हो,राज्य हो या देश - विदेश हो | ऐसे में उसके सम्पर्क का सबसे अनुकूल माध्यम अनुवाद ही है|

३. आज भारत में राजभाषा हिंदी द्विभाषीकरण का प्रावधान है ऐसे में व्यसायिक गतिविधियों के लिए लेंन देन या क्रय विक्रय के लिए और अधिक सम्भावनाएँ उद्घाटित हो जाती है|

४. आज के समय में अनुवाद अनुवादको द्वारा ही नहीं मशीन और साफ्टवेयर,कम्पनीयों व अनेक एजेंसियों द्वारा भी हो रहे है | ऐसे में वाणिज्य क्षेत्र में विकास को गति मिली है|

५. वाणिज्यिक विस्तार एवं सहयोग हेतु अनेक देशों ने मिलकर कई संगठन बनाये है| जिसमें सार्क देश,सोवियत संगठन, जी ८, जी १६, जी २० आदि प्रमुख है | इन संगठनो का उद्देश्य ही आर्थिक मजबूती के साथ, व्यापार के विकास, समृद्धि को अग्रसर करना है|

६. social economics zone (SEZ) :- जैसे संगठन भी इस क्षेत्र में कार्य कर रहे है | इनमे अनुवादक की भूमिका महत्वपूर्ण है| साथ ही अनेक अनुवाद एजेंसियाँ भी प्रत्यक्ष या आँनलाइन सेवा द्वारा अनुवाद कार्य में मदद कर रही है |

७. वाणिज्य क्षेत्र में समय समय पर नीति, योजना नियमों में परिवर्तन होता रहता है | नये नये दस्तावेज बनाने पड़ते है, नये प्रस्ताव बनते है | ग्राहकों, वितरकों और एजेंटों के पत्रों, कागजातों, अनुबंधों को तैयार करना परिस्तिथिनुसार उनका अनुवाद करने का सिलसिला जारी रहता है |

८. वाणिज्यिक सामग्री के अनुवाद में भी भावबोध होना जरुरी है | सीधा शाब्दिक अनुवाद पाठक को कठिनाई में डाल सकता है | क्योंकि प्रत्येक शब्द का सटीक अर्थ लिया जाए यह जरुरी नहीं होता है |

९. वाणिज्यिक सामग्री में अनुवाद सिर्फ शब्दों का नहीं होता इसमें तथ्यों, आंकड़ो, अंको का विशेष ध्यान रखा जाता है | इसीलिए जरुरी है कि मूल सामग्री को ध्यान से पढ़ा जाए और अनुवाद करते समय पूरी कोशिश हो कि भाषा बोधगम्य बनी रहे|

१०. अनुवादक को शब्दचयन के साथ सटीक, सार्थक एवं विषयानुकूल शब्द ही चुनना चाहिए | कई शब्दों के पर्यायवाची शब्द होते है ऐसे में संदर्भ, स्थिति के अनुसार शब्द का चयन करे |

११. वाणिज्य में अर्थशास्त्र, संगणकशास्त्र, प्रशासन, कानून, आदि से सम्बन्धित तकनीकि शब्द होते है जो अनुवादक की जबाबदारी बढ़ा देते है|

१२. बाजार और समय की जरूरतों को समझकर अनुवादक को सार्थक शब्द का प्रयोग करना जरुरी है| विज्ञापनों की आकर्षक भाषा, उपभोक्ता के भाषायी मनोविज्ञान आदि को ध्यान में रखकर अनुवादक को कार्य करना होता है | विज्ञापनों में तकनीक, प्रविधि समय के साथ बदलती रहती है| वस्तु या पदार्थ की अधिकाधिक विक्री हो यह मूल मन्त्र अनुवादक को समझना आवश्यक है क्योंकि बाजार और ग्राहक के रूझान के साथ अनुवादक को चलना होता है |

इस प्रकार हम अंदाज लगा सकते है कि वाणिज्य कोई सीमित या स्वतंत्र क्षेत्र नही है| इसके अंतर्गत कई क्षेत्र आते है| जैसे अर्थशास्त्र, व्यापार, बैंकिग, बीमा, प्रबंधन, प्रशासन, कानून, नीति आदि | इसीलिए अनुवादक को यथासंभव विषय और भाषा दोनों का अधिकाधिक ज्ञान होना आवश्यक है |

३.४ सारांश

वर्तमान युग में तकनीकि प्रगति के कारण सम्पूर्ण विश्व एक लय में समां गया है | इसी के साथ अनुवाद के महत्त्व को नकारा नहीं जा सकता है | आज हर क्षेत्र की प्रगति अनुवाद के कारण सहज हो रही है | फिर वह प्रशासनिक क्षेत्र, विधिक, ज्ञान – विज्ञान परक, कार्यालयीन हो या वाणिज्यिक या फिर भाषायी आधार पर ही क्यों न हो सभी प्रकार के अनुवादों का अपना महत्त्व है | इस इकाई का उद्देश्य भी यही है कि विद्यार्थियों को अनुवाद के प्रकारों से अवगत कराये | आशा है कि इकाई में दिए गए सभी मुद्दे विद्यार्थीयों को समझ में आये है |

३.५ दीर्घोत्तरी प्रश्न

१. अनुवादों के विभिन्न प्रकारों का वर्णन कीजिए |

२. कार्यालयीन अनुवाद और विधिक अनुवाद को विस्तार से समझाइए|

३. विषयवस्तु के आधारपर अनुवाद के प्रकारों का वर्णन कीजिए |

४. वाणिज्यिक अनुवाद का क्षेत्र व्यापक है | इस तथ्य की पुष्टि कीजिए |

टिप्पणी:

१. कार्यालयीन अनुवाद

२. ज्ञान विज्ञान परक अनुवाद

३. विधिक अनुवाद

४. वाणिज्यिक अनुवाद

३.६ लघुत्तरी प्रश्न

१. कार्यालय किसे कहा जाता है ?

उत्तर: जहाँ कामकाज या कार्य स्थल निश्चित होता है उसे कार्यालय कहा जाता है|

२. अंग्रेजी में कार्यालयीन अनुवाद को कहा जाता है?

उत्तर: अंग्रेजी में कार्यालयीन अनुवाद को Official translation कहते हैं|

३. विज्ञान परक अनुवाद के लिए स्रोत और लक्ष्य भाषा के विस्तृत ज्ञान के साथ और किस बात की आवश्यकता होती है?

उत्तर: विज्ञान परक अनुवाद के लिए स्रोत और लक्ष्य भाषा के विस्तृत ज्ञान के साथ सटीकता,सावधानी की आवश्यकता है|

४. किस समय ब्रिटिश पार्लियामेंट ने यह जाहिर किया कि भारत में विधि सम्बन्धी दस्तावेज हिंदी भाषा में प्रकाशित हो?

उत्तर: सन १७९७ ई. में ब्रिटिश पार्लियामेंट ने यह जाहिर किया कि भारत में विधि सम्बन्धी दस्तावेज हिंदी भाषा में प्रकाशित हो|

५. बैंकिग क्षेत्र का अनुवाद अनुवाद के कौनसे प्रकार के अंर्तगत आता है?

उत्तर: वाणज्यिक अनुवाद में|

३.७ संदर्भ ग्रन्थ

१. अनुवाद विज्ञान – डॉ. भोलानाथ तिवारी

२. अनुवाद की व्याहारिक समस्याएँ - डॉ. भोलानाथ तिवारी

३. अनुवाद प्रक्रिया – डॉ. रीतारानी पालीवाल

४. अनुवाद सिद्धांत की रुपरेखा – सुरेश कुमार

५. मशीनी अनुवाद – ऋषभ जैन

*****

४

अनुवाद के प्रकार
विषय वस्तु पाठ प्रकृति के आधार पर –
साहित्यिक अनुवाद

इकाई की रुपरेखा

४.१ इकाई का उद्देश्य

४.२ प्रस्तावना

४.३ विषय वस्तु पाठ प्रकृति के आधार पर – साहित्यिक अनुवाद

४.३.१ काव्यानुवाद

४.३.२ कथानुवाद

४.३.३ नाट्य अनुवाद

४.४ सारांश

४.५ दीर्घोत्तरी प्रश्न

४.६ लघुत्तरी प्रश्न

४.७ संदर्भ ग्रन्थ

४.१ इकाई का उद्देश्य

उक्त इकाई के अध्ययन के पश्चात् विद्यार्थी निम्नलिखित मुद्दों से अवगत होंगे |

- अनुवाद के प्रकारों में विषय वस्तु पाठ प्रकृति के आधार पर – साहित्यिक अनुवाद का अध्ययन करेंगे |
- विषय वस्तु पाठ प्रकृति के आधार पर – साहित्यिक अनुवाद में विभिन्न उपप्रकारों के विषय में जानेंगे |इसके अंतर्गत विद्यार्थी प्रमुखतः काव्यानुवाद, कथानुवाद, नाट्य अनुवाद का विस्तृत अध्ययन करेंगे |

४.२ प्रस्तावना

आज के तकनीकि युग में अनुवाद का लाभ हर एक क्षेत्र को हो रहा है | लेकिन अनुवाद के इतिहास की ओर दृष्टि डालें तो अनुवाद का प्रमुख क्षेत्र साहित्य रहा है | अनुवाद की प्रशस्ति

का कारण भी साहित्य ही है वही साहित्य के लिए अनुवाद ने कई आयाम खोल दिये है| प्राचीन काल में साहित्य की केवल एक विधा थी काव्य विधा जिसे हम आज पद्व विधा के नाम से भी जानते है | लेकिन समय के साथ साहित्य की विस्तृतता भी तेजी से बड़ी है आज गद्व विधा का विस्तार, प्रशस्ति, और प्रसार ने साहित्य को अथांग बना दिया है | इससे साहित्यिक अनुवाद के क्षेत्र में भी विस्तार हुआ है| काव्यानुवाद के साथ कथानुवाद और नाट्य अनुवाद भी बड़े पैमाने पर हो रहा है |

४.३ साहित्यिक अनुवाद

साहित्यिक अनुवाद से तात्पर्य जितनी भी साहित्यिक विधाएं हैं| उन विधाओं से संबंधित अनुवाद से है | जैसे नाटक, कविता, कहानी, उपन्यास, आत्मकथा, जीवनी, रेखाचित्र, संस्मरण, निबंध आदि साहित्यिक विधा जो एक भाषा में लिखी गई है और उसका दूसरी भाषा में परिवर्तन कर देना ही साहित्य का अनुवाद है|

विश्व स्तर पर जितने भी उच्च कोटि का साहित्य लिखा गया है उनका अनुवाद मुख्य रूप से हुआ है| इनमें प्रमुख साहित्यकारों का नाम ले सकते है - अंग्रेजी भाषा के शेक्सपियर, हिंदी भाषा के मुंशी प्रेमचंद, बांग्ला भाषा के रविंद्र नाथ टैगोर ऐसे साहित्यकार है जिनकी साहित्यिक कृतियों का अनुवाद एक दो नहीं कई भाषाओं में हुआ है| उक्त नामों के अतिरिक्त और भी कई साहित्य कार है जिनके साहित्यिक कृतियों का अनुवाद हुआ है और हो रहा है| साहित्यिक अनुवाद के माध्यम से साहित्यकृति किसी एक भाषा तक सीमित न रहकर सर्वांगीण बन गई है | साहित्यिक अनुवाद जो कि मूलतः रसात्मक अनुवाद होता है| रसात्मक अनुवाद से तात्पर्य रस की अनुभूति से है चूँकि साहित्य के पढ़ने से हमें रस की अनुभूति होती है, आनंद प्राप्त होता है और अनेक संवेदनात्मकता का अनुभव हमें साहित्य से प्राप्त होता है | अनुदित साहित्य के माध्यम से भी ज्ञान, रस, आनन्द की अनुभूति या अनुभव अनुवाद के माध्यम से अन्य भाषिक भी ले सकते है|

साहित्यिक अनुवाद करते समय अनुवादक को यह ध्यान रखना चाहिए कि मूल पाठ या स्रोत भाषा में प्रस्तुत जो सामग्री है उसके मूल भाव, विषय वस्तु और विचार को लक्ष्य भाषा में अनुवादित करें जैसा कि हमने पूर्व अध्ययन किया है कि भावानुवाद की श्रेणी में साहित्यिक अनुवाद आता है|

साहित्यिक अनुवाद में अनुवादक को पूरी स्वतंत्रता होती है कि जो संदर्भ, प्रसंग, विषय वस्तु स्तोत्र भाषा या मूल पाठ में प्रस्तुत हैं उसे ठीक ढंग से पाठक के हृदय तक पहुंचाने के लिए उसे वह अपने तरीके से लक्ष्य भाषा में बदल दे | इस प्रकार हम कह सकते हैं कि साहित्य का अनुवाद अपने आप में सृजनात्मक कार्य है | एक नई रचना करने के बराबर है| क्योंकि अनुवाद बाहर से जितना आसान लगता है उतनी ही जटिल प्रक्रिया है| क्योंकि साहित्य में हर एक शब्द का अपना महत्व होता है उसका एक सांस्कृतिक, सामाजिक संदर्भ होता है और अनुवादक का परम कर्तव्य है कि अनुवाद करते समय शब्दों के सामाजिक, सांस्कृतिक संदर्भ गहराई से जाने और उनका दीर्घ अध्ययन करे | तब कहीं अनुवाद लक्ष्य भाषा में हो पाता है| यही कारण है कि साहित्यिक अनुवाद उच्च कोटि का अनुवाद कहलाता

है| इसमें अनुवादक से कौशल्य और प्रतिभाशाली होने की उम्मीद की जाती है | साहित्य अनुवाद को भी तीन स्तरों पर विभाजित किया जाता है|

१) काव्य अनुवाद

२) कथा अनुवाद

३) नाट्य अनुवाद

४.३.१ काव्यानुवाद:

काव्यानुवाद का शाब्दिक अर्थ है कविता का अनुवाद| एक भाषा में लिखित कविता को दूसरी भाषा में अनुवाद करना काव्यानुवाद होता है| विद्वानों का मानना है कि साहित्य की अन्य गद्य विधाएं हैं उनका अनुवाद करना आसान कार्य है| लेकिन कविता का अनुवाद करना दुरूह और कठिन कार्य है| इसका कारण यह है कि कविता विशिष्ट रचना होती है| इसमें शब्द अपने विशिष्ट अर्थ के साथ भावबोध को अपने अंदर समाहित करते हुए चलते हैं| ऐसे में यह तय कर पाना मुश्किल कार्य होता है कि स्रोत भाषा में जो शब्द प्रयोग किये गये है लक्ष्य भाषा में ठीक वैसे ही शब्द होने चाहिए| साथ ही कविता की एक प्रकृति भी होती है| कविता की शब्द शक्ति अभिधा, लक्षणा और व्यंजन इन तीन रूपों में होती है | कविता में लक्षणा और व्यंजन का अधिक प्रयोग किया जाता है | लक्षणा और व्यंजन से तात्पर्य जो कहा गया है उस शब्द का शाब्दिक अर्थ नहीं बल्कि कविता के विशेष अर्थ को ध्वनित करना| उदाहरण के लिए - हिंदी साहित्य के आधुनिक काल के कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' ने अंग्रेजी के साहित्यकार डी. एच. लारेंस की कविता संग्रह का हिंदी में अनुवाद किया है | इस संग्रह में एक कविता 'एकांत' है जो मूल भाषा अंग्रेजी से है इसका अनुवाद नितांत मौलिक और पारदर्शी है |

'लोग अकलेपन की शिकायत करते है |

मै समझ नहीं पाता,

वे किस बात से डरते है |

अकेलापन तो जीवन का परम आनन्द है |

जो है निः संग,

सोचो तो वही स्वच्छन्द है |'

इस प्रकार की उच्च कोटि की अनुदित रचनाएँ भी हम साहित्य में देख रहे है |

आम तौर पर साहित्यिक अनुवाद में अनुवादक के सामने यह चुनौती रहती है कि अनुवाद करते समय काव्य का संप्रेषण, अर्थ संप्रेषण, प्रतीक, भाव कैसे वह दूसरी भाषा में संप्रेषित कर सके इसी कारण से बहुत से विद्वानों ने अनुवाद के प्रकार को असंभव ही कह दिया है|

दूसरा कविता की अपनी प्रकृति होती है, रस, छंद, बिम्ब आदि भी होते हैं| वहीं भाषा की भी अपनी प्रकृति होती है| जैसे एक भाषा में प्रयोग किया जाने वाला अलंकार ठीक उसी के

अनुरूप दूसरी भाषा में वही अलंकार ढूंढ पाना मुश्किल कार्य है| इसलिए काव्य अनुवाद के विषय में विद्वानों ने अपनी राय दी है|

१. **हम बोल्ड:-** 'मेरी दृष्टि में कविता का अनुवाद किसी ऐसी समस्या को हल करने के समान है जिसका कोई हाल ही नहीं है|'

   इस प्रकार हम बोल्ड की दृष्टि में काव्य का अनुवाद लगभग असंभव जैसा है

२. **एच.डी. फॉरेस्ट स्मिथ:-** ने काव्य अनुवाद की कठिनाइयों को देखते हुए कहा है कि 'किसी साहित्यिक कृति का अनुवाद किसी स्वाधीन स्ट्रॉबेरी की तरह होता है|'

   बड़े-बड़े विद्वानों ने काव्यानुवाद को चुनौती माना है|

काव्यानुवाद की समस्याएं:

१. **लक्ष्य भाषा में विशिष्ट अर्थ प्रकट करने वाले शब्दों के चयन की चुनौती:-** जैसा कि हम जानते हैं कवि अपनी कविता में विशेष प्रकार के शब्दों का चयन करता है | कई बार समानार्थी शब्द पर्यायवाची शब्द या एक ही शब्द के अलग-अलग अर्थ होते हैं| ऐसे में कवि अपनी अनुभूति और सूझबूझ के हिसाब से उन शब्दों का प्रयोग करता है| ऐसे में अनुवादक के सामने बहुत कठिन कार्य होता है| स्रोत भाषा में जो विशिष्ट शब्द आया है उसे सामान्य अर्थ के साथ-साथ अपने विशिष्ट अर्थ को भी ग्रहण करना है और ठीक वैसा ही शब्द लक्ष्य भाषा में कैसे चुना जाए यह चुनौती है ही क्योंकि विशिष्ट शब्दावली के प्रयोग से कविता सजीव और रोचक बनती है | कविता की विशेषता होती है कम शब्दों में विस्तृत बात कहना है| कविता में विषयानुसार दो शब्दों के बीच में मौन भी हो सकता है|

उदाहरण के लिए जयशंकर प्रसाद की कामायनी का एक पद: -

'नील परिधान बीच सुकुमार

खुल रहा मृदुल अध खुला अंग

मिला हो ज्यूँ बिजली का फूल

मेघ वन बीच गुलाबी है|'

इन पंक्तियों में कामायनी महाकाव्य की नायिका श्रद्धा के सौंदर्य का वर्णन है नील आवरण के बीच श्रद्धा का कोमल आवरण ऐसा दिखाई दे रहा है जैसे मेघना के जंगल के बीच में कोई गुलाबी रंग का बिजली का फूल खिल रहा हो | यहां बिजली शब्द का अर्थ है श्रद्धा के सौंदर्य की चमक, इसके अतिरिक्त बिजली का अर्थ गति, चमक और तरलता भी है| यहां अनुवाद करते समय बिजली के लिए अंग्रेजी का शब्द प्रयोग करें तो तीन प्रकार के शब्द आते हैं - Thunder, Thunder Gold और Lighting यहां Thunder, Thunder Gold कड़कड़ाहट का अर्थ देता है, बिजली की कड़कड़ाहट को दर्शाता है और Lighting चमक को दर्शाता है अब अनुवादक के सामने यह समस्या होगी कि वह बिजली के लिए कौन से शब्द का प्रयोग करें Thunder, Thunder Gold के प्रयोग में कोमलता और तरलता नहीं

है क्योंकि उसका प्रयोग कड़कड़ाहट के लिए हुआ है Lighting शब्द के प्रयोग से चमक शब्द का भास होगा पर तरलता का प्रवाह उस भाव में नहीं आएगा क्योंकि काव्यानुवाद में एक शब्द केवल अपना अर्थ नहीं रखता उसका ध्वन्यार्थ भी रखता है जो अनुवादक के लिए चुनौती पूर्ण है|

इस प्रकार कह सकते हैं कि स्तोत्र भाषा में जो शब्द है उसके अर्थ, भाव, सौंदर्य को देखते हुए लक्ष्य भाषा में जो शब्द खोजे जाते हैं जरूरी नहीं कि वे स्तोत्र भाषा के शब्द के पूर्ण प्रभाव या ध्वन्यार्थ लक्ष्य भाषा में परिलक्षित करें|

२.अलंकारों के अनुवाद की समस्या:

जैसा कि हमने जाना प्रत्येक भाषा की अपनी एक शब्द शक्ति होती है| उसकी भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक परिस्थितियाँ होती हैं | उन परिस्थितियों के अलंकार होते हैं जो उस भाषा को अलंकृत करते हैं| यह मुश्किल कार्य है कि एक भाषा के अलंकार दूसरी भाषा में वैसे ही उतारे जा सके|

उदाहरण के लिए अनुप्रास अलंकार जैसा कि हम जानते हैं अनुप्रास में एक ही वर्ण की आवृत्ति बार बार होती है| परंतु वर्णों की आवृत्ति के साथ-साथ भाव सौंदर्य भी बढ़ता है और काव्य में चमत्कार भी पैदा होता है| पाठक को अनुप्रास अलंकार आनंदित भी करता है लेकिन लक्ष्य भाषा में वैसे ही अनुप्रास अलंकार ढूंढ पाना असंभव प्रायः है जैसे हिंदी की एक उत्तम कविता- 'मधुर मृदु मंजुल मुख मुस्कान'

यहां नायिका के सौन्दर्य के बारे में बताया गया है यदि इसका अनुवाद करते हैं तो पाएंगे की अंग्रेजी में ऐसे शब्द नहीं है जो इसी आवृत्ति के साथ चल सके और वही भाव दे सके इस प्रक्रिया में अनुप्रास की अर्थ छटा लक्ष्य भाषा में उतर पाना मुश्किल या असंभव ही है| शब्दा और अर्था अलंकार में भी यही स्थिति देखने को मिलेगी|

३. काव्य में प्रयुक्त छंदों की समस्या:

यह हम जानते हैं कि कविता छंदबद्ध होती है और छंद मुक्त भी | यहां हम छंदबद्ध कविता की बात कर रहे हैं| प्रत्येक भाषा के अपने अलग छंद होते हैं, अपनी अलग प्रकृति होती है| हिंदी भाषा में प्रयोग किए जाने वाले छंद फारसी, फ्रेंच, अंग्रेजी या अन्य भाषा में नहीं होंगे | अंग्रेजी या फारसी के छंद हिंदी या संस्कृत में नहीं होंगे | अनुवादक के सामने यह समस्या भी दीर्घ रहेगी कि जो लयबद्ध या छंदबद्ध कविता है उस छंदे के भाव के साथ स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में कैसे अनुवाद करें|

४. अनुवादक का व्यक्तित्व:

ऐसा माना जाता है कि कविता का अनुवादक कोई कवि ही करें तो वह अनुवाद के साथ न्याय कर सकेगा| क्योंकि एक कवि दूसरे कवि की अनुभूति की जीवंतता, प्रमाणिकता, उसके अर्थ संदर्भ, शब्दों में व्याप्त चमत्कारों, भावों को ठीक ढंग से समझ सकेगा| क्योंकि वह भी इस अनुभूति में है| अपनी लेखनी से कविता लिखता है| फिर भी एक समस्या इसमें आ सकती है कि मूल कवि ने जो कविता लिखी है उस कविता का एक विशिष्ट अर्थ है उस

अर्थ संदर्भ में भी अनुवादक कोई नई चीज देख लेता है| उस कविता के अर्थ प्रसंग के नए-नए अर्थ ढूंढ लेता है| ऐसी परिस्थिति में जो मूल कवि की रचना होती है और दूसरा कवि जो अनुवादक की भूमिका में होता है| तो अनुवाद का व्यक्तित्व जो कि स्वयं एक कवि है वह मूल रचना और अनूदित कृति के बीच में आकर खड़ा हो जाता है| यदि एक ही कविता तीन कवियों को अनुवाद के लिए दी जाती है तो हम देखेंगे कि अर्थबोध तो ठीक है लेकिन कहने का तरीका, शब्दों का चमत्कार इस सब में बहुत अंतर देखने को मिलेगा| उदाहरण के लिए उमर खैयाम की रुवाईयां जिनका अनुवाद हरिवंश राय बच्चन, मैथिलीशरण गुप्त, सुमित्रानंदन पंत आदि कवियों ने किया है | लेकिन सभी कवियों ने उन रुवाईयों के अलग-अलग अर्थ अलग-अलग भावबोध प्रस्तुत किए हैं |

५. मिथकीय संस्कृतिक अभिव्यक्ति:

मिथकीय संस्कृतिक अभिव्यक्ति से तात्पर्य है प्रत्येक देश की अपनी संस्कृति होती है वहां के समाज का भौगोलिक, राजनीतिक परिवेश, उस देश और समाज में अलग-अलग तरह के लोग रहते हुए उन्होंने जो काम किया वह एक मिथक बन गया| उस नाम को एक विशेष अर्थ में प्रयोग किया जाने लगा| जैसे विभीषण जिसका अर्थ होता है कुल भेदी यहां विभीषण भेद बताने का अर्थ दे रहा है| ठीक वैसे ही कुंभकरण जिससे तात्पर्य खूब सोने वाला आलसी इंसान है| हम हमारे समाज में कुंभकरण और विभीषण को जानते हैं लेकिन दूसरे देश संस्कृति और समाज के व्यक्ति के लिए इन नाम का अर्थ संदर्भ पता नहीं होगा| इसीलिए मिथकीय सांस्कृतिक अभिव्यक्ति को लक्ष्य भाषा में प्रयुक्त करना कठिन कार्य है| ऐसे में अनुवादक को फुटनोट लिखकर बताना होगा कि विभीषण या कुंभकरण का नाम यहां क्या अर्थ देने के लिए प्रयुक्त हुआ है|

६. प्रतीकों के अनुवाद की समस्या:

प्रतीक किसी वस्तु, चित्र, शब्द, ध्वनि या विशिष्ट चिन्ह को जो संबंध सबद्धता, परंपरा या अन्य किसी वस्तु का प्रतिनिधित्व करता है| इस तरह के प्रतीक चिन्ह जब एक भाषा में आते हैं अपने अर्थ विशेष के साथ उसे दूसरी भाषा में स्थानांतरित करना मुश्किल कार्य होता है| क्योंकि दोनों भाषाओं की प्रकृति अलग-अलग होती है क्योंकि प्रतीक विभिन्न सांस्कृतिक, भौगोलिक, सामाजिकता के अनुरूप होते हैं ऐसी स्थिति में वैसा ही अर्थ देने वाला लक्ष्य भाषा में प्रतीक चुनना बहुत मुश्किल हो जाता है |उदाहरण –

‘सब तरफ अकेला

शिखर पर खड़ा हूँ|

लक्ष मुख दानव सा, लक्ष हस्त देवा- सा

परन्तु यह क्या

आत्म प्रतीति ही धोखा दे रही !

स्वयं को ही लगता हूँ पड्डो के

बाँस का कागज के बने हुए

महाकाल रावण –सा हास्यप्रद भयंकर |'

यह कविता रावण को उधृत करके लिखी गई है | जो बुरे कर्म करके भी ठाठ की तरह खड़ा है आज के काल में यही दशा है व्यक्ति परम्पराओं का बोझ ढोते ढोते खोखला हो गया है| इसलिए अब इस खोखलेपन को जला देना चाहिए | जिस प्रकार रावण का दहन हर साल किया जाता है उसी प्रकार मनुष्य अपने अंदर घुसी कुपरम्पराओं, कुरीतियों का दहन करदे | हम अंदाज लगा सकते है कि रावण को प्रतीक मानकर इस कविता में कुपरंपरा, कुरीतियों के नाश के विषय में कहा गया है| यदि इस कविता का अनुवाद दूसरी भाषा में किया जाय तो उस भाषा में रावण बुराई और नाश का प्रतीक है यह बात कैसे अनुवादक समझाएगा |

४.३.२ कथानुवाद:

जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है किसी कथा, कहानी, उपन्यास आदि गद्य विधा का एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करना कथानुवाद कहलाता है।

गद्य विधा साहित्य की महत्वपूर्ण विधा मानी जाती है| इन विधाओं में कहानी विधा की बात करें तो जब से मानव जीवन का विकास हुआ है| तब से कहानी विधा जीवन का एक हिस्सा रही है| भाषा समय और परिस्थिति के साथ बदलती रही है| भाषायी परिवर्तन के साथ-साथ कहानी हमेशा हमारे समाज जीवन के साथ चलती रही है| कहानी सिर्फ साहित्य को सहेजना या मनोरंजन भर के लिए नहीं है| वरन कहानी मानवीय जीवन समाज में रुज रही संस्कृति, परिस्थिति को अवलोकार्थ करने का कार्य भी करती रही है|

कथानुवाद के संदर्भ में कई विद्वान मानते हैं कि काव्य अनुवाद और नाट्यानुवाद की तुलना में कहानी का अनुवाद करना सरल कार्य है| कहीं हद तक यह सही भी है| लेकिन यह भी उतना ही सच है कि जब कोई कहानीकार अपनी भाषा में लिखता है तो उसे कहानी में वर्णन के साथ-साथ जिस विषय पर वह लिख रहा होता है वह घटनाएं, चरित्र, मानव जीवन, सामाजिक जीवन की अनुभूति आदि अनेक विषयों को लेखक कहानी के तत्वों के रूप में समाहित करता है| यह कार्य सर्वथा कठिन है कि एक रचनाकार द्वारा किसी एक विषय और घटना किसी विशेष मानवीय अनुभूति को पिरोकर लिखी गई कोई कहानी है| यदि उसका दूसरी भाषा में अनुवाद करते हैं तो भाषा के साथ-साथ उसके अर्थ भाव, चरित्र योजनाएं वैसे ही होनी चाहिए जैसे की मूल भाषा में है|

इस प्रकार किसी भी साहित्यिक विधा का अनुवाद कठिन कार्य है कि लक्ष्य भाषा में जो बात कही गई है उसे मूल भाव सहित दूसरी भाषा में प्रतिपादित करना आसान कार्य नहीं है| इसीलिए अनुवाद को एक स्वयं रचित रचना मानते है| रचनाकार जो कहानी, नाटक, उपन्यास का अनुवाद कर रहा है उसे स्तोत्र भाषा और लक्ष्य भाषा दोनों की जानकारी के साथ-साथ अलग-अलग भाषाएँ जिनमे अनुवाद किया जा रहा है उसकी सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के बारे में भी जानकारी हो| साथ ही अनुवादक उस समाज की रीति - नीतियों को भी जानता हो ताकि वह संस्था से मूल भाव को दूसरी भाषा में अनुवाद कर सके| गद्य विधाओं में मनुष्य जीवन के चित्रण के साथ-साथ समय, चरित्र, घटनाओं,

अनुभूति की गहराई को अनुभव करना और उसे दूसरी भाषा में अनुवाद करना चुनौती पूर्ण कार्य है|

कथानुवाद की समस्याएँ:

१. सांस्कृतिक परिवेश के पुनः सृजन की समस्या:

इससे तात्पर्य है कि जो कहानी लिखी गई है वह विशेष सामाजिक संदर्भ में लिखी गई है | उस कहानी में लेखक ने अपने परिवेश के मूल्य, परंपराओं जीवन जीने का तरीका प्रस्तुत किया है| इसी प्रकार विश्व में अलग-अलग जगह पर अलग-अलग जीवन शैली होती है, रहन-सहन, पहनावा, रीति रिवाज, परिवेश एक दूसरे से भिन्न होते हैं इन भावों, परिवेश को दूसरी भाषा में परिवर्तित करना किलिष्ट कार्य है|

उदाहरण के लिए मान लीजिए ईदगाह कहानी में ईद का वर्णन है साथ ही गांव के मेले, गांव की संस्कृति का वर्णन है| यही कहानी यदि दूसरी भाषा में अनूदित होती है तो वहां की संस्कृति में ईद का त्योहार ना हो, मेला ना हो तो लेखक कैसे ईदगाह कहानी का भाव उसे भाषा में दे सकेगा|

माना कि दहेज प्रथा से संबंधित कहानी है और उससे जुड़ी गंभीर समस्याओं का चित्रण कहानी में हुआ है| अनुवादक जिस भाषा में अनुवाद कर रहा है उसमें दहेज क्या है? यही पता नहीं है तो उससे उत्पन्न होने वाली गंभीर समस्या के भाव कहानी में लाना मुश्किल कार्य है यह चुनौती विदेशी भाषाओं के अनुवाद के समय अधिक मात्रा में आ सकती है|

२. गूढ़ मनोभावों को लक्ष्य भाषा में स्थानांतरित करने की समस्या:

कोई भी कहानी भाव निहित होती हैं| जीवन के विशिष्ट मूल्य होते हैं उसमें गहरे मनोभावों को लक्ष्य भाषा में स्थानांतरित करना चुनौती पूर्ण कार्य है| क्योंकि उस मनोभाव को प्रस्तुत करने के लिए भाव, संकेत आदि का प्रयोग करता है| कई बार लेखक विस्तार से वर्णन करता है तो कई बार संक्षेप में| वह कभी-कभी मौन रूप में भी वर्णन कर देता है| मौन से तात्पर्य संकेत रूप में भी हो सकता है| और मौन या संकेत रूप की भाषा का स्थानांतरण बहुत जटिल कार्य होता है| अनुवादक के आगे चुनौती होती है कि उसे मनोभाव को भी बचाना और संकेत को भी भाषा में प्रस्तुत करना है|

उदाहरण:

ईदगाह कहानी में जब हमीद आखिर में बूढी दादी के हाथ में चिमटा देता है तो बूढी दादी उससे लिपटकर रोने लगती है| वही लेखक कहता है कि छोटे हामिद ने बड़े हामिद की भूमिका निभाई है और दादी अमीना छोटी बच्ची अमीना हो गई है| यहां लेखक ने कहानी को खत्म कर दिया लेकिन अनुवादक की यह समस्या इतनी बड़ी है कि छोटे हामिद को बड़ा हामिद दिखाना और बूड़ी अमीना को बच्ची अमीना के भाव में लाना यह सांकेतिक मनोभाव कैसे स्थानांतरण करें यह जटिल समस्या होगी|

३. मुहावरे और लोकोक्तियों के अनुवाद की समस्या:

कहानी की भाषा गद्य परक भाषा होती है| कहानीकार कहानी लिखते समय मुहावरे, लोकोक्तियां का प्रयोग करता है| क्योंकि जो बात कहना चाहता है उसे और रोचक बना सके| भाषायी चमत्कार द्वारा उसे प्रस्तुत कर सके| मुहावरे और लोकोक्तियां जो हमारे सामाजिक जीवन में रची – बसी हुई है| सदियों से परंपरा के रूप में चली आ रही हैं| जैसे हमारे यहां एक लोकोक्ति प्रचलित है- 'अंधी पीसे कुत्ते खाये'इसका अर्थ है कुप्रबंध से वस्तु का नष्ट होना| इसी लोकोक्ति को यदि कोई विदेशी भाषा में अनुवाद हो तो वह सिर्फ शब्द अनुवाद ही करेगा और इसका अर्थ निकलेगा कि अंधा व्यक्ति पीस रहा है और कुत्ते वह पीसी हुई सामग्री खा रहे है | इस प्रकार भावार्थ की समस्या अनुवाद की महत्वपूर्ण समस्या है और रहेगी |

४. आंचलिक शब्दों में वाक्य के अनुवाद की समस्या:

क्षेत्र विशेष में बोली जाने वाली बोली या भाषा से है | कोई कहानीकार कोई कहानी, उपन्यास लिखते समय उस क्षेत्र विशेष की कोई कहानी ले लेता है जैसे कहानीकार ब्रज क्षेत्र की कोई परम्परा उपन्यास या कहानी में लेता है तो लेखक के स्वभावपरक ऐसा होगा कि उपन्यास या कहानी में आने वाले जो पात्र हैं वह अपनी क्षेत्रीय बोलियों में ही संवाद करेंगे या कुछ विशिष्ट वस्तुओं के नाम, कुछ परंपराएं, रीति रिवाज जिनके नाम उनकी अपनी बोलियां पर आधारित होंगे| जैसे चंबा का प्रसिद्ध मेला है- मिंजर मेला किसी कहानी में मिंजर मेले का जिक्र होता है तो मिंजर शब्द से ही पूरे सांस्कृतिक परिवेश को समझा जा सकता है| क्योंकि आप उससे परिचित हैं| मिंजर मेला क्यों मनाया जाता है इसकी विशेषता इसकी खूबसूरती से हम सभी वाकिफ हैं लेकिन यदि इसका अनुवाद किसी विदेशी भाषा में हो तो उनके लिए मंजर सिर्फ एक नाम होगा उसके सिवा कुछ नहीं|

५. भाषा के उचित प्रयोग की समस्या:

प्रत्येक लेखक की अपनी एक विशिष्ट शैली होती है| लेखक अपनी रचना में निरंतर मौजूद होता है| पात्रों, घटनाओं के माध्यम से और इन्हीं माध्यम से वह अपने विचार भी प्रस्तुत करता है| ऐसे में बड़ी चुनौती यह होती है कि मूल भाव के साथ-साथ सही शब्द का प्रयोग वह लक्ष्य भाषा में कैसे करें? कैसे उनका चुनाव करें? उसी के साथ भाषा की खूबसूरती सौंदर्य को कैसे बरकरार रखा जा सकेगा? भाषा में भावों, संस्कृति, रीति रिवाज के साथ देशकाल और वातावरण का भी महत्वपूर्ण चित्रण उसे करना होता है| एक भाषा के विशिष्ट शब्दों से कहानी खूबसूरत बनती है, उस कहानी को गति मिलती है, कहानी का अर्थ बोध समझ में आता है| इसी खूबसूरत पड़ाव के साथ कहानी आगे बढ़ती है, यही खूबसूरती, भावबोध, सौंदर्य लक्ष्य भाषा में बनाए रखना अनुवादक के समक्ष एक कड़ी चुनौती है| और यह भी उतना ही सत्य है कि अच्छे अनुवादक समय लेकर, धैर्य से अनुवाद की प्रक्रिया को कौशल्य पूर्ण तरीके से पूरा करते हैं|

४.३.३ नाट्यानुवाद:

एक भाषा के नाटक को दूसरी भाषा में नाटक के रूप में ही अनुवाद करना नाट्यानुवाद कहलाता है| नाट्यानुवाद में अनुवादक मूल नाटक के भावों, विचारों, उद्देश्यों, को दूसरी

भाषा में प्रस्तुत करता है| साहित्यिक अनुवाद के जितने भी रूप हैं उनका अनुवाद चुनौतीपूर्ण कार्य है| क्योंकि ऐसी प्रक्रिया में अनुवादक को कोई भी विधा जिसका वह अनुवाद कर रहा हो उसके मूल भाव को समझ कर, पढ़कर आत्मसात करना होता है| नाटक के अनुवाद में उसका उद्देश्य, संवाद, नाटक के तत्व और नाटक का तकनीकी पक्ष सभी को समझ कर उसे ठीक उसी तरह लक्ष्य भाषा में रूपांतरित करना होता है| इसीलिए अनुवाद को संरचनात्मक गतिविधि कहा जाता है| अनुवाद को स्वयं में एक रचना माना गया है प्रायः हम देखते हैं कि नाटक में नाटककार पात्रों, कथानक, संवाद के माध्यम से आगे बढ़ रहा होता है| तो बिम्ब, प्रतीकों, संकेतों का प्रयोग करता है| और इन्हीं सब तत्वों के माध्यम से वह कहानी को आगे बढाता है| अब मूल समस्या यह आती है की मूल भाषा के बिंब, प्रतीक, संकेत वैसे ही बिम्ब, प्रतीक, संकेत अनुवादक को लक्ष्य भाषा में भी ढूंढने होते हैं|

१. अभिनेयता की समस्या:

हम सभी जानते हैं कि नाटक साहित्य की एक ऐसी विधा है जिसमें अभिनय की प्रधानता होती है| साथ में दृश्य विधान व श्रव्य विधान भी होता है| अन्य विधा जैसे कहानी, उपन्यास को हम पढ़ते हैं लेकिन नाटक में इसका मंचन होता है| वह हमारी आंखों के सामने प्रस्तुत होता है प्रायः हम देखते हैं कि जब किसी नाटक का मंचन हो रहा होता है| उसमें पात्र संवाद का वाचन नहीं करते या रटकर संवाद नहीं बोले जाते हैं बल्कि संवाद के साथ अभिनय का प्रस्तुतीकरण भी करते हैं | उनके हाव – भाव, बोल-चाल, बात करने का तरीका – सलीका, उतार – चढ़ाव, क्रोध, विनम्रता प्रेम आदि भाव, सारे तत्व संवाद के माध्यम से प्रस्तुत होते हैं | ऐसी स्थिति में स्रोत भाषा की प्रकृति अलग होती है और लक्ष्य भाषा की प्रकृति अलग होती है| अनुवादक का दायित्व बन जाता है कि स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में इन सभी तत्वों का अनुवाद हो |साथ ही नाटक के कुछ सैद्धांतिक पक्ष होते हैं | नाटक में गुण व विशेषताएं नीहित हैं| वेशभूषा, रंगमंच, साज –सज्जा इत्यादि यह सारे तत्व लक्ष्य भाषा में कैसे रूपांतरित होंगे यह कठिनाई अनुवादक के सामने होती है|

२. मूल रचना के चुनाव की समस्या:

मूल रचना के चुनाव की समस्या से पर्याय अनुवादक को जिस नाटक का अनुवाद करना है उसका चुनाव वह कैसे करें? इसके लिए अनुवादक तीन प्रकार के आधारों का सहारा ले सकता है - पहला आधार या अनुवादक की रुचि कौशल या योग्यता के आधार पर वह नाटक चुने, दूसरा आधार है नाटक की विषय वस्तु क्या है? उस विषय वस्तु के आधार पर नाटक का चुनाव करें, तीसरा आधार है किसी भी महान कृति या प्रसिद्ध नाटक को ले और उसका अनुवाद करे | लेकिन यहां प्रमुख समस्या यह आती है कि अनुवाद करते समय उसमें भाव, परिवेश, सामाजिक जीवन, धार्मिक जीवन, आदि बातो का भी ध्यान रखा जाना जरुरी है| अनुवादक सिर्फ रुचि के हिसाब से नाटक का अनुवाद दूसरी भाषा में करता है तो समस्या यह है कि दोनों भाषाओं के भाव परिवेश इत्यादि की जानकारी होना जरूरी है| ऐसी स्थिति में यह बहुत गंभीर प्रश्न सामने आता है कि अनुवादक को उस तरह के विषय वस्तु का चुनाव करना चाहिए जो विषय वस्तु लक्ष्य भाषा के जो पाठक हैं उनके सामाजिक जीवन से जुडी हो| साथ ही स्रोत भाषा में प्रस्तुत कथावस्तु चुनते समय भी इस प्रकार की कथावस्तु को चुने ताकि जो लक्ष्य भाषा के पाठक हैं उन पाठकों के सामाजिक जीवन से

वह कथावस्तु मिलती-जुलती हो और सार्वभौम हो| कथावस्तु मनुष्य के जीवन से जुड़ी ऐसी घटनाओं की हो जो सभी के जीवन में स्वभाविक रूप से आती जाती है| वह मनुष्य कहीं भी क्यों न रह रहा हो जैसे - प्रेम से संबंधित कोई नाटक हो क्योंकि प्रेम सभी संस्कृति, सभ्यता, देशकाल, वातावरण में समाहित होता है| उसमें ना कोई बदलाव है और ना कोई अलग रूपरेखा| दूसरा उदहारण - कथावस्तु में प्रमुखता से सामाजिक समस्याओं का भी समावेश किया जा सकता है जैसे - बेरोजगारी, भुखमरी, प्रदूषण आदि एसी समस्याएँ है जो प्रत्येक देश, राज्य, क्षेत्र में है | हाँ कहीं कम, कहीं ज्यादा मात्रा में हो सकती हैं| अर्थात ऐसी कथावस्तु का चुनाव अनुवादक करे जो लक्ष्य भाषा के पाठकों से मिलती-जुलती हो उसे अनुभूति हो कि यह कहानी मेरी अपनी है| ऐसा अनुवाद अधिक सफल अनुवाद माना जाता है|

३. संवादों के अनुवाद की समस्या:

हम जानते हैं कि संवादों नाटक का जीव है नाटक संवाद के माध्यम से ही आगे बढ़ता है | नाटक में पात्र योजना विशिष्ट ढंग की होती है| सभी पात्र अपने अलग-अलग भूमिका में होता है सभी के संवाद अलग-अलग होते हैं वह उन्ही संवादों के साथ नाटक को आगे बढाते हैं| ऐसी स्थिति में संवाद का सही ढंग से भाव और अर्थ के साथ अनुवाद हो सके । यह भी चुनौती पूर्ण कार्य है| क्योंकि नाटक में प्रयुक्त संवाद केवल अभिव्यक्ति नहीं है वह उद्देश्य और सांकेतिक भी होते हैं| उनमें प्रतीकात्मकता, बिम्ब प्रधानता भी होती है| ऐसे में नाटक के अनुवादक के समक्ष बड़ी चुनौती होती है कि जो स्रोत भाषा का संवाद है ठीक उसी तरह के भाव देने वाले संवाद लक्ष्य भाषा में आए ताकि मूल भाषा का जो संवाद है उसका आनंद लक्ष्य भाषा के अनुवाद में बना रहे| इसके अतिरिक्त संवाद में क्षेत्रीय बोलियों के अनुवाद की समस्या भी आ सकती है| जैसे - नाटककार ने आसाम के सामाजिक जीवन पर कोई नाटक लिखा है तो उस नाटक को गहराई देने के लिए संभव है कि उस नाटक के संवाद आसाम की बोली भाषा में करना होगा साहजिक है कि उसके संवाद, शब्द उस क्षेत्र में रुजे हुए होंगे| यदि ऐसे नाटक का अनुवाद किसी विदेशी भाषा में करना है तो अनुवादक के सामने इन बोलियों के अनुवाद की समस्या होगी क्योंकि बोली भाषाओं में जो गूढ़ छिपा होता है, जो जीवंतता होती है उसे अनुवाद करना चुनौती पूर्ण कार्य होगा।

४. लोकोक्तियां और मुहावरों के अनुवाद की समस्या:

नाटक के संवाद में लोकोक्ति व मुहावरों का प्रयोग होता हैं| लोकोक्ति और मुहावरों से भाषा रोचक और रचनात्मक बनती है| नाटक में प्रमुखतः प्रयुक्त लोकोक्ति और मुहावरे सिर्फ लोकोक्ति और मुहावरे नहीं है उनका गहरा संबंध उस भाषा के सामाजिक जीवन, सामाजिक सांस्कृतिक, धार्मिक परिवेश से है| ऐसी स्थिति में एक सामाजिक जीवन को दर्शाने वाले लोकोक्तियां, मुहावरे का अनुवाद लक्ष्य भाषा में होना बड़ा चुनौती पूर्ण कार्य है क्योंकि जरुरी है कि अनुवादित मुहावरे, लोकोक्ति का अनुवाद अपने भाव और रोचकता को बनाए रखे और जो स्रोत भाषा में लोकोक्ति को मुहावरे अर्थ दे रहे है वैसा ही अर्थ लक्ष्य भाषा में भी हो|

५. सांस्कृतिक परिवेश के सृजन की समस्या:

अनुवादक के समक्ष यह समस्या कविता और कथा के अनुवाद में भी उत्पन्न होती है| ठीक वैसे ही नाटक के क्षेत्र में भी इस समस्या का सामना करना पड़ता है| प्रत्येक नाटक के पात्र, संवादों और पात्रों की वेशभूषा के अनुरूप अपने सांस्कृतिक परिवेश का सृजन करता है| अब प्रश्न यह है कि स्रोत भाषा के सांस्कृतिक परिवेश को लक्ष्य भाषा में कैसे बदले| स्रोत भाषा के सांस्कृतिक परिवेश के अनुसार लक्ष्य भाषा संवाद और कथानक का अनुवाद किया जाए| उदाहरण के लिए भारतेंदु हरिश्चंद्र ने शेक्सपियर के प्रसिद्ध नाटक 'मर्चेंट ऑफ़ वेरियस' का अनुवाद किया| इस नाटक का अनुवाद उन्होंने 'दुर्लभ बंधु' नाम से किया भारतेंदु जी ने उस नाटक में प्रस्तुत पात्र थे उन पात्रों का नामकरण भारतीय संस्कृति के अनुसार किया जैसे -अल्तानियों पात्र का नाम अनंता रखा जो उस नाटक की प्रमुख स्त्री पात्र पर्शिया थी उसका नाम उन्होंने पूरश्री रखा क्योंकि नाम भी परिवेश से जुडा होना चाहिए| सामान्य सांस्कृतिक परिवेश की दूसरी चुनौती है नाटक का सामाजिक जीवन कैसा है ? क्या वैसा ही लक्ष्य भाषा में संभव है | जैसे कि पश्चिमी संस्कृति में सभी को नाम से पुकारा जाता है फिर वह बुजुर्ग हो या बच्चा हो यदि अंग्रेजी के किसी नाटक का अनुवाद हिंदी में किया जा रहा हो तो उसमें किसी बुजुर्ग को नाम से बुलाएंगे तो वह शोभनीय नहीं होगा क्योंकि हमारे यहां बड़ों बुजुर्ग को जी या आदर सूचक शब्द से बुलाया जाता है | यह भी अनुवादक के सामने बड़ी चुनौती होती है| दूसरा उदहारण नाटक के दृश्यों में भी सांस्कृतिक परिवेश दिखाया जाता है| पुराने नाटकों में राजकीय परिवेश में राजा महाराजाओं के कपड़े, वेशभूषा साज - सज्जा देखने लायक होती थी| नाटक देखने का आनंद द्विगुणित हो जाता था यदि इस प्रकार के नाटक का अनुवाद फ्रेंच या डच भाषा में होता है तो ऐसे दृश्य वहां की संस्कृति से जुड़े नहीं होंगे ऐसे में अनुवादक के सामने यह भी बड़ी कठिनाई भरा कार्य होगा।

६. शैली के चुनाव की चुनौती:

शैली से तात्पर्य नाटक गद्य और पद्य दोनों शैलियों में हो सकता है और गद्य, पद्य मिश्रित भी हो सकता है| वही नाटक के अनुवाद अधिक सफल होते हैं जो गद्य में होते हैं| पद्य नाटक का अनुवाद करना अत्यंत कठिन कार्य है ऐसी स्थिति में जो नाटक का अनुवाद कर रहा है| उसके सामने यह समस्या होती है कि वह किस शैली का चयन करें यदि गद्य शैली का वह चुनाव करता है तो आसान है लेकिन नाटक पद्य, गद्य मिश्रित है तो समस्या और अधिक हो जाती है क्योंकि काव्य में संवादों का अनुवाद दूसरी भाषा की काव्य शैली में करना जटिल कार्य है।

७. अनुदित नाटकों के नामकरण की समस्या:

अनुवाद करते समय नाटक के नामकरण की समस्या अनुवादक को घेरे रहती है| क्योंकि नाटक का शीर्षक भी भाव बोध से भरा होता है| किसी विदेशी भाषा में नाटक का अनुवाद हो रहा है तो नाटककार के सामने उस नाटक के नामकरण की समस्या और भी जटिल हो जाती है | उदाहरण के लिए मोहन राकेश का नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' शीर्षक में आषाढ़ शब्द इसका अर्थ हम जानते हैं कि यह हिंदी में एक महीने का नाम है| हम इस मौसम से इसकी विशेषताओं से ज्ञात है उस नाटक की प्रेरणा क्या रही है? यह भी हम जानते हैं| यदि

इस नाटक का अनुवाद किसी विदेशी भाषा में हो तो आषाढ़ का एक दिन नाटक का जो शीर्षक है उस शीर्षक को विदेशी भाषा में बदलने या उससे संबंधित कोई शीर्षक ढूंढ पाना चुनौती भरा कार्य होगा।

४.४ सारांश

इस इकाई में अनुवाद के प्रकारों में मुख्यतः साहित्यिक अनुवाद का दीर्घ अध्ययन किया गया है | इसके अंतर्गत विद्यार्थियों ने काव्यानुवाद, कथानुवाद, नाट्य अनुवाद का अध्ययन किया व इन सभी प्रकारों में अनुवाद में आने वाली समस्याओं को विस्तार से जाना है |आशा है कि विद्यार्थी इन सभी मुद्दों से अवगत हुए है |

४.५ बोधप्रश्न

१. सहित्यिक अनुवाद का विस्तार से वर्णन कीजिए |

२. नाट्य अनुवाद व उसमे आने वाली समस्याओं का वर्णन कीजिए |

३. काव्यानुवाद व उसमे आने वाली समस्याओं को उदहारण सहित समझाइए |

टिप्पणी:

१. कथानुवाद

२. काव्यानुवाद

३. नाट्य अनुवाद

४.६ लघुत्तरीय प्रश्न

१. साहित्यिक अनुवाद से तात्पर्य क्या है ?

उत्तर: साहित्यिक अनुवाद से तात्पर्य जितनी भी साहित्यिक विधाएं हैं| उन विधाओं से संबंधित अनुवाद से है |

२. साहित्यिक अनुवाद को कितने भागों में बांटा गया है ?

उत्तर: साहित्यिक अनुवाद को तीन भागों में बांटा गया है ?

३. कविता का अनुवादक किसे करना चाहिए ताकि अनुवाद के साथ न्याय हो सकेगा|

उत्तर: ऐसा माना जाता है कि कविता का अनुवाद कोई कवि ही करें तो वह अनुवाद के साथ न्याय कर सकेगा|

४. कथानुवाद किसे कहते है ?

उत्तर: किसी कथा, कहानी, उपन्यास आदि गद्य विधा का एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करना कथानुवाद कहलाता है।

५. नाट्य अनुवाद में शैली से तात्पर्य क्या है

उत्तर – नाट्य अनुवाद में शैली से तात्पर्य नाटक गद्य और पद्य दोनों शैलियों में हो सकता है और गद्य पद्य मिश्रित शैली में भी हो सकता है|

४.७ संदर्भ ग्रन्थ

१. अनुवाद विज्ञान – डॉ. भोलानाथ तिवारी

२. अनुवाद की व्याहारिक समस्याएँ - डॉ. भोलानाथ तिवारी

३. अनुवाद प्रक्रिया – डॉ. रीतारानी पालीवाल

४. अनुवाद सिद्धांत की रुपरेखा – सुरेश कुमार

५. मशीनी अनुवाद – ऋषभ जैन

*****

५

अनुवादक की अर्हता और अभिलक्षण

इकाई की रूपरेखा

५.० इकाई का उद्देश्य

५.१ प्रस्तावना

५.२ अनुवादक की अर्हता

५.३ अनुवादक के अभिलक्षण

५.४ सारांश

५.५ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

५.६ दीर्घोत्तरी प्रश्न

५.७ संदर्भ ग्रन्थ सूची

५.० इकाई का उद्देश्य

इस इकाई का मुख्य उद्देश्य है –

- विद्यार्थियों को अनुवाद कौशल का ज्ञान कराना।
- उनको अनुवादक की अर्हता और अभिलक्षण के विषय में बताना।
- उन्हें भारतीय भाषाओं के संवर्धन एवं समृद्धि में अनुवाद की महत्ता से अवगत कराना।
- विभिन्न भाषाओं में ज्ञान-विज्ञान को संभव बनाने हेतु इसकी भूमिका को बताना।

५.१ प्रस्तावना

अनुवाद एक कला है, विज्ञान है, कौशल है और एक शिल्प है। अनुवाद सतही कर्म नहीं है, बल्कि बहुत गंभीर कार्य है। अनुवाद ही भाषा-संस्कृति और भूगोल में बटी दुनिया को एक सूत्र में पिरोता है। इस कार्य में अनुवादक की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण होती है। इसी कारण अनुवादक से कुछ निश्चित योग्यताओं और गुणों के साथ-साथ गंभीर दायित्व बोध तथा अपेक्षाओं को पूरा करने की क्षमता भी अपेक्षित है।

अनुवाद करने के लिए अनुवादक को दो भाषाओं अर्थात् स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा का पूरा ज्ञान होना आवश्यक है, साथ ही दोनों भाषाओं के व्याकरण का संपूर्ण ज्ञान अनिवार्य रूप से होना आवश्यक है। केवल शब्द, वाक्यांश अथवा पदावली का सिर्फ़ अर्थ लिख देना

अनुवाद नहीं होता, बल्कि स्रोत भाषा में व्यक्त विचारों, भावों तथा प्रवृत्तियों को यथासंभव लक्ष्य भाषा में प्रकट करना ही अनुवाद होता है। निरंतर अनुवाद करने का अभ्यास, अनुशीलन तथा अध्ययन अनुवादक को दक्ष बना देता है। इस इकाई में अनुवादक की अर्हता अर्थात योग्यता और अभिलक्षण यानि कि विशेषताओं की चर्चा की जाएगी।

५.२ अनुवादक की अर्हता (अनुवादक की योग्यताएँ)

कुशल अनुवाद करना एक कला है। जिस प्रकार एक कलाकार, चित्रकार, संगीतकार, गायक आदि को अपनी कला को निखारने के लिए उनके वर्षों के लगातार प्रयास, अभ्यास, रियाज, मेहनत, लगन और रुचि आदि की आवश्यकता होती है, ठीक उसी प्रकार एक कुशल अनुवादक के लिए निरंतर अभ्यास और साधना आवश्यक है तभी जाकर कहीं कुशल अनुवादक बना जा सकता है। एक सफल अनुवादक बनने के लिए कुछ विशिष्ट योग्यताओं का होना आवश्यक है। इनको हम निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझ सकते हैं -

१. **स्त्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा पर पूरा अधिकार :** अनुवादक को स्त्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा की प्रकृति और व्याकरण पर पूरा अधिकार होना चाहिए। इसके साथ ही दोनों भाषाओं में प्रचलित मुहावरों, लोकोक्तियों, सूक्तियों एवं उनके मूल अर्थ का सटीक एवं व्यवहारिक ज्ञान होना चाहिए। इन आवश्यक गुणों की अनुपस्थिति में एक आदर्श अनुवादक बन पाना असंभव है।

२. **बहुज्ञ, विवेकशील भाषाविद् :** अनुवाद का कार्य किसी साधारण व्यक्ति से संपन्न होने वाला सामान्य काम नहीं है। अनुवादक को स्त्रोत सामग्री का पूरा ज्ञान होना चाहिए, तो वहीं लक्ष्य भाषा का ज्ञान भी उत्कृष्ट रूप से होना चाहिए क्योंकि देशकाल, परिवेश, प्रयोजन, समस्या, प्रासंगिकता तथा विभिन्न तर्क सम्मत तथ्यों आदि को पहचानने की क्षमता किसी बहुज्ञ व्यक्ति द्वारा ही संभव है। एक सफल और आदर्श अनुवादक वही है, जो बहुज्ञ, बुद्धि से प्रखर, बहुत विवेकशील भाषाविद् होता है।

३. **समाज एवं संस्कृति का ज्ञान :** अनुवादक को दो भाषाओं के प्रभुत्व के साथ-साथ स्त्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा-भाषियों की सामाजिक तथा सांस्कृतिक विषयों से संबंधित जानकारी होना अपेक्षित है। उनके लिए समाज की सांस्कृतिक विरासत, खान-पान, आचार-विचार, व्यवहार, पूजा-पाठ की पद्धति, वेशभूषा, रिश्ते-नाते आदि विषयों से पूर्णतः परिचित होना आवश्यक है।

४. **सजगता :** एक सफल अनुवादक, अनुवाद करते समय आरम्भ से अंत तक सजग, सतर्क रहता है। एक लेखक अपने मूल लेखन में जितना सजग रहता है, उतना ही अनुवादक को भी अनुवाद करते समय सतर्क रहना आवश्यक है। इस तरह की सजगता, सतर्कता से अनुवाद कार्य स्तरीय और उत्कृष्ट बनता है।

५. **संदेह निवारणकर्ता:** अनुवाद करते समय अनुवादक के समक्ष भाषा से संबंधित, व्यवहारिक स्तर पर अनेक समस्याएं आती हैं। एक योग्य अनुवादक में इन समस्याओं के समाधान करने की क्षमता होनी चाहिए।

६. **प्रतिभा:** व्यक्ति की ईश्वर प्रदत्त सहज प्रतिभा उसकी योग्यता को कई गुना अधिक बढ़ा देती है। अनुवाद करने की प्रतिभा एक सफल अनुवादक बनने में सहायक होती है। किसी भी बात को चाहे वह सीधी हो या कठिन, समझ लेने तथा कुशलता से अभिव्यक्त करने के लिए प्रतिभा होना अनिवार्य है।

७. **ज्ञान-विज्ञान-मनोविज्ञान की अद्यतन जानकारी:** अनुवादक को ज्ञान-विज्ञान-मनोविज्ञान की अद्यतन एवं अधुनातन खोजों, परिवर्तनों, जानकारियों तथा उपलब्धियों का ज्ञान जुटाते रहना चाहिए। यह सतत अध्ययनशीलता से, समसामयिक जानकारियों से तथा सूचना-तंत्र के माध्यम से ही संभव हो सकता है।

८. **गुणवत्तायुक्त कार्य:** अनुवादक का परम कर्तव्य है कि वह सदैव उच्च गुणवत्तायुक्त अनुवाद करे और इस उच्च गुणवत्ता को बनाए रखने का निरंतर प्रयास करे। अनुवाद कार्य की गुणवत्ता बढ़ाने में अनुवादक की सक्षमता, संबद्धता, समय-सीमा, ज्ञान और सजग समझ की गंभीरता सम्मिलित है जिसके द्वारा अनुवादक अपना कार्य संपन्न करता है और उसे वितरित करता है।

९. **उत्तरदायी:** जब अनुवादक किसी कार्य को स्वीकार करता है, तो वह इस कार्य के लिए पूरा उत्तरदायी होता है, चाहे वह काम स्वयं उसके द्वारा किया गया हो या किसी अन्य अनुवादक को सौंपा गया हो। तात्पर्य यह है कि हर जिम्मेदार अनुवादक भली-भांति यह जानता है कि उसके काम के लिए क्या आवश्यक है और इस काम को बेहतरीन तरीके से कैसे करना है? उस कार्य को संपन्न करने का उत्तरदायित्व अनुवादक का ही होता है।

१०. **श्रद्धा एवं निष्ठा:** अनुवादक को विषय के प्रति श्रद्धा, निष्ठा एवं गहरी अभिरूचि होनी चाहिए। तभी वह मूल रचनाकार के विचारों को लक्ष्य भाषा के पाठकों तक समग्रता से पहुँचा सकता है।

११. **सृजन-क्षमता:** अनुवादक को सृजनात्मकता एवं रचनात्मकता के गुणों को आत्मसात करना चाहिए। नए शब्दों के गठन, प्रयोग - अनुप्रयोग से, शब्द-निर्माण की प्रक्रिया तथा आवश्यकता से अनुवादक को पूर्णतः अवगत होना चाहिए।

१२. **तटस्थता:** अनुवादक को परकाया प्रवेश की साधना करनी होती है। परकाया-प्रवेश की यही शर्त होती है कि स्वयं को बाहर छोड़कर दूसरे शरीर (रचना या रचनाकार) के भीतर प्रविष्ट होना होता है और बिलकुल तटस्थ रहकर अनुवाद कार्य करना है।

सारांशतः विद्यार्थियों ने यहाँ एक अनुवादक की योग्यताओं का विस्तार से अध्ययन किया कि एक सफल अनुवाद करने के लिए किन-किन विशिष्ट गुणों की आवश्यकता होती है। अतः अनुवादक को तकनीकी शब्दों, उनके विभिन्न रूपों तथा उनसे व्यक्त होने वाले सूक्ष्म अर्थों की सुस्पष्ट तथा गहरी जानकारी होना आवश्यक है।

५.३ अनुवादक के अभिलक्षण (अनुवादक की विशिष्टता)

वर्तमान समय में मनुष्य अनेक भाषाएँ बोलता है, समझता है, जानता है। वह प्रत्येक भाषा में पारंगत हो सकता है, किंतु उसे सभी भाषाओं में उपलब्ध विभिन्न प्रकार के अधुनातन ज्ञान-विज्ञान की जानकारी और विशेषता प्राप्त हो, यह संभव नहीं। ऐसी स्थिति में ज्ञान-विज्ञान की दिशा में अनुवाद की आवश्यकता बढ़ने के साथ-साथ अनुवादक के अभिलक्षण का महत्त्व और अधिक बढ़ जाता है।

आधुनिक समय वैज्ञानिक अनुसंधान, प्रौद्योगिकी, सूचना-संचार क्रांति एवं कम्प्यूटर का युग है। इनसे संबंधित विस्तृत ज्ञान का भंडार आज अंग्रेजी या अन्य विदेशी भाषाओं में ही संरक्षित है। भारत में इन अधुनातन ज्ञान के भंडार को आम जनमानस की भाषाओं में अनूदित करना और भारतवासियों को सर्व सुलभ कराना आवश्यक है और यह कार्य एक कुशल अनुवादक ही संपन्न कर सकता है।

कुछ वर्षों पहले तक हिंदी तथा अन्य भाषाओं में अनुवाद कार्य दोयम दर्ज़े का कार्य माना जाता था। किंतु आज यह धारणा समाप्त हो चुकी है। जिस प्रकार मूल सामग्री किसी न किसी रचनाकार की सृजनात्मकता होती है, ठीक उसी प्रकार अनुवाद के द्वारा उस मूल सर्जना को प्रतिस्थापित करना भी सृजनात्मकता होती है, इस दृष्टि से अनुवाद का काम कोई सरल कार्य नहीं है। जब मूल लेखक अपनी भाषा में कोई भी रचना प्रस्तुत करता है, तो अनुवादक उस भाषा की साहित्यिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक, विधि संबंधी आदि सभी बारीकियों को आत्मसात करके उन्हें अपनी लक्ष्य भाषा में अति सूक्ष्मता से प्रस्तुत करता है। उसकी अभिलक्षणता मूल सामग्री के संदेश को लक्ष्य भाषा में समान रूप से संप्रेषित करना है।

अनुवाद, एक प्रकार की सृजनात्मक कला है। यह कार्य अधिक परिश्रम, निरंतर अभ्यास, और विशेष विशेषज्ञता की अपेक्षा रखता है। अनुवादक के लिए मूल लेखक की मनोभूमि को समझना परम आवश्यक है। अनुवादक की यही समझ और सम्प्रेषण क्षमता उसकी अभिलक्षणता को बढ़ाती हैं। वस्तुस्थिति तो यह है कि आज विश्व के समक्ष अपने-अपने अस्तित्व को बनाए एवं बचाए रखने के साथ ही व्यक्ति को अपने व्यक्तित्व में निरंतर विकास करने के लिए भी अनुवाद एकमात्र साधन है। इस तरह अनुवाद-कार्य को नज़रअंदाज़ करना या परहेज़ करना ज्ञानार्जन की इस दौड़ में पिछड़ना है, इसलिए अनुवादक का कर्तव्य है कि वह इस कार्य को अत्यंत गंभीरता से समझे और करे।

अनुवाद का क्षेत्र अत्यंत व्यापक और असीमित है। यह देश-विदेश की समग्र शिक्षा व्यवस्था, ज्ञान-विज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र में प्रासंगिक है। आज सूचना और संचार माध्यमों में अनुवाद का प्रयोग व्यापक रूप से अनिवार्य हो गया है। दूरदर्शन एवं समाचार पत्र इसके प्रमुख उदाहरण हैं। रायटर जैसी अंतर्राष्ट्रीय न्यूज एजेंसियाँ अन्य देशों की भाषा में छपे और प्रसारित समाचारों को अलग-अलग भाषाओं में अनूदित कराके ग्राहकों तक पहुँचाती हैं। आकाशवाणी से कई भाषाओं में प्रतिदिन अनेक खबरें प्रसारित होती हैं। इनकी तैयारी अनुवादकों द्वारा की जाती है। इसके अतिरिक्त अनुवाद, अंतर्राष्ट्रीय संबंधों की प्रगाढ़ता में भी अपनी सबसे महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। अतः अनुवाद का महत्त्व दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है।

अनुवादक, सृजन और पुनर्सृजन को एकाकार करने वाला वह कलाकार है, जो सदैव नींव की ईंट की तरह अदृश्य रहता है, परंतु अनूदित कृति का भवन इसी की नींव पर टीका होता है। अनुवाद पुनर्सृजन है, तो अनुवादक, विश्लेषण के निकष पर मूल सामग्री की जांच-परखकर उसका पुनर्सृजन करता है, इसलिए किसी भी कीमत पर अनुवादकों का स्थान मूल रचनाकारों से कम नहीं आंकना चाहिए। अनुवादक के अभिलक्षण के विषय में यह बताना आवश्यक है कि हमारे समक्ष एक नहीं, बल्कि अनेक अनुवादक अपने रंग, रूप, गंध-गुण और विशिष्टताओं के साथ आ जाते हैं। किसी एक की तुलना दूसरे के साथ नहीं की जा सकती क्योंकि सबकी अपनी-अपनी विशिष्टताएँ, दक्षताएँ हैं, क्षमताएँ, सीमाएँ हैं, सबके कार्य-क्षेत्र और कार्य भिन्न-भिन्न हैं, उनके उद्देश्य अलग हैं। इस प्रकार अनुवादकों की अनेक श्रेणियाँ होती हैं। मसलन; स्वांतः सुखाय हेतु अनुवाद करने वाले, पत्रकारिता के क्षेत्र अनुवाद करने वाले, दैनिक आधार पर अनुवाद कार्य करने वाले, सरकारी–गैरसरकारी स्तर पर उच्च वेतन पाते हुए अनुवाद कार्य करने वाले, बड़े-छोटे स्तर के अनुवादक – इन सभी को रचनात्मक चुनौतियों का सामना करना ही होता है, भाषा संबंधी समस्याओं से जूझना ही पड़ता है, यह प्रयोग, ध्वनि एवं शब्द के आधार पर भिन्न-भिन्न स्वरूप धारण करती है। भाषा, शब्द चयन से लेकर अभिव्यक्ति तक की अनुभूति कराती है-यह हमारी अस्मिता की परिचायक होती है। भाषा, विचारों की संवाहक है, मन-मस्तिष्क में भावनाओं की प्रकाश-पुंज है। अनुवादक की दक्षता और विशिष्टता ही अनुवाद कार्य को सफल बनाती है। अनुवादक के विलक्षण गुण ही उसकी अभिलक्षणता को निर्धारित करते हैं। ये गुण निम्नलिखित हैं -

१. स्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा पर पूर्ण अधिकार।

२. स्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा के अर्थ, प्रकृति, मुहावरे, उपभाषा एवं बोलियों का पूरा ज्ञान।

३. भाषिक समाज, परिवेश की संस्कृति एवं सभ्यता का सम्पूर्ण ज्ञान।

४. विषय का समुचित एवं उत्तम ज्ञान।

५. पारिभाषिक शब्दावली का ज्ञान।

६. शब्दकोश के उपयोग एवं कोशों की जानकारी।

७. कर्तव्य के प्रति निष्ठा, रुचि एवं रुझान।

८. कठिन शब्दों का अधिकाधिक लिप्यंतरण।

९. अनुभवी, विश्वसनीय और ज़िम्मेदार होना नितांत आवश्यक।

१०. लोक कल्याणकारी और सकारात्मक भावना का होना नितांत आवश्यक।

११. समाज के प्रति दायित्वबोध।

१२. भारत की एकता-अखंडता को मजबूत करना और राष्ट्रभाषा का प्रचार-प्रसार करना।

१३. रचनाशीलता और सर्जनात्मक प्रतिभा।

१४. परकाया प्रवेश में निपुणता।

१५. पाठक की बौद्धिक क्षमता के अनुसार भाषा स्तर

१६. लिप्यंकन एवं लिप्यंतरण क्षमता में दक्षता।

१७. विवेकशीलता।

१८. निरंतर अभ्यास एवं प्रशिक्षण की आवश्यकता।

१९. विश्लेषणात्मक क्षमता।

२०. बोधगम्यता एवं संप्रेषणीयता

२१. अनुवादक में प्रतिभा, संवेदनशीलता, सहज बुद्धि, कल्पनाशीलता, नवोन्मेष क्षमता, लेखन कार्य में स्वाभाविक रुचि।

२२. भाषा-शैली के प्रयोग के संबंध में अनुवादक की सजगता और सतर्कता।

५.४ सारांश

इस प्रकार, निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि अनुवाद सतही कर्म नहीं है, बल्कि बहुत गंभीर कार्य है। यह भाषा और समाज के लिए एक ऐसा सेतु है, जो बाहर और भीतर के बीच एक गतिशील रचनात्मक संबंध स्थापित करता है। आज कोई भी राष्ट्र विश्व स्तर पर घट रही घटनाओं एवं विकास की प्रक्रिया से जुड़कर ही स्वयं को सार्थक कर सकता है। इस कार्य में अनुवाद की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। यह वर्तमान समय में हमारे दैनिक जीवन का अभिन्न अंग बन चुका है। जीवन के तमाम क्षेत्रों में इसकी उपयोगिता सिद्ध हो चुकी है। इनमें व्यापार एवं वाणिज्य, विज्ञापन, शिक्षा, प्रशासन, पत्रकारिता, पर्यटन, सांस्कृतिक कार्यकलाप, साहित्य आदि क्षेत्र शामिल हैं। आज के युग को यदि अनुवाद का युग कहा जाए, तो इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं। वास्तव में अनुवाद मूल कृति का पुनः सृजन है, उसका प्रतिबिंब नहीं। यह बोझिल और ऊबाऊ न होकर ऐसा होना चाहिए कि पाठकों के मन में उत्सुकता बनी रहे और वे यह महसूस करें कि वे मूल पाठ ही पढ़ रहे हैं। ऐसे में अनुवादकों की भूमिका महत्त्वपूर्ण हो जाती है। चूंकि अनुवाद विज्ञान, कला और शिल्प तीनों है, इसलिए आवश्यक है कि अनुवादक के चरित्र में वैज्ञानिक की तर्कक्षमता, बौद्धिकता और तटस्थता हो, कलाकार की संवेदनशीलता और सृजनशीलता हो तथा शिल्पी का प्रशिक्षण और परिश्रमशीलता हो। इन सभी योग्यताओं और क्षमताओं के बिना अनुवादक होना अर्थहीन है।

अनुवाद कार्य स्वान्तः सुखाय कर्म नहीं है, स्वयं तक सीमित रहने वाला व्यक्ति श्रेष्ठ अनुवादक नहीं हो सकता, इसलिए अनुवादक का समाज से जुड़ाव होना आवश्यक है। एक श्रेष्ठ अनुवादक में सृजनात्मक प्रतिभा अवश्य होती है। इसी प्रतिभा के आधार पर ही वह मूल सामग्री का ऐसा अनुवाद तैयार करता है कि वह स्वतंत्र रूप से तैयार सामग्री प्रतीत होती है। सृजनात्मक प्रतिभा के अभाव में किया गया अनुवाद केवल यांत्रिक अनुवाद बनकर रह जाता है। ऐसा अनुवादक एक जीवंत रचना को भी कंकाल बना देता है। सृजनात्मक प्रतिभा केवल साहित्यिक अनुवाद के लिए ही आवश्यक नहीं है, बल्कि किसी भी क्षेत्र और

विषय का अनुवाद करते समय इसकी उपयोगिता सिद्ध हो चुकी है। अनुवादक अपने अभ्यास और अनुभव से दोनों भाषाओं की प्रकृति को समझता है और स्रोत भाषा के भाव को क्षति पहुंचाए बिना पूरी सामग्री को लक्ष्य भाषा में रूपांतरित करता है। बिना अनुभव के ज्ञान केवल सूचना के समान होता है, जिसका भाषातंरण में अधिक महत्त्व नहीं होता। अनुवाद का अर्थ केवल स्रोत भाषा के शब्दों को सूचना के रूप में लक्ष्य भाषा के शब्दों में रूपांतरित करना नहीं होता, बल्कि उस पूरे सौंदर्य को बोधगम्यता के साथ लक्ष्य भाषा में रूपांतरित करना होता है।

आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अनुवाद का महत्त्व है। ऐसे में अनुवादक का दायित्व अधिक चुनौतीपूर्ण हो गया है। अनुवादक का मुख्य दायित्व तो यही है कि वह यथासंभव स्रोत भाषा के साथ न्याय करते हुए उसे लक्ष्य भाषा में संप्रेषणीय बनाए और पूरी निष्ठा से मूल कृति के कथ्य एवं अभिव्यक्ति को लक्ष्य भाषा तक पहुंचाए। मूल पाठ और अनूदित पाठ के बीच एक सहज संबंध स्थापित करे। अनुवाद में सहज संप्रेषणीयता का गुण होना बहुत आवश्यक है, अन्यथा अनुवाद कार्य व्यर्थ है। एक योग्य अनुवादक में मुख्य गुण हैं - समाज से गहरा लगाव, सृजनात्मक प्रतिभा, स्रोत व लक्ष्य भाषा पर समान अधिकार, जीवन का व्यापक और गहरा अनुभव। साथ ही एक दक्ष अनुवादक के प्रमुख दायित्व हैं- मूलनिष्ठता का निर्वाह, बोधगम्यता एवं संप्रेषणीयता, निष्ठा एवं अभ्यास की निरंतरता, विषय का सम्यक ज्ञान एवं उसमें अभिरुचि। एक अच्छे अनुवादक से यह अपेक्षाएं की जाती हैं वह अभिव्यक्ति पर पूर्ण नियंत्रण रखता हो, विषय के अनुरूप भाषा विधान हो और स्रोत भाषा के साहित्य एवं समाज के प्रति अभिरुचि का विकास हो सके।

५.५ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्र.१ अनुवाद एक कला के साथ और क्या है?

उत्तर - यह विज्ञान, शिल्प, कौशल तीनों है।

प्र.२ अनुवाद किस प्रकार का कार्य है?

उत्तर - यह बहुत गंभीर कार्य है।

प्र.३ अनुवाद किसे एक सूत्र में पिरोता है?

उत्तर - भाषा-संस्कृति और भूगोल में बटी दुनिया को एक सूत्र में पिरोता है।

प्र.४ एक योग्य अनुवादक के मुख्य गुण क्या हैं?

उत्तर- समाज से गहरा लगाव, सृजनात्मक प्रतिभा, स्रोत व लक्ष्य भाषा पर समान अधिकार, जीवन का व्यापक और गहरा अनुभव।

प्र.५ एक दक्ष अनुवादक के प्रमुख दायित्व क्या हैं?

उत्तर- मूलनिष्ठता का निर्वाह, बोधगम्यता एवं संप्रेषणीयता, निष्ठा एवं अभ्यास की निरंतरता, विषय का सम्यक ज्ञान एवं उसमें अभिरुचि।

प्र.६ एक अच्छे अनुवादक से यह अपेक्षाएं की जाती हैं?

उत्तर - वह अभिव्यक्ति पर पूर्ण नियंत्रण रखता हो, विषय के अनुरूप भाषा विधान में कुशल हो और स्रोत भाषा के साहित्य-समाज के प्रति अभिरुचि का विकास करता हो।

प्र.७ अनुवाद का क्षेत्र कितना विस्तृत है?

उत्तर –अनुवाद का क्षेत्र अत्यंत व्यापक और असीमित है।

प्र.८ एक सफल अनुवादक के लिए किन अर्हता (योग्यता) का होना आवश्यक है?

उत्तर - स्त्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा पर पूरा अधिकार, बहुज्ञ, विवेकशील भाषाविद्, समाज एवं संस्कृति का ज्ञान, सजगता, संदेह निवारणकर्ता, प्रतिभा, ज्ञान-विज्ञान-मनोविज्ञान की अद्यतन जानकारी, गुणवत्तायुक्त कार्य, उत्तरदायी, श्रद्धा एवं निष्ठा, सृजन-क्षमता, तटस्थता।

प्र.९ अनुवादक के लिए किन भाषाओं पर अधिकार होना आवश्यक है?

उत्तर - स्रोत भाषा एवं लक्ष्य भाषा पर पूर्ण अधिकार होना आवश्यक है।

प्र.१० परकाया-प्रवेश से आप क्या समझते हैं?

उत्तर – परकाया - प्रवेश का तात्पर्य है - स्वयं को बाहर छोड़कर दूसरे शरीर (रचना या रचनाकार) के भीतर प्रविष्ट होना और बिलकुल तटस्थ रहकर अनुवाद कार्य करना।

५ .६ दीर्घोत्तरी प्रश्न

प्र.१. अनुवादक की योग्यताओं को रेखांकित कीजिए।

प्र.२. अनुवादक की अर्हता पर प्रकाश डालिए।

प्र.३. अनुवादक के अभिलक्षण स्पष्ट कीजिए।

प्र.४. अनुवादक के गुणों को समझाकर लिखिए।

प्र.५. अनुवादक की अर्हता और अभिलक्षण को संक्षेप में लिखिए।

५.७ संदर्भ ग्रन्थ सूची

- प्रयोजनमूलक हिन्दी विनोद गोदरे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, १९९८
- प्रयोजनमूलक हिन्दी - डॉ. अंबादास देशमुख, शैलजा प्रकाशन, कानपुर, २००९
- प्रयोजनमूलक हिन्दी - डॉ. लक्ष्मीकांत पांडेय, डॉ. प्रमिला अवस्थी, कल्याण चंद्र चौबे, आशीष प्रकाशन, कानपुर, २००५
- अनुवाद - अमित कुश, सौम्य प्रकाशन, मुंबई, २०११

- अनुवाद कला - डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर
- प्रयोजनमूलक हिंदी की नयी भूमिका, कैलाश नाथ पांडे, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
- प्रयोजनमूलक हिंदी - डॉ. विनोद शाही, आधार प्रकाशन, हरियाणा
- प्रयोजनमूलक हिंदी - विनोद गोदरे, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
- प्रयोजनमूलक हिंदी नए संदर्भ, सुमित मोहन, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली
- प्रयोजनमूलक हिंदी के नए आयाम, डॉ. पंडित बन्ने, अमन प्रकाशन, कानपुर
- प्रयोजनमूलक हिंदी माधव सोनटक्के, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
- प्रयोजनमूलक मीडिया विमर्श सिद्धांत और अनुप्रयोग, राम लखन मीरा, के.के पब्लिकेशन्स, दिल्ली
- प्रयोजनमूलक हिंदी प्रयुक्त और अनुवाद, माधव सोनटक्के, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
- अनुवाद विज्ञान - भोलानाथ तिवारी, किताबघर प्रकाशन, दिल्ली
- अनुवाद विज्ञान की भूमिका - कृष्ण कुमार गोस्वामी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

*****

६

अनुवाद प्रशिक्षण के भारतीय संस्थान

इकाई की रूपरेखा

६.० इकाई का उद्देश्य

६.१ प्रस्तावना

६.२ अनुवाद प्रशिक्षण के भारतीय संस्थान

६.३ सारांश

६.४ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

६.५ दीर्घोत्तरी प्रश्न

६.६ संदर्भ ग्रन्थ सूची

६.० इकाई का उद्देश्य

इस इकाई का मुख्य उद्देश्य है –

- विद्यार्थियों को अनुवाद प्रशिक्षण के भारतीय संस्थानों से अवगत कराना।
- विद्यार्थियों को अनुवाद कौशल के प्रशिक्षण हेतु दिशा दिखाना।
- विद्यार्थियों को भारतीय भाषाओं की समृधि में योगदान कराना।

६.१ प्रस्तावना

अनुवाद का क्षेत्र अत्यंत विशद और व्यापक है, इससे संबंधित विभिन्न क्षेत्र विशेष जैसे कि भाषा, साहित्य, विज्ञान, गणित, वाणिज्य, व्यापार, शिक्षा, दर्शन, ज्योतिष, संस्कृति, विधि, संचार, मीडिया इत्यादि में विशिष्ट भाषा की आवश्यकता होती है। साथ ही साथ विषयानुकूल, प्रसंगानुकूल विभिन्न प्रकार की अनुवाद कला इसको और अधिक विशिष्ट बना देती है। यह कार्य अच्छे प्रशिक्षण और उसके अभ्यास से ही संभव है। अनुवाद में दक्ष बनाने के लिए समूचे विश्व में ही नहीं, बल्कि भारत के विभिन्न प्रान्तों में अनेक प्रशिक्षण संस्थान खोले गये हैं। इनका विवरण इस अध्याय में दिया गया है।

६.२ अनुवाद प्रशिक्षण के भारतीय संस्थान

अनुवाद का क्षेत्र अत्यंत विस्तृत एवं व्यापक है। जीवन के विभिन्न क्षेत्र विशेष जैसे कि भाषा, साहित्य, विज्ञान, गणित, वाणिज्य, व्यापार, शिक्षा, दर्शन, ज्योतिष, संस्कृति, विधि, संचार,

मीडिया इत्यादि में विशिष्ट भाषा की आवश्यकता होती है। अनुवाद कौशल में विद्यार्थियों और अनुवाद कर्त्ताओं को दक्ष बनाने के लिए सम्पूर्ण विश्व में ही नहीं, बल्कि भारत के विभिन्न प्रान्तों में अनेक विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों में अनेक प्रशिक्षण संस्थान चलाये जा रहे हैं, कहीं यह कोर्स डिप्लोमा के रूप में चल रहा हैं तो कहीं डिग्री के रूप में। आज अनेक विश्वविद्यालयों में अनुवाद में एम. ए, एम. फिल, पी-एच.डी. या शोध संबंधी कार्य कराया जा रहा है। हालाँकि अनुवाद का काम महज डिग्री व डिप्लोमा से ही सीखा नहीं जा सकता। इसके लिए निरन्तर अभ्यास और व्यापक ज्ञान की आवश्यकता पड़ती रहती है। उत्तम अनुवाद कार्य अच्छे प्रशिक्षण और अभ्यास से ही संभव है। अनुवादक की विषयानुकूल, प्रसंगानुकूल भाषा-शैली विभिन्न प्रकार की अनुवाद कला और अधिक विशिष्ट बना देती है। अनुवाद हेतु दो भाषाओं के उत्तम ज्ञान की माँग की जाती है। उदाहरणस्वरूप यदि किसी को अंग्रेज़ी-हिन्दी का अनुवादक बनना है तो उसको दोनों भाषाओं के व्याकरण सहित उनकी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को जानना, समझना और संप्रेषित करना आवश्यक है। इसके लिए अनुवादक को स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में जाने के लिए दोनों भाषाओं की सम्पूर्ण पृष्ठभूमि का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है। दो भाषाओं के बीच सेतु का कार्य अनुवाद द्वारा ही संभव है। एक प्रोफेशनल अनुवादक बनने के लिए मूलतः डिप्लोमा और डिग्री कोर्स करना आवश्यक है, डिप्लोमा एक साल का होता है। इसमें दाखिला लेने के लिए मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से किसी भाषा में कम-से-कम स्नातक होना जरूरी है। साथ ही दूसरी भाषा को भी पूरी तरह जानना, समझना ज़रूरी है। मसलन अंग्रेज़ी - हिन्दी डिप्लोमा कोर्स के लिए इन दोनों भाषाओं का ज्ञान होना ज़रूरी है। विद्यार्थियों के अनुवादक बनने के लिए उनकी स्नातक कक्षा में हिंदी विषय के साथ ही अंग्रेजी विषय का होना अनिवार्य है, तभी उसे एक अनुवादक की कम से कम योग्यता या अर्हता प्राप्त होगी। अनुवाद सिर्फ अंग्रेज़ी-हिन्दी या हिन्दी-अंग्रेज़ी में ही नहीं, बल्कि अन्य भारतीय भाषाओं में भी होता है। अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर एक विदेशी भाषा का दूसरी भाषा में अनुवाद आमदनी की दृष्टि से काफ़ी अच्छा विकल्प है। मसलन यहाँ स्पैनिश से अंग्रेज़ी या हिन्दी या अन्य दूसरी भाषा में अनुवाद करने का पैसा ज़्यादा मिलता है।

अनुवाद-कला में दक्ष विद्यार्थियों के लिए आज विभिन्न सरकारी, अर्द्धसरकारी संस्थानों, निजी संस्थानों, कम्पनियों और बैंकों में काम के अनेक अवसर हैं। हिंदी भाषा भारत देश के अधिकतर प्रान्तों की राजभाषा और सम्पर्क भाषा है, इसकी वजह से आज देश के विभिन्न सरकारी संस्थानों में हिन्दी अनुवादक की सबसे अधिक माँग है। कर्मचारी चयन आयोग इसके लिए प्रत्येक वर्ष प्रतियोगिता परीक्षा आयोजित करता है। इसमें हिन्दी या अंग्रेज़ी से स्नातक व स्नातकोत्तर की योग्यता की मांग की जाती है। डिग्री के अलावा कई जगहों पर अनुवाद में डिप्लोमा की भी ज़रूरत पड़ती है।

भारत देश में केन्द्रीय स्तर पर लोकसभा हो, राज्यसभा हो, विभिन्न मंत्रालय हो या कोई भी अन्य सरकारी क्षेत्र हो, इन सभी स्थानों पर अनुवादक की ज़रूरत होती ही है। सरकारी संस्थानों के अलावा बैंकों, बीमा कम्पनियों और तमाम कॉरपोरेट सेक्टर में भी अनुवादको की आवश्यकता होती है। बैंकों में राजभाषा अधिकारी ही अनुवाद का कार्य पूरा कराता है, इसलिए वहाँ अनुवादक की भूमिका बदल जाती है। वहाँ अनुवादक की योग्यता रखनेवाले युवा को राजभाषा अधिकारी के रूप में काम करने का अवसर मिलता है। कई स्थानों पर हिन्दी सहायक के रूप में काम करने का मौका मिलता है। धीरे-धीरे कार्य अनुभव और उम्र

के साथ उनकी पदोन्नति होती है। अनुवादक की सहायक निदेशक, उपनिदेशक और निदेशक के रूप में नियुक्ति होती है। अनुवादक यदि चाहे तो स्वतन्त्र रूप से अपना काम कर सकता है या कोई अनुवाद ब्यूरो खोल सकता है। सरकारी स्तर से अलग हटकर भी देखें तो अनुवादक का काम ज़्यादातर क्षेत्रों में है; चाहे मीडिया जगत हो, फ़िल्म इण्डस्ट्री हो, दूतावास हो, कोई संग्रहालय हो, व्यापार मेला हो या फिर शहरों में लगनेवाली प्रदर्शनियाँ। आम जनमानस को अनुवाद के माध्यम से ही किसी भाषा और कला का मर्म समझाया जाता है। इन उद्देश्यों की पूर्ति हेतु ही अनुवाद के प्रमुख भारतीय संस्थान बहुत सक्रियता और तत्परता से अनुवाद प्रशिक्षण का कार्य कर रहे हैं। इन प्रशिक्षण संस्थानों का मुख्य उद्देश्य है –

१. अनुवाद में डिप्लोमा प्रदान करके इस क्षेत्र में रोजगार उत्पन्न करना।

२. विभिन्न ज्ञान-विज्ञान संबंधी अनुशासनों में अनुवाद-प्रक्रिया का विकास करना।

३. अनुवाद के माध्यम से अंग्रेज़ी तथा अन्य विदेशी भाषाओं एवं भारतीय भाषाओं की शिक्षण सामग्री को किसी निश्चित भाषा में रूपांतरित करना।

४. एक भाषा से दूसरी विदेशी एवं भारतीय भाषाओं में यन्त्रानुवाद की प्रक्रिया को सरल, सुगम बनाने के साथ ही उसे एक विकसित रूप प्रदान करना।

५. भारतीय एवं विदेशी भाषाओं में हिन्दी दुभाषिये तैयार करना।

६. अनुवाद को वर्तमानकालीन सांस्कृतिक, सामाजिक एवं प्रयोजनपरक प्रविधियों से जोड़ते हुए उसके विभिन्न व्यावहारिक पक्षों को विकसित करना।

७. भारतीय एवं वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी और अंग्रेजी की ही तरह अन्य भारतीय भाषाओं को अनुवाद के माध्यम से सम्पन्न भाषा बनाना।

८. अनुवाद अनुशासन को विदेशी और द्वितीय भाषाई शिक्षणों में एक प्रमुख उपकरण के रूप में विकसित कर, प्रतीकान्तरण (Inter Semiotic Translation) के फिल्मों, दूरदर्शनों, आकाशवाणीयों एवं रंगमंचों आदि को विकसित करना।

९. विभिन्न भारतीय भाषाओं को अनुवाद के जरिये जन-जन तक पहुँचाना।

१०. शिक्षा, रोज़गार और अनुवाद के महत्त्वपूर्ण सन्दर्भ को अधिक कारगर तरीके से स्पष्ट करना।

अनुवाद के प्रमुख भारतीय संस्थानों को निम्नलिखित रूप से देखा जा सकता है -

भारतीय अनुवाद परिषद् :

भारतीय भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन में अनुवाद की आवश्यकता एवं महत्ता को ध्यान में रखते हुए दिल्ली विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों के सहयोग से डॉ. गार्गी गुप्ता ने वर्ष 1964 में 'भारतीय अनुवाद परिषद्' की स्थापना की थी। इसे मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने विशेष तौर पर स्वीकृति प्रदान की है। अनुवाद की दिशा में विशेष रूप से काम करने के लिए

यह संस्था वर्ष १९६४ से अब तक लगातार सक्रीयता से कार्यरत है। यहाँ कुशल अनुवादक बनाने के लिए एक एक साल का पी.जी.डिप्लोमा कोर्स कराया जाता है, जिसकी कक्षाएँ शाम को होती हैं, इसलिए इसे कोई भी विद्यार्थी पार्ट टाइम के रूप में सीखकर अपने अन्दर अनुवाद कौशल का विकास कर सकता है। 'भारतीय अनुवाद परिषद्' प्रति वर्ष अनुवाद के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए और अनुवाद की उत्कृष्ट पुस्तक या पत्रिका प्रकाशित करने के लिए विभिन्न विद्वानों को सम्मानित एवं पुरस्कृत करती है।

केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो :

राजभाषा हिन्दी के प्रयोग में अनुवाद की महत्ता और अपरिहार्य आवश्यकता को देखते हुए अनुवाद को सुनियोजित और सुव्यवस्थित करना आवश्यक था, इसलिए वर्ष 1960 में शिक्षा मंत्रालय के अधीन 'केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय' की स्थापना हुई और असांविधिक साहित्य के हिन्दी अनुवाद का कार्य आरंभ किया गया। लेकिन राजभाषा हिन्दी के कार्यान्वयन का दायित्व गृह मंत्रालय पर होने के कारण केन्द्र सरकार के असांविधिक प्रक्रिया साहित्य के अनुवाद का दायित्व भी गृह मंत्रालय को सौंपा गया। तदनुसार, 01 मार्च, १९७१ को गृह मंत्रालय के अधीन 'केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो' की स्थापना की गयी और केन्द्र सरकार के मंत्रालयों, विभागों, कार्यालयों, उपक्रमों आदि के असांविधिक प्रक्रिया साहित्य का अनुवाद कार्य केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो को सौंपा गया। वर्तमान में केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय) के अधीनस्थ कार्यालय के रूप में कार्य कर रहा है। वस्तुत: अनुवाद में सरलता, सहजता और शब्दावली में एकरूपता सुनिश्चित करने के लिए वर्ष १९७३ से अनुवाद प्रशिक्षण का कार्य केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो को सौंपा गया। इस ब्यूरो द्वारा ०१ मार्च, १९७१ से लेकर ३१ दिसम्बर, २०१६ तक कुल २४७४५१३ मानक प्रस्ताव का अनुवाद किया जा चुका है और यह क्रम लगातार जारी है।

इस प्रकार, केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो अनुवाद प्रशिक्षण देने का कार्य कर रहा है। वस्तुतः केन्द्र सरकार के स्तर पर अनुवाद और अनुवाद प्रशिक्षण के लिए केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो ही एकमात्र संस्था है। अनुवाद प्रशिक्षण ब्यूरो से अनुवाद प्रशिक्षण प्रदान किये जाते हैं। प्रारंभिक अनुवाद प्रशिक्षण, उच्चस्तरीय अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम, पुनश्चर्या अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम, पाँच दिवसीय संक्षिप्त अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम, विशेष तकनीकी अनुवाद प्रशिक्षण कार्यक्रम आदि प्रशिक्षण से सम्बन्धित कार्यक्रम केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो चलाता है। इसका दायित्त्व निम्नवत है -

- अनुवाद कार्य से जुड़े अधिकारियों, कर्मचारियों को अनुवाद का प्रशिक्षण देना।
- प्रशासनिक शब्दावली और अभिव्यक्तियों में एकरूपता सुनिश्चित करना।
- भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों, विभागों, कार्यालयों, बैंकों, केन्द्र सरकार के स्वामित्व वाले तथा इनके नियन्त्रण के अधीन उपक्रमों, निगमों, स्वायत्त निकायों, संगठनों आदि के कोड, मैन्युअल, फार्मों आदि जैसे असांविधिक साहित्य और प्रशिक्षण सामग्री का अनुवाद निःशुल्क करना।

देश के विभिन्न प्रान्तों में स्थित केन्द्र सरकार के कार्यालयों में कार्यरत हिन्दी अधिकारियों /कर्मचारियों को अनुवाद प्रशिक्षण दिलाने की बढ़ती हुई माँग को पूरा करने के लिए दिल्ली,

मुम्बई, बैंगलूरु और कोलकाता में क्रमशः जनवरी, 1985; अक्टूबर, 1985 और अक्टूबर, 1987 में अनुवाद प्रशिक्षण केन्द्र खोले गये। केन्द्र सरकार के विभिन्न विभागों, उपक्रमों एवं राष्ट्रीयकृत बैंकों के क्षेत्रीय कार्यालयों में कार्य करनेवाले हिन्दी अधिकारियों / अनुवादकों तथा हिन्दी कार्य से जुड़े सभी अधिकारियों / कर्मचारियों के लिए इन केन्द्रों में सेवाकालीन त्रैमासिक अनुवाद प्रशिक्षण पाठ्यक्रम संचालित किये जाते हैं। केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो की विभिन्न शाखाओं का नाम और पता नीचे दिया गया है -

निदेशक, केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, 8 वाँ तल, पर्यावरण भवन, सी.जी. ओ. कॉम्पलैक्स, लोदी रोड, नयी दिल्ली - 110 003, टेलीफैक्स : 011-24362025, 011-24362025, 011-24362151011- 24362151, 011-24364203, 011-24364203

केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो के तीन क्षेत्रीय अनुवाद प्रशिक्षण केन्द्र हैं जिनका पता इस प्रकार है -

दक्षिणी क्षेत्र:

संयुक्त निदेशक / केन्द्र प्रभारी, अनुवाद प्रशिक्षण केन्द्र, केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, पाँचवाँ तल, केन्द्रीय सदन, डी विंग, दूसरा ब्लाक, कोरमंगला, बेंगलूर – 560034, दूरभाष: 08025502162080-25502162, फैक्स नं.: 080-25531946080-25531946

पूर्वी क्षेत्र:

संयुक्त निदेशक / केन्द्र प्रभारी, अनुवाद प्रशिक्षण केन्द्र, केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, 67-बी, बालीगंज, सर्कुलर रोड, कोलकाता-700 019, दूरभाष: 033-22876799033-22876799, फैक्स: 033-22876044033-22876044

पश्चिमी क्षेत्र:

संयुक्त निदेशक/केन्द्र प्रभारी, अनुवाद प्रशिक्षण केन्द्र, केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, केन्द्रीय सदन, छठी मंजिल, सेक्टर 10 ए, सी.बी.डी. बेलापुर, नवी मुम्बई – 400614, दूरभाष: 022-27572726022-27572726, फैक्स: 022- 27566902022-27566902

अनुवाद में डिप्लोमा, डिग्री हेतु अन्य प्रमुख संस्थान:

भारतीय अनुवाद परिषद्- पता: 24 स्कूल लेन, बंगाली माकेट, नयी दिल्ली, फोन:011-223352278, 223327202, वेबसाइट: 222.bharatiyaanuvadparishad.org

'राष्ट्रीय अनुवाद मिशन':

'राष्ट्रीय ज्ञान आयोग' की विशिष्ट पहल पर देश में 'राष्ट्रीय अनुवाद मिशन' बनाया गया। लगभग ७४ करोड़ रुपये बजटवाले इस मिशन का मुख्य कार्य विभिन्न भारतीय भाषाओं को अनुवाद के जरिये जन-जन तक पहुँचाना है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय, 'राष्ट्रीय ज्ञान आयोग' की इस महत्त्वपूर्ण योजना 'राष्ट्रीय अनुवाद मिशन' द्वारा भाषागत बाधाओं को समाप्त करने या कम करने हेतु प्रयासरत हैं जो हर किसी के लिए ज्ञान को सुलभ कराने के लिए सरकार की प्रमुख पहल की दिशा में सहायक है। 'राष्ट्रीय अनुवाद मिशन' के प्रथम चरण में उच्च कक्षाओं मसलन; स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर करीब १५ से अधिक

विषयों की अंग्रेज़ी में उपलब्ध पाठ्य सामग्री का अनुवाद आठवीं अनुसूची के तहत सूचीबद्ध सभी २२ भारतीय भाषाओं में किये जाने की योजना है। इस मिशन के माध्यम से सभी भारतीय भाषाओं को समृद्ध और विकास को मजबूत बनाया जा सके। एक स्वस्थ बहुभाषी व्यवस्था के साथ ही बुद्धिजीवी वर्ग की कार्यप्रणाली का मार्ग प्रशस्त हो सके। सृजन से रोज़गार मिल सके, इण्टरनेट पर उपलब्ध विषय-सामग्री की डबिंग व सबटाइटलिंग हो सके, विभिन्न विषयों के लिए अनुवाद के खुले स्रोत की स्थापना हो सके। इनमें मौलिक शब्दकोश की तैयारी और प्रकाशन, विश्वविद्यालय डाटाबेस का सृजन, अनुवाद और अनुवादकों के डाटाबेस, इण्टरेक्टिव वेबसाइट आदि का विकास सम्मिलित है।

'राष्ट्रीय अनुवाद मिशन', भारत सरकार की एक नयी पहल है। इसका उद्देश्य विश्व की प्रमुख भाषाओं और भारतीय भाषाओं के बीच तथा विभिन्न भारतीय भाषाओं के बीच अनुवाद का सेतु स्थापित करना है। ये मिशन शब्दकोश एवं विश्वकोश जैसे उच्चकोटि के अनुवाद साधनों का निर्माण करने और अनुवाद के लिए उपयोगी सॉफ़्टवेयर के विकास और अनुसन्धान को प्रोत्साहित करने के लिए शुरू किया गया है। इस प्रकार, देश में अनुवाद की उपयोगिता को समझाने व विकसित करने के लिए सरकार प्रयासरत है।

इस प्रकार, भारतीय अनुवाद परिषद्, केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो और राष्ट्रीय अनुवाद मिशन तीनों अनुवाद प्रशिक्षण के भारतीय संस्थान अनुवाद की दिशा में अपना अत्यंत महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान कर रहे हैं।

अनुवाद के अन्य प्रमुख संस्थान हैं -

- दिल्ली विश्वविद्यालय, हिन्दी-विभाग, उत्तरी परिसर, दिल्ली- http.//www.du.ac.in
- इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, मैदान गढ़ी, नयी दिल्ली http.//www.ignou.ac.in/
- जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, न्यू महरौली रोड, नयी दिल्ली- http.//www.jnu.ac.in/
- कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, हरियाणा- http.//www.kuk.ac.in/
- भारतीय विद्या भवन, मेहता भवन, कस्तूरबा गाँधी मार्ग, नयी दिल्ली http.//www.bvbdelhi.org/
- जामिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली- http.//jmi.ac.in/
- अन्नामलाई यूनिवर्सिटी, तमिलनाडु - http.//www.annamalaiuniversity.ac.in/
- महात्मा गाँधी हिन्दी अन्तरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय, वर्धा- http.//hindivishwa.org/distancev.php
- अटल बिहारी हिन्दी विवि, भोपाल- http.//www.abvhv.org/
- http.//www.pib.nic.in

६.३ सारांश

'वसुधैव कुटुम्बकम्' अर्थात समूचा विश्व हमारा परिवार है, इसी तथ्य को अपनाते हुए, परिभाषित करते हुए 'ग्लोबल व्हिलेज' की अवधारणा आई, जिसमें आज सम्पूर्ण विश्व को एक गाँव बनाने का सपना देखा गया और उसको पूरा करने में प्रत्येक अनुवादकों ने अपनी अहम् भूमिका निभाई है। चाहे विश्व संस्कृति हो, विज्ञापन हो, विदेशी फ़िल्मों की हिन्दी या अन्य दूसरी भाषा में डबिंग हो या फैशन की नकल, इण्टीरियर डेकोरेशन का काम हो या ड्रेस डिजाइनिंग, अनुवादक की ज़रूरत हर जगह पड़ रही है। पलक झपकते संसद की कार्यवाही को आम जनता तक पहुँचाने का काम अनुवादक के जरिये ही सम्भव है। इसके जरिये हम कुछ वैसा ही अनुभव करते और सोचते हैं, जैसा दूसरा कहना चाहता है। एक दूसरे को जोड़ने में और परस्पर संवाद स्थापित करने में अनुवादक की भूमिका ने युवाओं को करियर की एक नयी राह दिखायी है। इस क्षेत्र में आकर कोई अपनी पहचान बनाने के साथ-साथ अच्छा-खासा धन कमा सकता है। अनुवादक और इसी से जुड़ा इण्टरप्रेटर युवाओं के लिए करियर का नया क्षेत्र लेकर उपस्थित है।

अनुवाद-कला में दक्ष विद्यार्थियों के लिए आज विभिन्न सरकारी, अर्द्धसरकारी संस्थानों, निजी संस्थानों, कम्पनियों और बैंकों में काम के अनेक अवसर हैं। हिंदी भाषा भारत देश के अधिकतर प्रान्तों की राजभाषा और सम्पर्क भाषा है, इसकी वजह से आज देश के विभिन्न सरकारी संस्थानों में हिन्दी अनुवादक की सबसे अधिक माँग है। 'राष्ट्रीय ज्ञान आयोग' की विशिष्ट पहल पर देश में **'राष्ट्रीय अनुवाद मिशन'** बनाया गया। लगभग 74 करोड़ रुपये बजटवाले इस मिशन का मुख्य कार्य विभिन्न भारतीय भाषाओं को अनुवाद के जरिये जन-जन तक पहुँचाना है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय, 'राष्ट्रीय ज्ञान आयोग' की इस महत्त्वपूर्ण योजना 'राष्ट्रीय अनुवाद मिशन' द्वारा भाषागत बाधाओं को समाप्त करने हेतु प्रयासरत हैं। 'राष्ट्रीय अनुवाद मिशन' के प्रथम चरण में उच्च कक्षाओं मसलन; स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर करीब 15 से अधिक विषयों की अंग्रेज़ी में उपलब्ध पाठ्य सामग्री का अनुवाद आठवीं अनुसूची के तहत सूचीबद्ध सभी 22 भारतीय भाषाओं में किये जाने की योजना है। इस मिशन के माध्यम से सभी भारतीय भाषाओं को समृद्ध और विकास को मजबूत बनाया जा सके, सृजन से रोज़गार मिल सके, इण्टरनेट पर उपलब्ध विषय-सामग्री की डबिंग व सबटाइटलिंग हो सके, विभिन्न विषयों के लिए अनुवाद के खुले स्रोत की स्थापना हो सके। इनमें मौलिक शब्दकोश की तैयारी और प्रकाशन, विश्वविद्यालय डाटाबेस का सृजन, अनुवाद और अनुवादकों के डाटाबेस, इण्टरेक्टिव वेबसाइट आदि का विकास सम्मिलित है।

भारतीय भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन में अनुवाद की आवश्यकता एवं महत्ता को ध्यान में रखते हुए दिल्ली विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों के सहयोग से डॉ. गार्गी गुप्ता ने वर्ष 1964 में **'भारतीय अनुवाद परिषद्'** की स्थापना की थी। इसे मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने विशेष तौर पर स्वीकृति प्रदान की है। अनुवाद की दिशा में विशेष रूप से काम करने के लिए यह संस्था वर्ष 1964 से अब तक लगातार सक्रीयता से कार्यरत है।

01 मार्च, 1971 को गृह मंत्रालय के अधीन **'केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो'** की स्थापना की गयी और केन्द्र सरकार के मंत्रालयों, विभागों, कार्यालयों, उपक्रमों आदि के असांविधिक प्रक्रिया

साहित्य का अनुवाद कार्य केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो को सौंपा गया। वर्तमान में केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय) के अधीनस्थ कार्यालय के रूप में कार्य कर रहा है। केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो अनुवाद प्रशिक्षण देने का कार्य लगातार कर रहा है। वस्तुतः केन्द्र सरकार के स्तर पर अनुवाद और अनुवाद प्रशिक्षण के लिए केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो ही एकमात्र संस्था है। इसका दायित्त्व निम्नवत है -

- अनुवाद कार्य से जुड़े अधिकारियों, कर्मचारियों को अनुवाद का प्रशिक्षण देना।
- प्रशासनिक शब्दावली और अभिव्यक्तियों में एकरूपता सुनिश्चित करना।
- भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों, विभागों, कार्यालयों, बैंकों, केन्द्र सरकार के स्वामित्व वाले तथा इनके नियन्त्रण के अधीन उपक्रमों, निगमों, स्वायत्त निकायों, संगठनों आदि के कोड, मैन्युअल, फार्मों आदि जैसे असांविधिक साहित्य और प्रशिक्षण सामग्री का अनुवाद निःशुल्क करना।

देश के विभिन्न प्रान्तों में स्थित केन्द्र सरकार के कार्यालयों में कार्यरत हिन्दी अधिकारियों / कर्मचारियों को अनुवाद प्रशिक्षण दिलाने की बढ़ती हुई माँग को पूरा करने के लिए दिल्ली, मुम्बई, बैंगलूरु और कोलकाता आदि में अनेक अनुवाद प्रशिक्षण केन्द्र खोले गये हैं।

६.४ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्र.१ 'केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो' की स्थापना कब हुई थी?

उत्तर– 01 मार्च, 1971 को गृह मंत्रालय के अधीन 'केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो' की स्थापना हुई थी।

प्र.२ 'भारतीय अनुवाद परिषद्' की स्थापना कब हुई थी?

उत्तर – डॉ. गार्गी गुप्ता ने वर्ष 1964 में 'भारतीय अनुवाद परिषद्' की स्थापना की थी।

प्र.३ भारतीय अनुवाद प्रशिक्षण संस्थान किस प्रकार का कोर्स चला रहे हैं?

उत्तर – ये संस्थान, कहीं अनुवाद प्रशिक्षण कोर्स डिप्लोमा के रूप में चला रहे हैं तो कहीं डिग्री के रूप में चला रहे हैं।

प्र.४ किसकी पहल पर देश में 'राष्ट्रीय अनुवाद मिशन' बनाया गया?

उत्तर – 'राष्ट्रीय ज्ञान आयोग' की विशिष्ट पहल पर देश में 'राष्ट्रीय अनुवाद मिशन' बनाया गया।

प्र.५ 'राष्ट्रीय अनुवाद मिशन' कितने बजट का बनाया गया?

उत्तर – 'राष्ट्रीय अनुवाद मिशन' लगभग 74 करोड़ रुपये बजटवाला बनाया गया।

प्र.६ 'राष्ट्रीय अनुवाद मिशन' का मुख्य काम क्या है?

उत्तर – 'राष्ट्रीय अनुवाद मिशन' का मुख्य कार्य विभिन्न भारतीय भाषाओं को अनुवाद के जरिये जन-जन तक पहुँचाना है।

प्र.७ 'राष्ट्रीय अनुवाद मिशन' के प्रथम चरण का उद्देश्य क्या है?

उत्तर – 'राष्ट्रीय अनुवाद मिशन' के प्रथम चरण में उच्च कक्षाओं जैसे; स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर करीब 15 से अधिक विषयों की अंग्रेज़ी में उपलब्ध पाठ्य-सामग्री का अनुवाद आठवीं अनुसूची के तहत सूचीबद्ध 22 भारतीय भाषाओं में किये जाने की योजना है।

प्र.८ अनुवाद प्रशिक्षण की बढ़ती माँग को पूरा करने के लिए प्रशिक्षण केन्द्र कहाँ खोले गये हैं?

उत्तर – अनुवाद प्रशिक्षण की बढ़ती माँग को पूरा करने के लिए मुम्बई, बैंगलूरु, दिल्ली और

कोलकाता आदि में अनेक अनुवाद प्रशिक्षण केन्द्र खोले गये हैं।

प्र.९ केन्द्र सरकार के स्तर पर अनुवाद प्रशिक्षण के लिए कौन-सी संस्था कार्यरत है?

उत्तर – केन्द्र सरकार के स्तर पर अनुवाद प्रशिक्षण के लिए केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो कार्यरत है।

प्र.१० 'केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय' की स्थापना कब और किसके अधीन हुई थी?

उत्तर - वर्ष 1960 में शिक्षा मंत्रालय के अधीन 'केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय' की स्थापना हुई थी।

६.५ दीर्घोत्तरी प्रश्न

प्र.१ अनुवाद प्रशिक्षण के भारतीय संस्थानों पर प्रकाश डालिए।

प्र.२ अनुवाद प्रशिक्षण के भारतीय संस्थान कौन-कौन-से हैं? उनके विषय में लिखिए।

प्र.३ अनुवाद प्रशिक्षण की महत्ता बताते हुए भारतीय प्रशिक्षण संस्थानों को रेखांकित कीजिए।

६.६ संदर्भ ग्रन्थ सूची

- प्रयोजनमूलक हिन्दी विनोद गोदरे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, १९९८
- प्रयोजनमूलक हिन्दी - डॉ. अंबादास देशमुख, शैलजा प्रकाशन, कानपुर, २००९
- प्रयोजनमूलक हिन्दी - डॉ. लक्ष्मीकांत पांडेय, डॉ. प्रमिला अवस्थी, कल्याण चंद्र चौबे, आशीष प्रकाशन, कानपुर, २००५

- अनुवाद - अमित कुश, सौम्य प्रकाशन, मुंबई, २०११
- अनुवाद कला - डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर
- प्रयोजनमूलक हिंदी की नयी भूमिका, कैलाश नाथ पांडे, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
- प्रयोजनमूलक हिंदी - डॉ. विनोद शाही, आधार प्रकाशन, हरियाणा
- प्रयोजनमूलक हिंदी - विनोद गोदरे, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
- प्रयोजनमूलक हिंदी नए संदर्भ, सुमित मोहन, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली
- प्रयोजनमूलक हिंदी के नए आयाम, डॉ. पंडित बन्ने, अमन प्रकाशन, कानपुर
- प्रयोजनमूलक हिंदी माधव सोनटक्के, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
- प्रयोजनमूलक मीडिया विमर्श सिद्धांत और अनुप्रयोग, राम लखन मीरा, के.के पब्लिकेशन्स, दिल्ली
- प्रयोजनमूलक हिंदी प्रयुक्त और अनुवाद, माधव सोनटक्के, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
- अनुवाद विज्ञान - भोलानाथ तिवारी, किताबघर प्रकाशन, दिल्ली
- अनुवाद विज्ञान की भूमिका - कृष्ण कुमार गोस्वामी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

*****

७

यंत्रानुवाद और अनुवाद का भविष्य

इकाई की रूपरेखा

७.० इकाई का उद्देश्य

७.१ प्रस्तावना

७.२ यंत्रानुवाद और अनुवाद का भविष्य

७.३ सारांश

७.४ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

७.५ दीर्घोत्तरी प्रश्न

७.६ संदर्भ ग्रन्थ सूची

७.० इकाई का उद्देश्य

इस इकाई का मुख्य उद्देश्य है –

१) विद्यार्थियों को यंत्रानुवाद औरमशीनी अनुवाद कौशल से अवगत कराना।

२) विद्यार्थियों को 'अनुवाद का भविष्य क्या है' इस तथ्य से अवगत कराना।

३) विविध भाषाओं में ज्ञान-विज्ञान को संभव बनाने हेतु विद्यार्थियों को प्रेरित करना।

७.१ प्रस्तावना

भाषा, मनुष्य को अन्य प्राणियों से भिन्न बनाती है।यह मानव समाज की पहली पहचान है। सामाजिक प्राणी मनुष्य, समाज में रहना चाहता है, एक-दूसरे के विचारों से अवगत होना, विचार आदान-प्रदान करना चाहता है, इसका एकमात्र माध्यम भाषा ही है। सभ्यता के आरंभिक कालमें मानव विभिन्न टोलों में बँटकर रहा करते थे। धीरे-धीरे विचारों का आदान-प्रदान शुरू हुआ। कभी धर्म प्रसार हेतु तो कभी अपने टोले की सीमा बढ़ाने हेतु विभिन्न समुदाय एकत्रित हो गए। यहाँ भाषायी विविधता के कारण अनुवाद की महत्ता एवं आवश्यकता में वृद्धि होने लगी। कालांतर में उपभोक्तावाद, बाजारवाद और व्यापारिक प्रतिस्पर्धा के कारण अपने उत्पाद को अधिक उत्कृष्ट सिद्ध करने हेतु अनुवाद को काफी बढ़ावा दिया गया। अनुवाद करना आसान कार्य नहीं है। यह एक दक्ष, कुशल अनुवादक के लिए अनुवाद-कौशल के साथ ही बौद्धिक, मानसिक, शारीरिक श्रमकी बड़ी माँग करता है, ऐसे में क्षमता से अधिक मानसिक-शारीरिक परिश्रम न कर पाने की स्थिति में अनुवाद एक दुष्कर कार्य प्रतीत होने लगा। आज इस बात को ध्यान में रखते हुए यांत्रिक अनुवाद को

अति आवश्यक माना जा रहा है। मशीनी अनुवाद को यंत्रानुवाद भी जाता है। यह अनुवाद मशीन या यंत्र के द्वारा किया जाता है। अतः कुछ लोग इसे मशीनी तथा कुछ लोग इसे यंत्रानुवाद कहते हैं।आजआधुनिक तकनीकसेसंपन्न कंप्यूटर और इंटरनेट की सहायता सेअनुवाद कार्य अत्यंत सहजता से किया जा रहा है।

कंप्यूटर के कारण शारीरिक परिश्रम में निश्चित रूप से कमी आयीहै। कंप्यूटर से अनुवाद करते समय न केवल शरीर को बल्कि बुद्धि को भी राहत मिलती है, इसीलिए यांत्रिक अनुवाद को लेकर चाहे जितने सवाल खड़े किये जाएँ, लेकिनआजइसकी आवश्यकता को हम नकार नहीं सकते हैं।पिछले चालीस वर्षों से कम्प्यूटर पर आधारित मशीनी अनुवाद हो रहे हैं। वैसे देखा जाए तो मशीनी अनुवाद की संकल्पना का आरंभ द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद यूरोप में हुआ। मशीनी अनुवाद का इतिहास पुराना है। आज यांत्रिक अनुवाद हमारे दैनिक व्यवहारिक जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। जीवन के तमाम क्षेत्रों में इसका उपयोग आवश्यक हो गया है। इनमें व्यापार एवं वाणिज्य, विज्ञापन, शिक्षा, प्रशासन, पत्रकारिता, पर्यटन, सांस्कृतिक कार्यकलाप, साहित्य आदि क्षेत्र शामिल हैं। संक्षेप में, यदि आज के युग को यांत्रिक अनुवाद का युग कहा जाए, तो अतिश्योक्ति नहीं होगी।

अनुवाद वास्तव में मूल कृति का प्रतिबिंब नहीं, अपितुउसका पुनःसृजन है। फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि अनुवाद का मूल रचना से स्वतंत्र अस्तित्व है। दरअसल, अनूदित सामग्रीको मूल सामग्री के सहपाठ के रूप में होना चाहिए, क्योंकिअनुवाद भाषा और समाज के लिए एक ऐसा सेतु है, जो समाज के बाहर-भीतर के बीच एक गतिशील रचनात्मक संबंध स्थापित करता है। आज वैश्वीकरण, बाजारीकरण और उपभोक्तावादी युग में कोई भी राष्ट्र विश्व स्तर पर घटित हो रही घटनाओं को जानने-समझने, एक दूसरे से परस्पर राजनीतिक,सांस्कृतिक,व्यापारिक-व्यावसायिकसम्बन्ध बनाने के लिए एवं विकास की रफ्तार पकड़ने के लिए अनुवाद एवं यांत्रिक अनुवाद के महत्त्व को समझने लगा है। इस दिशा में काफ़ी कार्य हो रहा है और अभी काफ़ी कार्य होना बाकी है। इस बात से कदापि इनकार नहीं किया जा सकता कि अनुवाद समेत यांत्रिक अनुवाद का भविष्य उज्ज्वल है।

७.२ यंत्रानुवाद और अनुवाद का भविष्य

वर्तमान समयमेंअनुवाद का क्षेत्र बहुत व्यापक होता जा रहा है। इस क्षेत्र में नवीन सुधार तथाप्रयोगभीजारी हैं।यन्त्र से होनेवाले अनुवाद को यंत्रानुवाद अथवा मशीनी अनुवाद कहा जाता है। यहअनुवाद प्रायः कम्प्यूटर, मोबाइल, इंटरनेट इत्यादि द्वारा किया जाता है। कम्प्यूटर और मोबाइल के साथ अनुवाद के सॉफ़्टवेयर बनानेवाला मनुष्य ही है और मनुष्य ने ऐसी तकनीक विकसित करने का प्रयास किया है, जिसके अन्तर्गत स्त्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में किसी पाठ को मशीनी अथवा यन्त्र के माध्यम से अनुवाद किया जाता है। मशीनी अनुवाद के प्रयास कई वर्षों से हो रहे हैं अब वर्तमान में जाकर इसमें थोड़ी-बहुत सफलता हमें प्राप्त हो रही है।मशीनी अनुवाद, अनुवाद की एक ऐसी यान्त्रिक कोशिश है, जिसके द्वारा अनुवाद की विविध सम्भावनाओं को तलाशा जा रहा है, किन्तु अभीयह शैशवावस्था या बाल्यावस्था तक ही यहतकनीक पहुँच पायी है। इस तकनीक के लिए भिन्न-भिन्न तरहके सॉफ़्टवेयर तैयार किये जा रहे हैं। जितनी भाषाओं के अनुवाद करने हैं, उतने स्त्रोत और

लक्ष्य भाषाओं के कोश तैयार किये गये हैं और इसी के आधार पर इसके प्रोग्राम बनाये गये हैं।

द्वितीय महायुद्ध के पश्चात यंत्र द्वारा अनुवाद करने की कल्पना सामने आई।इससे अनुवाद के क्षेत्र में मानों क्रांति-सी आ गई। द्वितीय महायुद्ध की समाप्ति के तत्काल बाद यूरोप में यांत्रिक अनुवाद (मशीनी अनुवाद) आरंभ हुआ। इसका सबसे पहला प्रयोग सेना से संबंधित सूचनाओं का अनुवाद करने के लिए किया गया, बाद में इसकी संभावनाओं का उपयोग अन्य क्षेत्रों में किया जाने लगा।

वर्ष1933 में सबसे पहले एक रूसी इंजीनियरपोत्रोविच स्मिरनोव त्रोयांस्कि ने अनुवाद करने वाले एक यंत्र का पेटेंट कराया था। यह यंत्र कम्प्यूटरयुक्त नहीं था। उसके लगभग दस साल के बाद कम्प्यूटर के आधार पर अनुवाद करने वाला यंत्र बनाने की दिशा में कार्य प्रारंभ हुआ। इसमें सबसे पहला नाम लंदन के एक कॉलेज के रीडर डॉ. ए. डी. बूथ का लिया जाता है। डॉ. बूथ ने 1946 में अपने सहयोगी वीवर से परामर्श करके इसके लिए एक सुव्यवस्थित कार्यक्रम तैयार किया औरअपने अनुसंधानों से इस दिशा में काम को आगे बढ़ाया।अनुवाद के क्षेत्र में मशीनी क्रांति-सी आई। मशीन का प्रयोग अनुवाद कार्य करने के लिए, व्यवहार्थ पद्धति विकसित करने के लिए व्यापक स्तर प्रयास किया गया। तकनीकी और औद्योगिक प्रगति के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और वाणिज्य का विस्तार होने लगा। व्यापार और वाणिज्यिक विस्तार के लिए अनुवाद अपरिहार्य हो गया। बहुर्राष्ट्रीय कंपनियों की स्थापना से राष्ट्रीय सीमाएँ पार हो गयीं। प्रौद्योगिकी की व्यापकता से उत्पादन में अपार वृद्धि हुई, विभिन्नआर्थिक समुदायों के साझा बाजार विकसित हुए। परिणामस्वरूप अविश्सनीय रूप से व्यापक दर पर आंकड़े तथा सूचनाएँ एकत्र की जाती हैं। इसऔद्योगिक क्रांति ने अनुवाद की आवश्यकता को अनिवार्य बना दिया है, साथ ही उसके लिए औजार भी प्रदान किए हैं। जब आंकड़े राष्ट्रगत सीमाओं को पार कर जाते हैं तो अनुवाद अनिवार्य हो जाता है और ऐसी स्थिति में हमतकनीकी संभावनाओं की ओर देखते हैं। आधुनिक उच्च गति प्रोसेसिंग, सैटेलाइट तथा माइक्रो प्रोसेसर्स के द्वारा सूचनाओं का संचयन, प्रेषणबड़ी मात्रा में और अविश्वसनीय गति से संभव हुआ है।

मशीनी अनुवाद की व्यवहार्य पद्धति के विकास संबंधी प्रयास तथा प्रयोग करके अनेक देशों में कम्प्यूटर अनुवाद कीअनेक प्रणालियाँ विकसित की गई हैं क्योंकि संघीय जर्मन गणतंत्र अथवा डेनमार्क या जापान, फ्रांस,चीन, कोरिया आदिजैसे निर्यातक देशों को अपनी उत्पाद संबंधी सूचना विश्व-बाजार के ग्राहकों तक पहुँचानेके लिए तथा उन उत्पादों की उपादेयता के प्रचार-प्रसार के लिए अनुवाद नितांत आवश्यक हो गया। जिन देशों की भाषाएँ व्यापक रूप से दुनिया भर में नहीं बोली जातीं, उन सभी के लिए व्यापार और वाणिज्य में अनुवाद की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। अतः ये तमाम देश उच्च स्तरीय अनुवाद के लिए तकनीकी सुविधाएँ विकसित करने की आवश्यकता काफी पहले से महसूस करने लगे थे और इस दिशा में निरंतर प्रयत्नशील रहे। अब वे मानने लगे हैं कि उत्पादन संबंधी लेखन बहुभाषिक होने के कारण अनुवाद की तेजगति तथा एकरूपता आवश्यक है। इसके लिए अत्यधिक समाधान कम्प्यूटर द्वारा स्वचालित अनुवाद से संभव हो सकता है। छठे और सातवें दशक के मध्य तक यूरोप में यांत्रिक अनुवाद के प्रति गहरा विश्वास तथा व्यापक आशाएँ थीं। कई देशों में कम्प्यूटर प्रणालियाँ विकसित की गयीं। अमेरिका में डॉ. टोमा द्वारा विकसित

'सिस्ट्रॉन सिस्टम' इसी प्रकार की प्रणाली है। यह मूल रूप से अंग्रेजी तथा रूसी भाषा में अनुवाद करती है। इसकी गति 3,00,000 शब्द प्रति घंटे की है। लेकिन साल 1966 की प्रसिद्ध एल्पैक (Alpac) रिपोर्ट ने यंत्रानुवाद की दिशा में विकास तथा चिंतनधारा को ही बदल दिया।

प्रसिद्ध एल्पैक (Alpac) रिपोर्ट ने मशीनी अनुवाद की खामियों की ओर ध्यान आकृष्ट कराया। रिपोर्ट ने इस बात पर जोर दिया कि बचपन से जो भाषागत संस्कार हमारे भीतर विकसित हुए हैं और भाषा को हम जिस रूप में इस्तेमाल करते चले आ रहे हैं उसका इस्तेमाल कम्प्यूटर किस प्रकार करता है यह निश्चित नहीं। यंत्रानुवाद की सीमाओं के प्रति जागरूकता से अनुसंधान की नई दिशाएँ खुलीं और नई विधाएँ सामने आई जिनमें अनुपयुक्त भाषा विज्ञान तथा कम्प्यूटर भाषा विज्ञान शामिल है। 1966 तक विकसित सिस्टमों की अपर्याप्तताओं के लिए कभी-कभी तो उपलब्ध कम्प्यूटरों को दोषी ठहराया गया और कभी मशीनी कोशों अर्थात् कम्प्यूटर में संग्रहीत शब्दावली की त्रुटियों को।

एल्पैक रिपोर्ट ने मशीनी अनुवाद पर जो आघात किया उसने अनेक विश्वविद्यालयों को मशीनी अनुवाद की समस्याओं के अध्ययन के लिए प्रेरित किया। कई उन्नत सिस्टम विश्व बाजार में काफी दावे के साथ प्रस्तुत किए गए। परंतु सभी अध्ययनों, अनुसंधान विवरणों तथा सिस्टमों संबंधी दावों में यह माना गया कि उक्त प्रणालियों का उद्देश्य अबउस श्रेणी का उच्च स्तरीय अनुवाद नहीं है जिसके लिए अनुवर्ती श्रम अपेक्षित है, अपितु उनका उद्देश्य तो सूचना के प्रयोजन मात्र के लिए अनुवाद करनाहै। यहाँ तक कि जो लोग कुछ समय पूर्व तक मशीनी अनुवाद का संपादन अनिवार्य मानते थे वह भी इसे 'यूटोपिया' (आदर्श कल्पना) स्वीकार करने लगे। द्वितीय विश्व-युद्ध के बाद जब से मशीनी अनुवाद विकसित हुआ, तबसे इस क्षेत्र के विकास में लगे लोग इस क्षेत्र के लिए निर्धारित लक्ष्य की संदिग्धता के प्रति पहली बार सचेत होते प्रतीत हुए। किंतु यह समस्या का समाधान न होकर एक प्रकार का समझौता था जो मजबूरी में किया गया प्रतीत होता था, क्योंकि अनुवाद के विभेद-उच्चस्तरीय और सूचनापरक अनुवाद करके भी हम किसी खास लक्ष्य पर नहीं पहुँचते अपितु सुविधापरक दृष्टिकोण अपना लेते हैं और फिर स्तरीयता इतनी नगण्य भी नहीं है कि उसे त्याग ही दिया जाए। हाँ, मात्र सूचनापरक अनुवाद से कुछेक प्रयोजन की सिद्धि हो सकती है। जैसे कुछ अमेरिकी एजेंसियाँ खासतौर से मिलटरी सेक्टर के लिए सूचना के प्रयोजन के लिए पूर्णतया स्वचालित अनुवाद की पद्धति अपनानेलगीं। इसका इस्तेमाल विदेशी-मूलतया रूसी भाषा में प्रकाशित मुख्यतया वैज्ञानिक तकनीकी लेखों के सार का अनुवाद प्रस्तुत करने के लिए किया जाता है ताकि यह अनुवाद शोधकर्ताओं, वैज्ञानिकों और सेना कर्मिकों को प्रदान किया जा सके और उन्हें उक्त क्षेत्र में अन्यत्र हो रहे विकास की जानकारी का अवसर प्रदान किया जा सके। ऐसे मशीनी अनूदित सार के आधार पर आमतौर पर यह निश्चित किया जाता है कि क्या संपूर्ण लेख का अनुवाद अपेक्षित है। यदि अपेक्षित होता है तो किसी अनुवादक से उसका अनुवाद करा लिया जाता है। पूर्ण लेख के अनुवाद में मशीन का भरोसा नहीं किया जा सकता क्योंकि कभी-कभी तो मशीनी अनुवाद का स्तर प्राथमिक सूचना प्रदान करने के लिए भी उपयुक्त नहीं होता।

भारत में कम्प्यूटर अनुवाद के क्षेत्र में प्रयास अपेक्षाकृत देर से शुरू हुए। लगभग 20 वर्षों से कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी के यहाँ आने के बाद भी काफी समय तक भारतीय भाषाओं का इससे

कोई संपर्क नहीं हुआ। यूरोपीय भाषाओं में रोमन लिपि के प्रयोग के कारण अधिकांश भाषाओं के बीच मशीनी अनुवाद आसानी से संभव था। भारत में कम्प्यूटर विज्ञान के आ जाने के बाद से भारतीय भाषाओं की लिपि और भाषिक संरचना को कम्प्यूटर से जोड़कर ही अनुवाद का प्रयोग संभव हो सकता था, इसलिए इस क्षेत्र में थोड़ा समय लगा। तमिल विश्वविद्यालय ने जब तमिल और रूसी भाषाओं के बीच अनुवाद के लिए कम्प्यूटर का प्रयोग किया तो रोमन लिपि को ही अपनाया। कम्प्यूटर के क्षेत्र में भारतीय भाषाओं का उपयोग 1980 के बाद ही शुरू हुआ। कई देशों की कंपनियों ने ऐसे कम्प्यूटर बनाए जो द्विभाषिक अथवा बहुभाषिक सामग्री प्रिंट कर सकते हैं। हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में शब्द संसाधन की सुविधा से प्रशासनिक कार्यों-सूचना संग्रहण करने, रिपोर्ट तैयार करने, पत्र तैयार करने आदि के काम में काफी सुविधा हुई है। इस दिशा में सी. एम. सी. द्वारा तैयार किया गया 'लिपि' और डी. सी. एम. द्वारा तैयार किया गया 'सिद्धार्थ' नामक शब्द संसाधन कार्यक्रम काफी व्यावहारिक और सफल सिद्ध हुआ।

कम्प्यूटर एक मशीन है। मशीन की कोई भाषा नहीं होती। उसका कंपायलट किसी भाषा में दिए गए आदेश को मशीन द्वारा समझी जा सकने वाली भाषा (शून्य '0' और एक '1' अंकों की भाषा) में बदलता है।

भाषा के क्षेत्र में कम्प्यूटर के उपयोग के दो प्रमुख क्षेत्र हैं- आंकड़े संसाधन और शब्द संसाधन। आंकड़े संसाधन में दो प्रकार के कार्य शामिल होते हैं- प्रोग्राम की भाषा और प्रोग्राम चलाते समय उसमें भरे जाने वाले आंकड़े। प्रोग्राम की भाषा का मतलब होता है प्रोग्राम में दिए जाने वाले आदेश। अभी यह आदेश अंग्रेजी में ही दिए जाते हैं। किंतु इससे इतना तो स्पष्ट ही है कि अंग्रेजी में बने प्रोग्राम अंग्रेजी भाषा की जरूरतों के अनुरूप होते हैं। यदि हम भारतीय भाषाओं का कम्प्यूटर में ज्यादा से ज्यादा उपयोग करना चाहते हैं तो कम्प्यूटर में प्रोग्राम हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में करने की व्यवस्था होनी चाहिए। जब तक यह कार्य शुरू नहीं होगा, तब तक भारतीय भाषाएँ-कम्प्यूटर के क्षेत्र में लगातार हो रहे नए से नए विकास से नहीं जुड़ पाएंगी। प्रोग्राम जिस भाषा में होगा उसी भाषा में दिए गए आदेश मशीन की भाषा में संभव होगा। इसीलिए भारत में कम्प्यूटर से अनुवाद की बातचीत करने से पहले हमें कम्प्यूटर तंत्र को भारतीय भाषाओं में ज्यादा से ज्यादा प्रयोग की संभावनाओं का विस्तार करना होगा।

कम्प्यूटर से अनुवाद के क्षेत्र में यहाँ कई प्रयास हुए हैं उनमें यूनिवर्सल डिजिटल रिसर्च इन्स्टीट्यूट के निदेशक आबासामा के प्रयास की चर्चा भी उपयुक्त होगी।अनुवाद-कार्य डिजिटल कम्प्यूटर के द्वारा किया जाता है। 'यूनिवर्सल डिजिटल कम्यूनिकेशन रिसर्च इन्स्टीट्यूट के निदेशक आबासामा ने अंकीय कोश की विस्तृत योजना बनाई है। प्रत्येक शब्द वाक्यों का अंकीय कोड माना गया है। उस शब्द का परिवर्तन इस कोड में हो जाएगा। यह प्रक्रिया सभी भाषाओं में समरूपी पैटर्न का रूपांतरण करने में सहायक है। इस प्रक्रिया को यों समझाया जा सकता है-

हिंदी - मैं जाता हूँ में- आबासामा कोड 111 711 851840

कन्नड़ - नानु हो गुत्त ने नानु

इस तरह आबासामा भाषा धातु और व्याकरणिक इकाई के अंकीय कोडों पर आधारित है। वाक्य में प्रयुक्त शब्दों को अर्थ अथवा उच्चारण के आधार पर अंकीय कोडों में रखा जा सकता है। इन अंकीय कोडों को एक या एक से अधिक भागों में रखा जा सकता है। ये भाग स्थान की दूरी से अलग किए जाएँगे। उदाहरण के लिए-

अंग्रेजी वाक्य - आबासामा भाषा - हिंदी भाषा

Please come - 72082880 8518501 - कृपया आना

इस पद्धति के अनुसार एक भाषा से दूसरी भाषा में शब्द का अंतरण अथवा भाषांतरण करने के लिए पहले से आबासामा भाषा अंकीय कोडों में अंतरित किया जाता है फिर उस भाषा में इस प्रकार संदेश को विभिन्न भारतीय भाषाओं में लिप्यंतरित कर दिया जाता है।

यांत्रिक (मशीनी) अनुवाद: समस्याएँ:

मशीनी अनुवाद, अनुवाद की एक यान्त्रिक कोशिश है, जिसके माध्यम से अनुवाद की सम्भावनाओं को तलाशा जा रहा है, परन्तु अभी यह तकनीक प्राथमिक अवस्था या उससे थोड़ी-सी अधिक अवस्था तक ही पहुँच पायी है।वर्ष१६६६ में प्रकाशित हुई एल्पैक रिपोर्ट ने मशीनी अनुवाद में आने वाली समस्याओं को उजागर कर इस प्रकार के अनुवाद पर प्रश्नचिह्न लगा दिया। एल्पैक ने यह सिद्ध कर दिया कि कंप्यूटर द्वारा उच्चस्तरीय अनुवाद संभव नहीं। मशीन द्वारा किए जाने वाले अनुवाद में लक्ष्य की संदिग्धता पायी जाती है। लक्ष्य की संदिग्धता कंप्यूटर अनुवाद की अहम समस्या है। इस संदर्भमें बड़ा अजीब समाधान खोजा गया। अनूद्य सामग्री के दो प्रकार बताए गए-१) उच्चस्तरीय २) सूचनापरक। माना गया कि उच्चस्तरीय, रचनात्मक अनुवाद के लिए कंप्यूटर का प्रयोग सार्थक नहीं कहा जायेगा, लेकिन सवाल जहाँ सूचनापरक सामग्री का है, अनुवाद में कंप्यूटर अत्यधिक उत्कृष्ट कार्य कर सकता है। लेकिन इस बात को महज एक समझौता माना जाता है। हाँ! इस बात में कुछ हद तक सच्चाई अवश्य है कि सूचनापरक सामग्री के अनुवाद के लिए कंप्यूटर लाभदायक सिद्ध होता है।साहित्य अनुवादों के अन्तर्गत मशीन से किया गया अनुवाद इतना अधिक सफल नहीं हो पाया, क्योंकि मशीन अभी तक भावों को समझ नहीं पायी है, अलंकारों, लक्षणा, व्यंजना शैलियों, व्यक्तित्व भिन्नता और विशेष सन्दर्भ को वह ज्ञात नहीं कर पाती है। इस कारण साहित्यिक अनुवाद मशीन द्वारा विफल सिद्ध हो जाते हैं।

रचनात्मक लेखन संवेदनापरक होता है। इसमें निहित अर्थोंका पता लगाना कठिन कार्य है। रचनात्मक लेखन में एक शब्द के साथ कई अर्थ जुड़े हुए होते है जो सटीक अभिव्यक्ति के लिए आवश्यक माने जाते हैं। व्यावसायिक लेखन सरल होता है। उसके अनुवाद की प्रक्रिया भी सरल होती है। रचनात्मक लेखन इसके ठीक विपरीत माना जायेगा। इसके अनुवाद की प्रक्रिया बड़ी ही कठिन होती है। विश्वस्तर पर व्यावसायिक लेखन यदि नब्बे प्रतिशत किया जाता है तो रचनात्मक लेखन की मात्रा दस प्रतिशत मानकर चलनी होगी। स्वाभाविक है, अनूद्य सामग्री की उपयोगिता और आवश्यकता व्यावसायिक क्षेत्र में ही मानी जाती है। किसी रचनात्मक कृति का सही अनुवाद करने कासामर्थ्य कंप्यूटर में नहीं होती। विषय का ज्ञान, भाषा का ज्ञान, अनुभव, भावात्मक अभिव्यक्ति की गहराई जान पाना आदि किसी भी कसौटी पर कंप्यूटर सही नहीं उतर सकता। पाठ-पठन, पाठ-विश्लेषण, बोधन, अंतरण,

समायोजन आदि अनुवाद-प्रक्रिया के अत्यंत महत्त्वपूर्ण सोपानों को कंप्यूटर कैसे समझ सकता है?सबसे मुख्य बात यह कि कंप्यूटर मानवी भाषा को समझ ही नहीं सकता। मानवी भाषा में कुछ विशेषताएँ ऐसी होती हैं, जिन्हें केवल मानव ही समझ सकता है जैसेकिअनेकार्थता, पदीय अपरिशुद्धता, अपूर्णता, व्याकरणिक अशुद्धता; इन्हें निम्नलिखित रूप से देखा जा सकता है;

अनेकार्थता:

मानवी भाषा में अनेकार्थता हुआ करती है। एक ही शब्द या वाक्य में अनेक अर्थ निहित होते हैं। कई बार वाक्य अस्पष्ट होते हैं। इस स्थिति में मानव संदर्भों को ध्यान में रखकर शब्द या वाक्य में स्थित अर्थ का योग्य बोधन कर लेता है। कंप्यूटर के लिए यह संभव नहीं होता। कंप्यूटर की अपनी बुद्धि नहीं होती, अतः उसके लिए स्वयं कोई निर्णय लेना असंभव कार्य है।

‘I hit the man with the hammer’.

इस वाक्य में 'the man' और 'the hammer' को एकसाथ न रखने से अर्थ मिलता है 'मैंने हथोड़े से उस आदमी को मारा'। 'I hit’और 'the man with the hammer' को एक साथ रखने से यह बोध होता है कि 'जो आदमी हाथ में हथौड़ा लिये था, मैंने उसे मारा'।इस प्रकार की अनेकार्थता को समझना जहाँ मनुष्य के लिए भी कठिन है, वहाँ कंप्यूटर द्वारा इसे सही समझने की संभावना बहुत ही कम होती है या फिर यूँ कह लीजिए कि कंप्यूटर द्वारा इसे समझना बिल्कुल असंभव है।

पदीय-अपरिशुद्धता:

कई बार वाक्यों में प्रयुक्त किए जाने वाले शब्द स्थान, काल, वातावरण के साथ भिन्न-भिन्न अर्थ प्रदान करते हैं। जहाँ मानव इसे समझने में कठिनाई महसूस करता है वहाँ कंप्यूटर से हम इसे समझने की उम्मीद भी नहीं कर सकते।

‘He has been waiting in doctor's clinic for a long time’.

वह अस्पताल में काफी देर तक डॉक्टर की प्रतीक्षा करता रहा।

‘The crops died as it has not rained for a long time’.

लंबे अरसे तक (कई दिन) पानी न बरसने के कारण फसलें बेजान हो रही थीं।

उपर्युक्त दोनों वाक्यों में 'Long time' का प्रयोग हुआ है जो भिन्न-भिन्न अवधियाँ बताता है। कंप्यूटर में 'फीड' किए हुए शब्दों में से कौन-सा पर्याय योग्य है, यह कंप्यूटर नहीं समझ सकता ।

अपूर्णता: यह आजकल लेखकों की शैली ही बनती जा रही है। प्रायः पाठक वर्ग को अनुमान लगाने की अनुमति देकर अपनी बात संपूर्ण रूप से पूर्ण नहीं करते। जैसे "केशव कल खाना खाने के लिए होटल गया। वहाँ उसने खाना मंगवाया। जब वह बिल देने लगा तो पता चला कि पैसे कुछ कम है।" इसमें केशव के खाना खाने, न खाने का कहीं उल्लेख नहीं है लेकिन

पाठक अनुमान लगा लेता है कि बिल खाना खा चुकने पर ही अदा किया जाता है। यह अनुमान लगाने में मानव सक्षम है, कंप्यूटर नहीं।

व्याकरणिक अशुद्धता:

वर्तनीगत त्रुटियाँ, शब्द व्युतक्रम, अशुद्ध वाक्य रचना, सही-गलत चिह्न आदि के होते हुए भी आदमी पाठ को समझ ही लेता है। कंप्यूटर के लिए यह कठिन है।

प्रत्येक भाषा में ऊपर वर्णित बातें विद्यमान होती हैं। इन्हें हम भाषा के गुण या दोष नहीं कहेंगे, विशेषताएँ कहेंगे। मनुष्य कभी अध्ययन के सहारे तो कभी अभ्यास के साथ अर्थ-संधान कर लेता है।प्रसंग क्या है (context) देखकर मनुष्य पाठ में स्थित अनेकार्थता को समझ सकता है। स्थिति क्या है (situation) देखकर अपरिशुद्धता का निवारण किया जा सकता है। पाठ में मूल लेखक द्वारा क्या आकांक्षाएँ अभिव्यक्त की गई हैं (expectations) यह जानकर ही अपूर्णता के दोष को हटाया जा सकता है।प्रतिरूप पहचान अर्थात् recognition of pattern के आधार पर व्याकरणिक अशुद्धता को मिटाया जा सकता है।यह सारे उपाय खोजने या समाधान करने की क्षमता मनुष्य में हीहोती है। लेकिन एक कंप्यूटर से इतनी समझदारी की उम्मीद करना व्यर्थ है।

यांत्रिक/कंप्यूटर अनुवाद:

सूचनापरक सामग्री की दृष्टि से अनुवाद के कई क्षेत्र ऐसे हैं जहाँ यांत्रिक अनुवाद बहुत हद तक कारगर सिद्ध हो रहा है। सूचनापरक तथा आदेशात्मक पाठ एक ऐसा ही क्षेत्र है जिसमें यांत्रिक अनुवाद द्वारा काम चलाया जाता है। मशीनी अनुवाद वहाँ कभी उपयुक्त सिद्ध नहीं होता, जहाँ गहरी अर्थवत्ता का मामला हो।यांत्रिक अनुवाद वहीं उपयुक्त सिद्ध होता है जहाँ विषय क्षेत्र बहुत सीमित हो। यह ऐसे क्षेत्र में उपयुक्त सिद्ध होता है जहाँ निरूपणों की पुनरावृत्ति होती हों। यह ऐसे क्षेत्र में उपयुक्त सिद्ध होता है जहाँ बहुअर्थपरक शब्दावली उपलब्ध नहीं होती। मशीनी अनुवाद ऐसे क्षेत्र में उपयुक्त सिद्ध होता है जहाँ शब्दावली सीमित होती है।आश्चर्य की बात यह है कि विश्वभर में नब्बे प्रतिशत साहित्य सूचनात्मक होता है और दस प्रतिशत साहित्य रचनात्मक होता है। इस दृष्टि से यांत्रिक अनुवाद के लिए काफी संभावनाएँ हैं। रचनात्मक साहित्य के अनुवाद में यांत्रिक अनुवाद विशेष उपयुक्त नहीं है। कंप्यूटर द्वारा सूचनापरक सामग्री का अनुवाद बहुत हद तक संभव है। इस प्रकार के अनुवाद में भी स्तरीयता लाने हेतु इसका संपादन किया जाना आवश्यक है।

यांत्रिक अनुवाद का संपादन:

इस बात को लेकर सभी विद्वान सहमति जताते हैं कि मशीनी अनुवाद संपन्न हो चुकने पर इसका संपादन अत्यंत आवश्यक है। कई विद्वान मानते हैं कि मानव और कंप्यूटर दोनों केद्वारामिलकर किया हुआ अनुवाद उत्कृष्ट होता है।अब यह बात सिद्ध हो चुकी है कि सिट्रान सिस्टम से भी यदि अनुवाद किया जाए तो अधिक से अधिक ७५% अनुवाद संभव है। यदि उच्चस्तरीय अनुवाद अपेक्षित है तो उसका संपादन अनिवार्य है। अनुवाद परिणाम Translation Output की उच्च गुणवत्ता के लिए संपादन आवश्यक है। इसमें मानव विभिन्न गवाक्षों (windows) में झांककर स्रोतपाठ और लक्ष्यपाठ की तुलना कर लें। इस प्रकार संपादन करते हुए अंतरण ठीक तरह से हुआ है या नहीं, इस बात का ध्यान भी रखा

जाना चाहिए। संपादन में शब्द का क्रम भी बदला जा सकता है। दो छोटे वाक्यों से एक ही बड़ा वाक्य बनाना या फिर एक बड़े वाक्य के दो या अधिक छोटे-छोटे वाक्य बनाना आदि प्रकार से अनुवाद में गुणवत्ता बढ़ाने का काम किया जा सकता है। कई बार कंप्यूटर में स्थित कुंजी का प्रयोग बहुप्रयुक्त शब्दों के निवेश के लिए कर सकते हैं। मशीनी कोशों का संपादन कर उन्हें सुधारा जा सकता है। मानवी दिमाग और मशीनी कार्यक्षमता के बल पर अत्यंत उत्कृष्ट अनुवाद संभव है। अच्छे अनुवाद के लिए संपादन के पक्ष पर ध्यान देना आवश्यक है लेकिन संपादन का यह कार्यअत्यंतकठिनमाना जाता है।

७.३ सारांश

अतः उपर्युक्त विवेचन के उपरान्त निश्चित तौर पर कहा जा सकता है कि अनुवाद की बढ़ती आवश्यकता के अनुसार अनुवाद के विभिन्न रूप, प्रकार, क्षेत्र और साधन हमारे समक्ष आये हैं। सभी प्रकार के अनुवाद अपनी-अपनी गुणवत्ता के साथ अपने-अपने लक्ष्य को दर्शाते हैं। वर्तमान दौर में यंत्रानुवाद की महत्ता बढ़ती जा रही है।यन्त्र से होनेवाले अनुवाद को यंत्रानुवाद अथवा मशीनी अनुवाद कहा गया।द्वितीय महायुद्ध के पश्चात यंत्र द्वारा अनुवाद के क्षेत्र में बड़ी क्रांति-सी आई। द्वितीय महायुद्ध की समाप्ति के तत्काल बाद यूरोप में यांत्रिक अनुवाद (मशीनी अनुवाद) आरंभ हुआ। इसका सबसे पहला प्रयोग सेना से संबंधित सूचनाओं का अनुवाद करने के लिए किया गया। यह अनुवाद कुछ ही वाक्यों का था और सफल हो गया। यहीं से अनुवाद के लिए कंप्यूटर के प्रयोग की व्यवहार्य पद्धतियों की खोज आरंभ हो गयी। यांत्रिक अनुवाद का क्षेत्र केवल सेना तक सीमित नहीं रहा, बल्कि व्यापार-वाणिज्य, शिक्षा, चिकित्सा, तकनीकी आदि क्षेत्रों में भी इसका प्रयोग होने लगा।जापान, जर्मनी, डेन्मार्क जैसे देश जो बहुत बड़े निर्यातक हैं, लेकिन जिनकी भाषा दुनिया भर में बोली नहीं जाती, इन देशों के लिए विश्व बाजार में अनुवाद के अलावा कोई विकल्प नहीं था। अपने उत्पाद की उपादेयता सिद्ध करने के लिए वे अनुवाद का ही सहारा लेने लगे। इन उत्पादों को लेकर जो लेखन किया जाता था उसके अनुवाद में गति व एकरूपता अपेक्षित थी। मानव द्वारा किए गए अनुवाद में गति और एकरूपता की संभावना कंप्यूटर की तुलना में कम ही रहती है। इसके लिए सर्वाधिक सुलभ विकल्प यांत्रिक अनुवाद सिद्ध हुआ।इस दृष्टि से यांत्रिक अनुवाद लाभप्रद प्रतीत होने लगा। यंत्र द्वारा स्वचालित अनुवाद (Automatic Translation) इसका सर्वोत्तम समाधान माना जाने लगा। स्वाभाविक ही है, यांत्रिक अनुवाद के प्रति यूरोप में दृढ़ विश्वास और आशाएँ व्यक्त की गईं। कई कंप्यूटर-प्रणालियाँ विकसित की गईं। यह बात बीसवीं सदी के छठें और सातवें दशक की है।

इस सारी सोच तथा अवधारणाओं को धक्का पहुँचाती एक रिपोर्ट एल्पैक ने १६६६ में प्रस्तुत की। इस रिपोर्ट ने मशीनी अनुवाद की सीमाओं को सामने लानेकाअत्यंतमहत्त्वपूर्ण कार्यकिया। यंत्रानुवाद की सीमाएँ स्पष्ट करती इस रिपोर्ट ने बताया कि मानवी भाषा बहुत ही गहन विषय है। इसके कई सारे पहलू हैं। इस भाषा को संपूर्ण रूप से जानना, उसके अभिधार्थ, लक्ष्यार्थ, व्यंग्यार्थ जानना कई बार तो मानव के लिए भी संभव नहीं होता। इस स्थिति में यंत्र (कंप्यूटर) द्वारा उनका अर्थ जानना, समझना और अनुवाद करना एक दुष्कर कार्य है। कंप्यूटर मानवी भाषा उतनी ही समझता है जितना एक चार साल का बच्चा समझता है। तब से लेकर आज तक इस क्षेत्र के संशोधक यांत्रिक अनुवाद को संपूर्णता प्रदान करने के प्रयास में जुटे हुए हैं।

इक्कीसवीं सदी में यांत्रिकअनुवाद कम्प्यूटर, मोबाइल, इंटरनेटइत्यादि द्वारा किया जाता है। कम्प्यूटर और मोबाइल के साथ अनुवाद के सॉफ़्टवेयर बनानेवाला मनुष्य ही है और मनुष्य ने ऐसी तकनीक विकसित करने का प्रयास किया है, जिसके अन्तर्गत स्त्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में किसी पाठ को मशीनी अथवा यन्त्र के माध्यम से अनुवाद किया जाता है। मशीनी अनुवाद के प्रयास कई वर्षों से हो रहे हैं, अब वर्तमान में जाकर इसमें थोड़ी-बहुत सफलता हमें प्राप्त हो रही है। मशीनी अनुवाद, अनुवाद की एक यान्त्रिक कोशिश है, जिसके माध्यम से अनुवाद की सम्भावनाओं को तलाशा जा रहा है, परन्तु अभी यह प्राथमिक अवस्था या उससे थोड़ी सी अधिक अवस्था तक ही यहतकनीक पहुँच पायी है। इस तकनीक के लिए विभिन्न प्रकार के सॉफ़्टवेयर तैयार किये हैं। जितनी भाषाओं के अनुवाद करने हैं, उतने स्त्रोत और लक्ष्य भाषाओं के अर्थात् द्विभाषी कोश तैयार किये गये हैं और इसी के आधार पर इसके प्रोग्राम बनाये गये हैं। इसमें अनुवाद सन्तुलित शब्द, उनके अन्य अर्थों के संकेत, शब्द परिवर्तन और शब्द रचना के संकेत अर्थात् रूप भेद, वाक्य सम्बन्धी सूचनाएँ, अर्थ-भेद की सूचनाएँ, एक शब्द के साथ अन्य प्रयोज्य शब्दों के संकेत, संयुक्त शब्दों के प्रयोग के संकेत, आदि जानकारी दी जाती हैं। जिस पाठ में अर्थ निश्चित और एक हो अर्थात् वैज्ञानिक, तकनीकी, प्रशासनिक, विधिक आदि सूचनापरक अनुवाद क्षेत्रों में संगणक का अच्छा उपयोग होता है। पाठ जितना स्पष्ट, निश्चित और निर्धारित स्वरूप में होगा उतनी ही सफलता से संगणक अथवा मशीन से अनुवाद प्राप्त किया जा सकता है। साहित्य अनुवादों के अन्तर्गत मशीन से किया गया अनुवाद इतना अधिक सफल नहीं हो पाया, क्योंकि मशीन अभी तक भावों को समझ नहीं पायी है, अलंकारों, लक्षणा, व्यंजना शैलियों, व्यक्तित्त्व भिन्नता और विशेष सन्दर्भ को वह ज्ञात नहीं कर पाती है। इस कारण साहित्यिक अनुवाद मशीन द्वारा विफल सिद्ध हो जाते हैं। इस दिशा में भारत सरकार तथा निजी कम्पनियों ने बहुत अधिक प्रयास किये हैं। भारत सरकार की तरफ से भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर, केन्द्रीय विश्वविद्यालय हैदराबाद, सी-डैक पुणे आदि ने प्रयास किये जिसके अन्तर्गत इन्होंने मन्त्र अनुसारक इत्यादि अनुवादक सॉफ्टवेयर तैयार किये। गूगल ने भी इस दिशा में बहुत अधिक प्रयास किये हैं। सोशल मीडिया पर इस प्रकार के प्रयासों को देखा जा सकता है। इसके साथ-साथ मोबाइल के लिए भी अनुवाद के गूगल ने टूल तैयार किये हैं। फिर भी कहा जा सकता है कि मशीनी अनुवाद अथवा यन्त्र अनुवाद मनुष्य पर ही आधारित है, अन्ततः मनुष्य को इस प्रकार के अनुवाद को ठीक करने, व्याख्यायित करने, संकोच और अर्थ विस्तार करते हुए इसे जाँचने-परखने की आवश्यकता निरन्तर बनी हुई है। अभी बहुत मात्रा में इस दिशा में काम करना शेष है, इसलिए इसकी सम्भावनाओं को तलाशते हुए नये-नये मार्गों को तलाशा जा रहा है। आनेवाले समय में इस कार्य में सफलता मिलने की पूरी-पूरी आशा है।

७.४ वस्तुनिष्ठ प्रश्न

प्र.१ यंत्रानुवाद से आप क्या समझते हैं?

उत्तर–मशीनी अनुवाद को ही यंत्रानुवाद कहा जाता है।

प्र.२ –मशीन का प्रयोग सर्वप्रथम किसके अनुवाद के लिए हुआ था?

उत्तर –मशीन का प्रयोग सर्वप्रथम सेना संबंधी सूचनाओं के अनुवाद के लिए हुआ था।

प्र.३ – यंत्रानुवाद की संकल्पना का आरंभ कब और कहाँ हुआ था?

उत्तर – यंत्रानुवादकी संकल्पना का आरंभ द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद यूरोप में हुआ।

प्र.४ –कम्प्यूटर के क्षेत्र में भारतीय भाषाओं का उपयोग कब शुरू हुआ था?

उत्तर - कम्प्यूटर के क्षेत्र में भारतीय भाषाओं का उपयोग वर्ष1980 के बाद ही शुरू हुआ।

प्र.५ – सर्वप्रथमकिसने 1933 में अनुवाद करने वाले एक यंत्र का पेटेंट कराया था?

उत्तर – सर्वप्रथम एक रूसी इंजीनियर पत्र पोत्रोविच स्मिरनोव त्रोयांस्कि ने 1933 में अनुवाद करने वाले एक यंत्र का पेटेंट कराया था।

प्र.६ – आज मशीनी अनुवाद कार्य किसके द्वारा किया जाता है?

उत्तर – आज मशीनी अनुवाद कार्य डिजिटल कम्प्यूटर के द्वारा किया जाता है।

प्र.७ –भाषा के क्षेत्र में कम्प्यूटर का प्रमुख उपयोग क्षेत्र क्या है?

उत्तर – भाषा के क्षेत्र में कम्प्यूटर के उपयोग के दो प्रमुख क्षेत्र हैं- आंकड़े संसाधन और शब्द संसाधन।

प्र.८ – सर्वप्रथम कम्प्यूटर के आधार पर अनुवाद करने वाला यंत्र कब और किसनेबनाया था?

उत्तर – सर्वप्रथम कम्प्यूटर के आधार पर अनुवाद करने वाला यंत्र सन1946 में लंदन के एक कॉलेज के रीडर डॉ. ए. डी. बूथ ने अपने सहयोगी वीवर से परामर्श करके बनाया था।

प्र.९ –कम्प्यूटरकिसी भाषा में दिए गए आदेश को कैसे समझता है?

उत्तर – कम्प्यूटर एक मशीन है। मशीन की कोई भाषा नहीं होती। उसका कंपायलट किसी भाषा में दिए गए आदेश को मशीन द्वारा समझी जा सकने वाली भाषा शून्य '0' और एक '1' अंकों की भाषा में बदलता है।

प्र.१० – कौन-सा अनुवाद यंत्रानुवाद से सफल नहीं हो सकता है?

उत्तर - साहित्यिक अनुवाद,यंत्रानुवाद से सफल नहीं हो सकता है, क्योंकि मशीन अभी तक साहित्य के भावों को, अलंकारों, लक्षणा, व्यंजना, शैलियों, व्यक्तित्व भिन्नता और विशेष सन्दर्भ को समझ नहीं पाया है।

७.५ दीर्घोत्तरी प्रश्न

प्र.१ यंत्रानुवाद से आप क्या समझते हैं? इसके स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

प्र.२ यंत्रानुवाद / मशीनी अनुवाद के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

प्र.३ अनुवाद का भविष्य क्या है? विस्तार से लिखिए।

प्र.४ अनुवाद के भविष्य की विवेचना कीजिए।

७.६ संदर्भ ग्रन्थ सूची

- प्रयोजनमूलक हिन्दी, विनोद गोदरे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, १९९८
- प्रयोजनमूलक हिन्दी - डॉ. अंबादास देशमुख, शैलजा प्रकाशन, कानपुर, २००९
- प्रयोजनमूलक हिन्दी - डॉ. लक्ष्मीकांत पांडेय, डॉ. प्रमिला अवस्थी, कल्याण चंद्र चौबे, आशीष प्रकाशन, कानपुर, २००५
- अनुवाद - अमित कुश, सौम्य प्रकाशन, मुंबई, २०११
- अनुवाद कला - डॉ. एन. ई. विश्वनाथ अय्यर
- प्रयोजनमूलक हिंदी की नयी भूमिका, कैलाश नाथ पांडे, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
- प्रयोजनमूलक हिंदी - डॉ. विनोद शाही, आधार प्रकाशन, हरियाणा
- प्रयोजनमूलक हिंदी नए संदर्भ, सुमित मोहन, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली
- प्रयोजनमूलक हिंदी के नए आयाम, डॉ. पंडित बन्ने, अमन प्रकाशन, कानपुर
- प्रयोजनमूलक हिंदी, माधव सोनटक्के, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
- प्रयोजनमूलक, मीडिया विमर्श सिद्धांत और अनुप्रयोग, राम लखन मीरा, के.के पब्लिकेशन्स, दिल्ली
- प्रयोजनमूलक हिंदी प्रयुक्त और अनुवाद, माधव सोनटक्के, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
- अनुवाद विज्ञान - भोलानाथ तिवारी, किताबघर प्रकाशन, दिल्ली
- अनुवाद विज्ञान की भूमिका - कृष्ण कुमार गोस्वामी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
- अनुवाद कला सिद्धान्त और प्रयोग, डॉ. कैलाशचन्द्र भाटिया - 1985

- अनुवाद विज्ञान और सम्प्रेषण, डॉ. हरिमोहन - 2006
- हिन्दी अनुवाद एवं भाषिक संरचना, डॉ. शकुंतला पांचाल - 2005
- अनुवाद सिद्धान्त की रूपरेखा, डॉ. सुरेश कुमार -2007

****